तरहरिमे परीलोक

आस्था आ टुराकोसक धोधरि-दरबज्जा

गजेन्द्र ठाकुर

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम

मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : अक्षरमुष्टिका

आंगुरक संकेतसँ अक्षर आ भावक निर्देश करै छलि बा — अक्षरमुष्टिका। बा कहै छली, 'आंगुरसँ पकड़ि पिनसिनसँ अक्षर आ चित्र बनाउ, नीकसँ। अहूँ नीक आखर, नीक भाव बना सकब।' ओमक नान्हि सन आंगुर बाक झुर्रीबला आंगुरक भीतर एना पैसि जाइत छल जेना कलमक भीतर सियाही।

ओहि राति बा थाकल छलीह। 'सुति जाउ, भोरे स्कूल जएबाक अछि। आइ हम थाकल सेहो छी।' मुदा ओम कतऽ मानैबला! 'बा, पहिने खिस्सा। बहन्ना नै चलत।' — आ संगहि आँ-आँ कऽ कए कानब-रुसब शुरू।

बा हारि मानि मुस्कुरेलीह। 'ठीक छै, ठीक छै। कोन खिस्सा? राजाबला, परीबला आकि...' 'परीबला!' बा आँखि मूनि कऽ कनी काल सोचलीह, जेना स्मृतिक कोनो पुरान संदूक खोलि रहल होथि — 'तरहरिमे परीलोक... गाछक धोधरि... कारी कौआ... उज्जर दपदप परीलोक...'

'ठीक छै, तखन खिस्सा शुरू,' ओम सीरकमे घोसिया कऽ बा'क कोरा लग सटि गेल। बाहर सियारक हुआँ-हुआँ छल, भीतर लालटेनक पीयर इजोत। आ बाक स्वर, जे आस्ते-आस्ते खिस्साक बाट धेलक—

अध्याय १ : चन्ना गाछीक झमटगर बोन

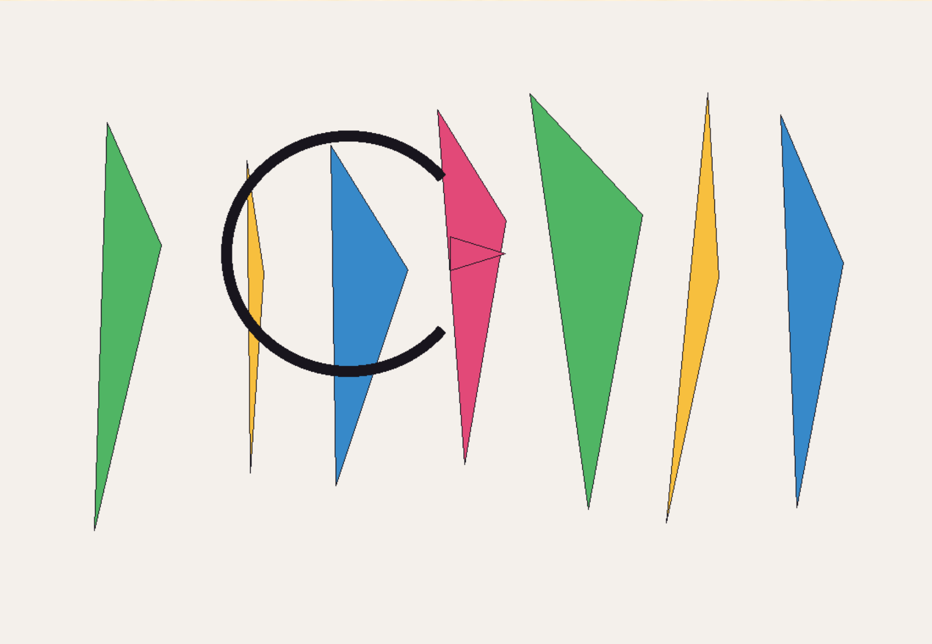

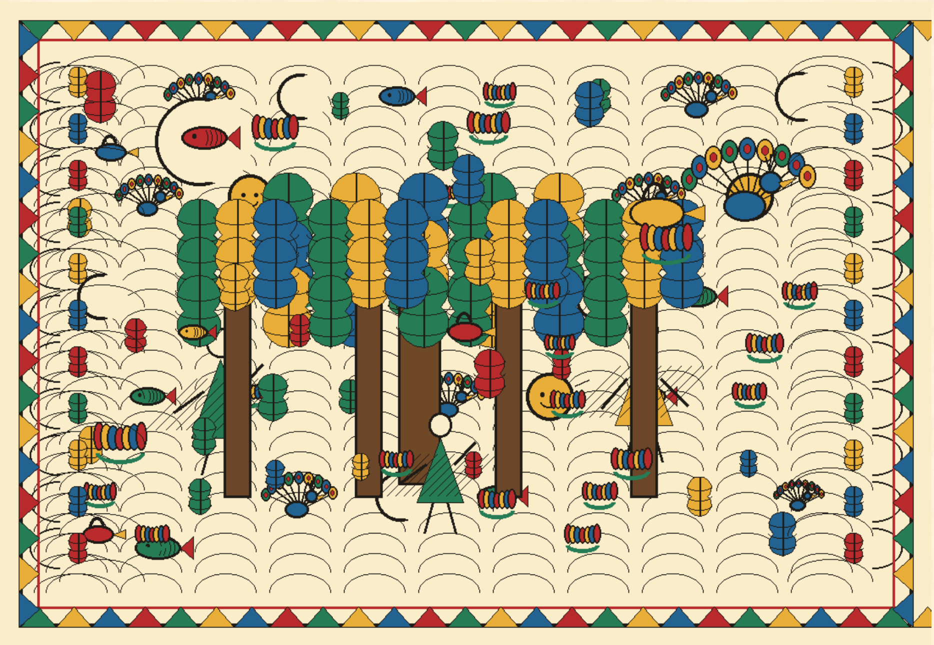

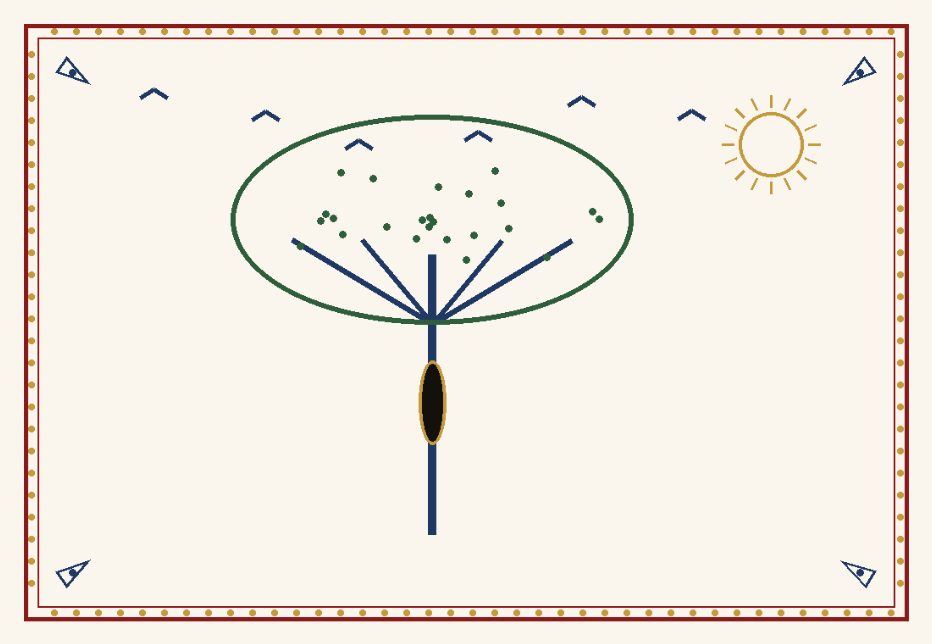

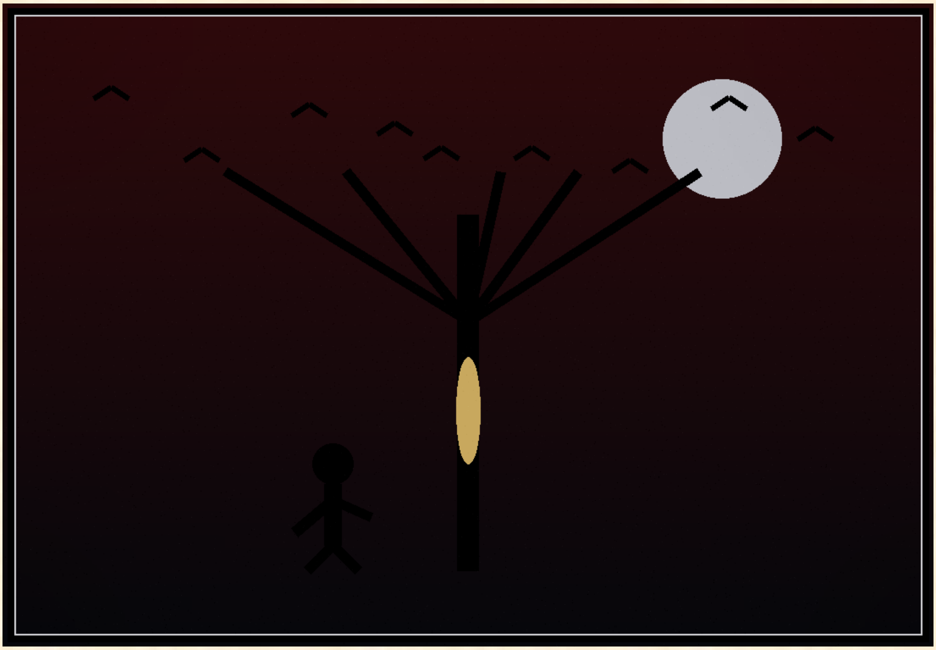

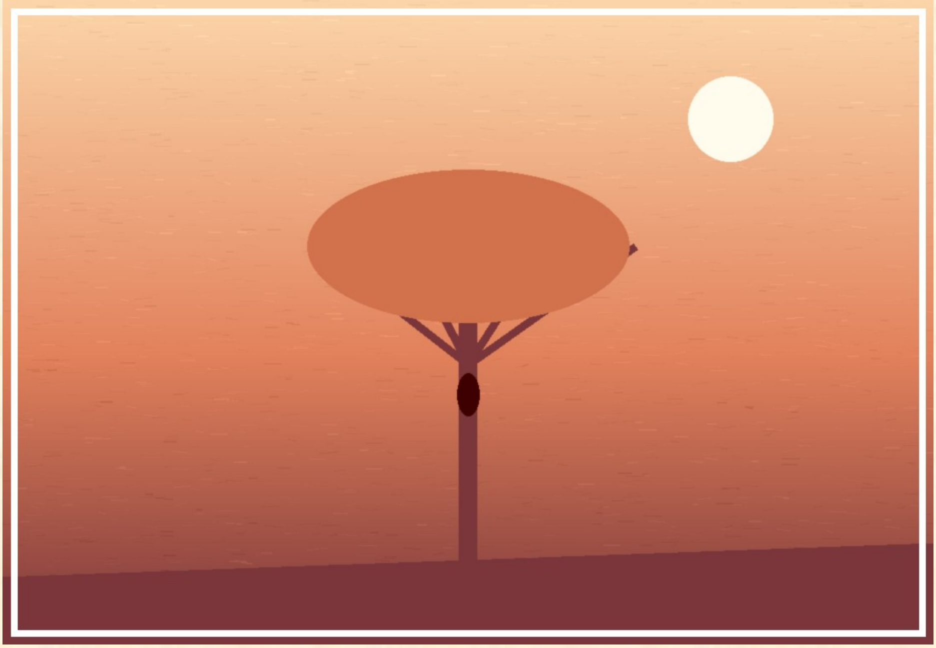

चित्र 1

चन्ना गाछीक झमटगर बोनमे ओहि दिन आम तूबि-तूबि खसल छल। भोरक बसात मे आमक गन्ध एना पसरल छल जे गामक सभ बच्चा टोकरी-कोनिया लऽ कऽ बोन दिस दौगल। आस्था सेहो छलि — दस बरखक, तेज आँखिबाली, जकरा प्रश्न पुछबामे कहियो लाज नहि भेलै।

आम बिछैत-बिछैत आस्था सभसँ आगाँ बढ़ि गेलि। बोन घन होइत गेल, इजोत पातर। साथी सभक हँसी पाछाँ छुटैत गेल, आ आगाँ रहि गेल खाली पातक सरसराहटि। तखने — काँउ! एकटा कार कौआ ठीक ओकर माथ परसँ काँउ-काँउ करैत उड़ल।

आस्था ठमकि गेलि। सोझाँमे एकटा झमटगर पुरान गाछ ठाढ़ छल, एतेक पैघ जे ओकर माथ देखबा लेल गरदनि पूरा पाछाँ करए पड़ैत। आ ओहि गाछक देहमे, ठीक आस्थाक माथ बराबरि, एकटा कारी धोधरि — गहींर, चुप, जेना गाछक खुजल मुँह।

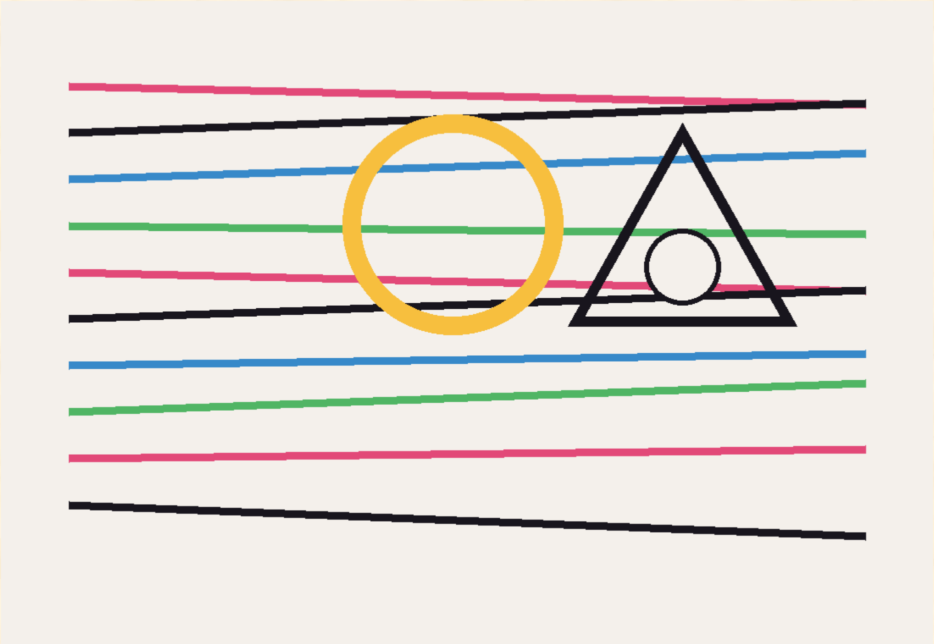

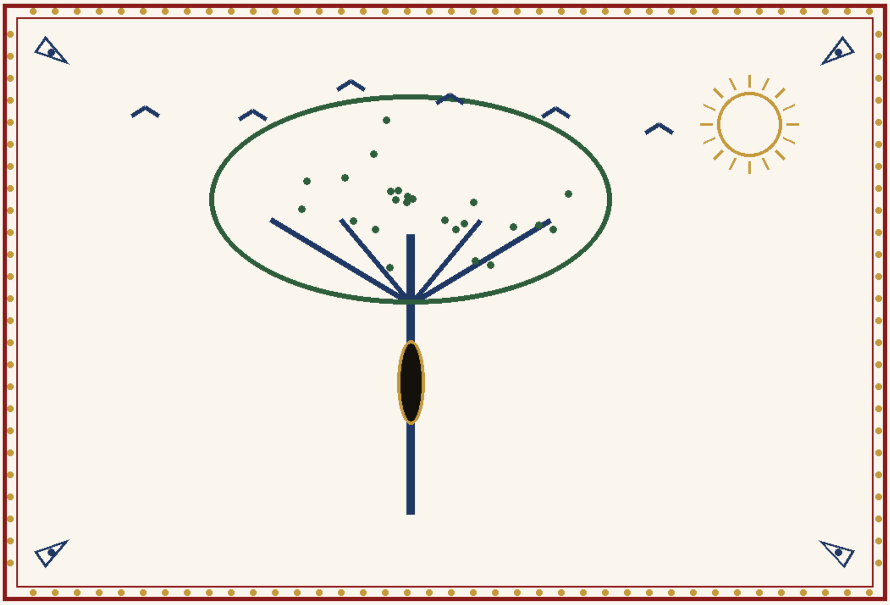

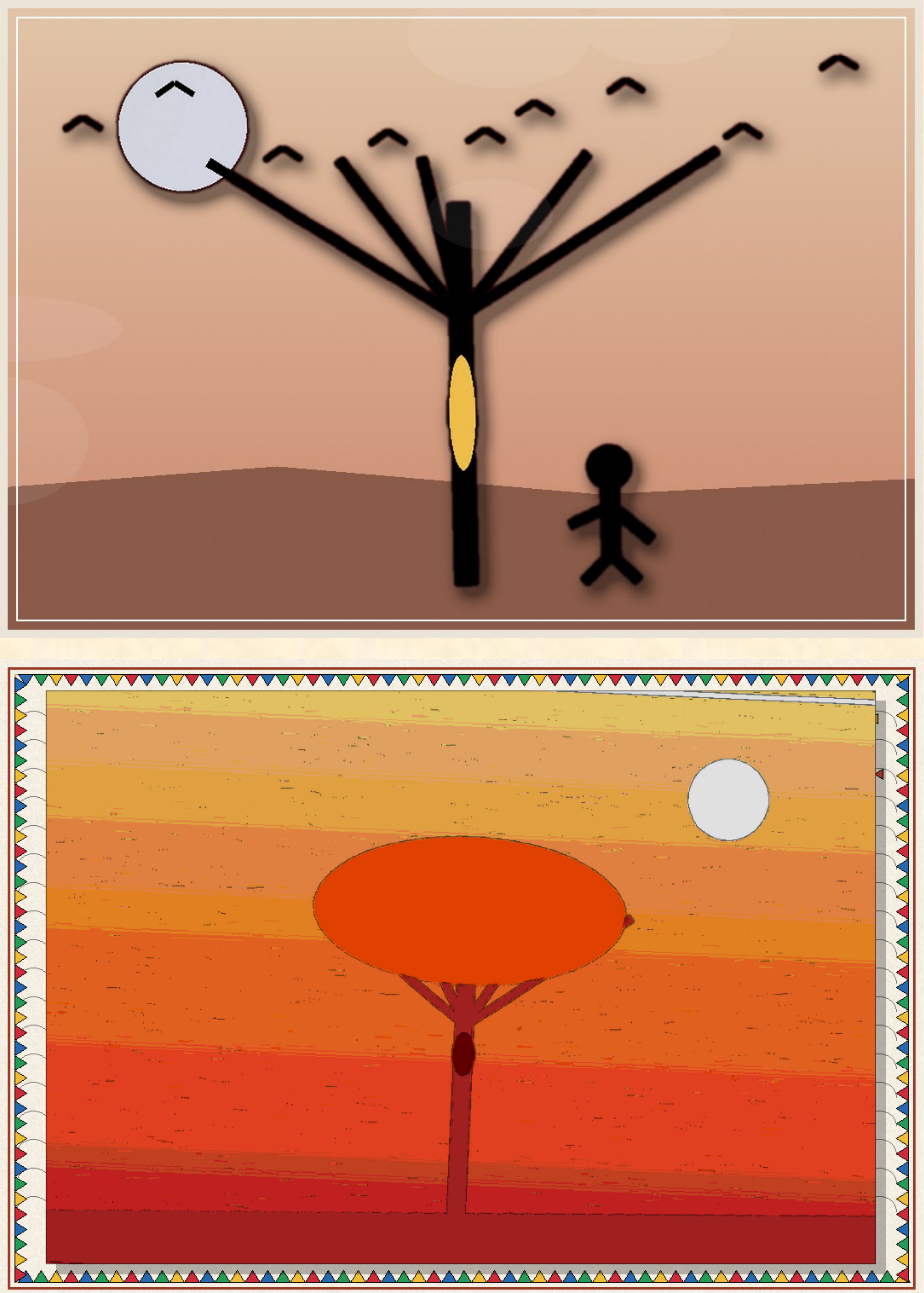

चित्र 2

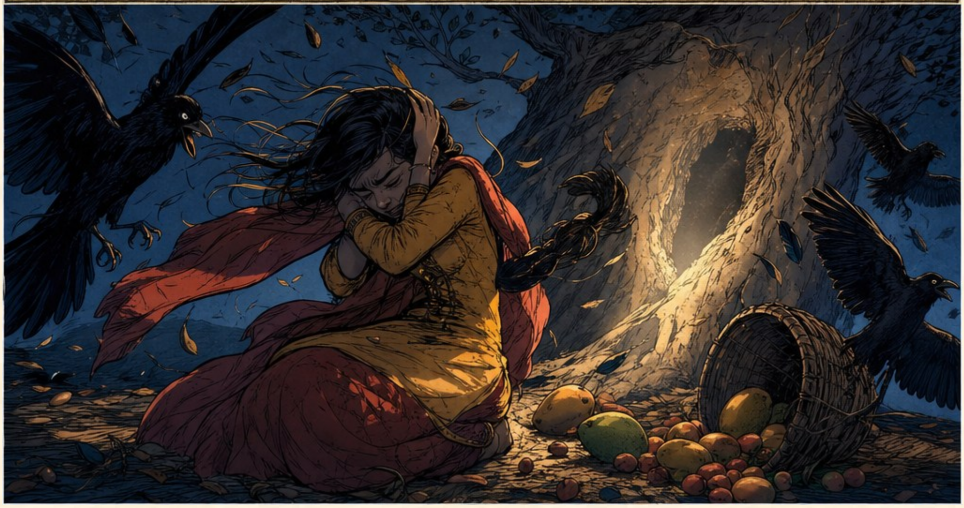

पहिल कौआक काँउ-काँउ सुनिते देरी ढेर रास कार कौआ चारू कातसँ आबि गेलै। गाछक सभटा डारि कारी भऽ गेल। कौआ सभ नीचाँ झपटए लागल — आस्थाक टोकरी दिस, आस्थाक झोंटा दिस। डरे आस्थाक हाथसँ टोकरी छुटि गेल।

आ तखन, बिनु सोचने, आस्था वैह केलक जे ओहि क्षण एकमात्र बाट छल — ओ जल्दीसँ धोधरिमे पैसि गेलि। भीतर अन्हार छल आ अजीब शान्ति। बाहरक काँउ-काँउ एकाएक दूर भऽ गेल, जेना कियो बोनक सभटा आवाजपर मोट कम्बल ओढ़ा देने हो।

धोधरिमे जाइते देरी ओकरा किछु अनसोहाँत सन लगलै। ई अन्हार साधारण अन्हार नहि छल। एहि अन्हारमे ने ऊपर छल ने नीचाँ, ने आगाँ ने पाछाँ — खाली आस्था छलि, आ ओकर धड़कैत करेज।

अध्याय २ : खसब, जे उड़ब सन लगलै

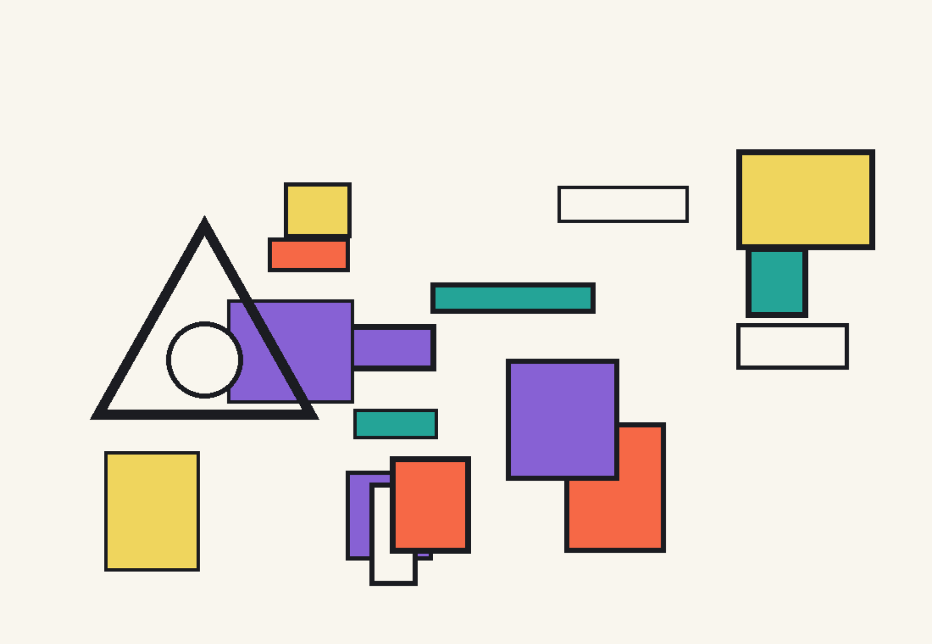

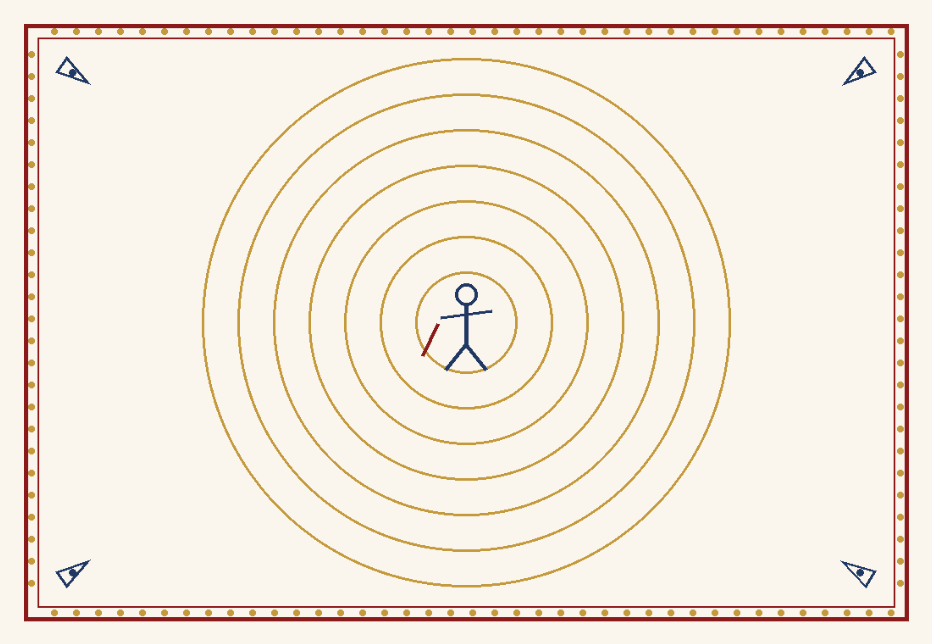

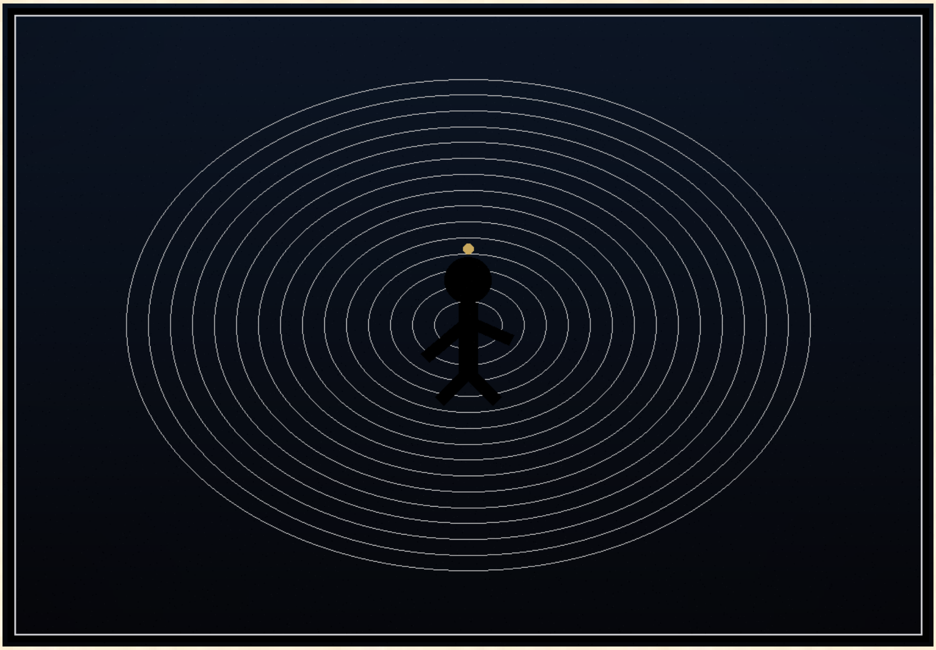

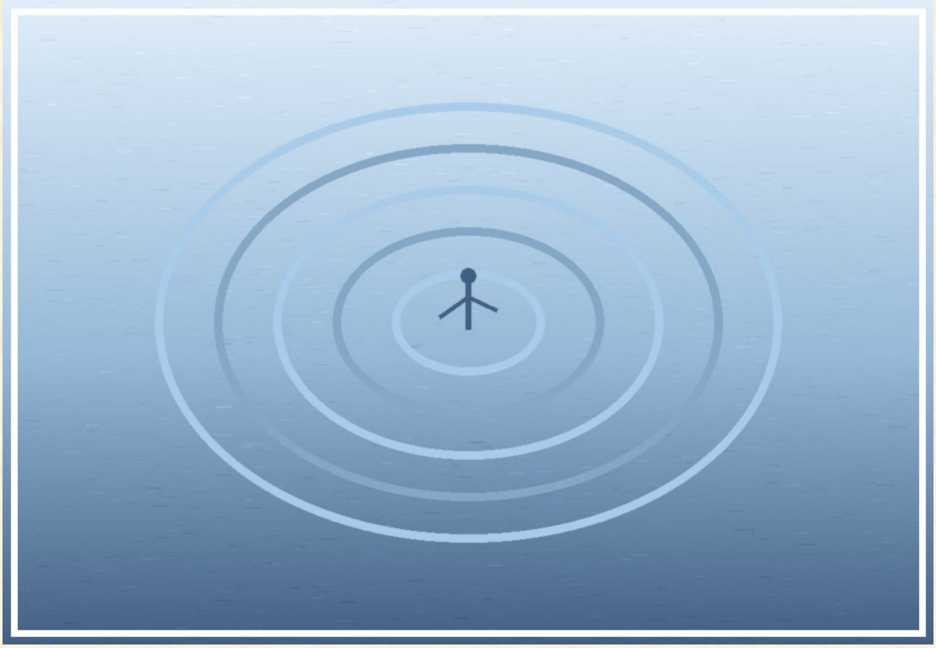

चित्र 3

ओकरा लगलै जे ओ अकासमे ठाढ़ अछि। आस्था ऊपर देखलक, नीचाँ देखलक — दुनू दिस एक्कहि रंगक धूसर शून्य। ओकरा लगलै जे ओ स्थिर ठाढ़ अछि, फेर लगलै — नहि, ओ नीचाँ जा रहलि अछि! मुदा केहन खसब ई? ने हवा कान लग सनसनाइत छल, ने पेट मे ओ डरबला गुरगुड़ी।

ओकरा लगलै जे देहमे कोनो भार नहि छै। ओ दूभियोसँ बेसी हल्लुक भऽ गेल छलि। आस्था हाथ पसारलक — हाथ पाँखि जकाँ पसरि गेलै। ओ हँसए चाहलक, मुदा हँसी ठोरेपर रुकि गेलै, कारण मोनमे एकटा प्रश्न हुरकुचिया रहल छल: ई खसब कतऽ जा कऽ रुकत?

समय सेहो एतऽ अजीब ढंगसँ बहैत छल। कतेक काल बीतल — घड़ी रहितै त' कहितै दू घण्टा। आ तखन, बिनु कोनो झटकाक, आस्था एकटा उज्जर दपदप जगहपर आबि कऽ खसलि। खसलि कोनो नरम वस्तुपर — जेना केओ ठीक ओही ठाम गद्दा बिछा कऽ राखने हो। कनेको चोट नहि लगलै।

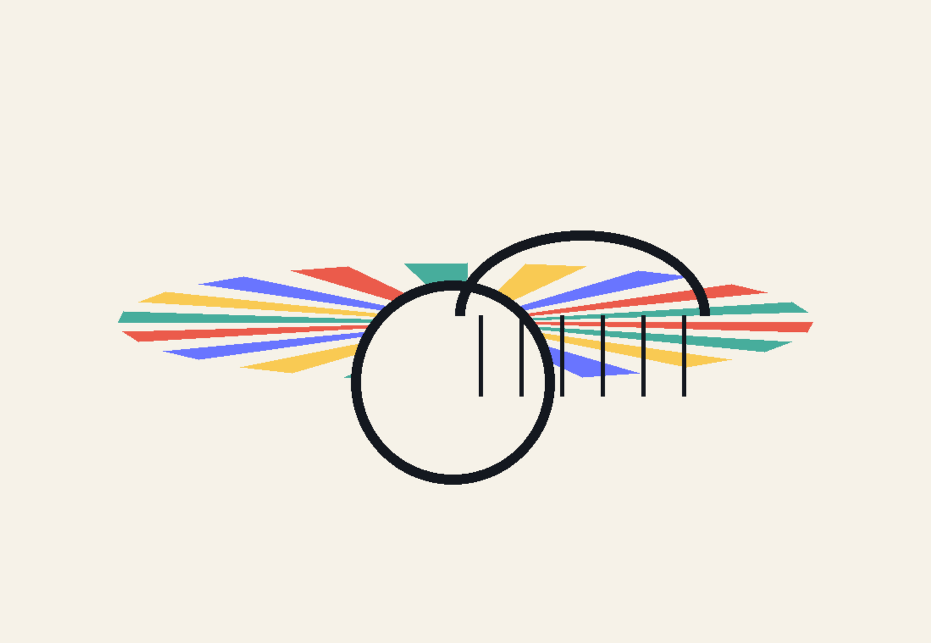

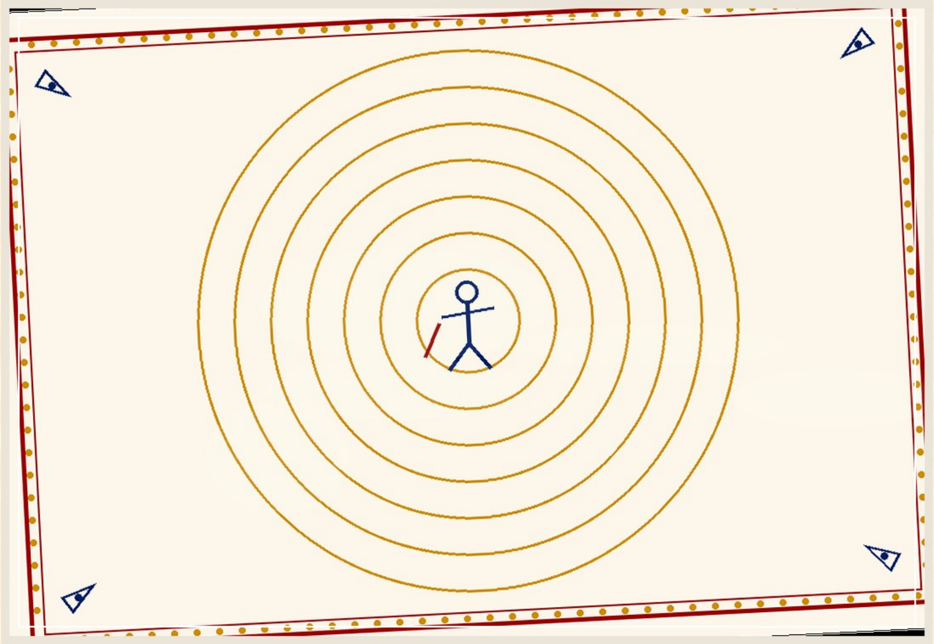

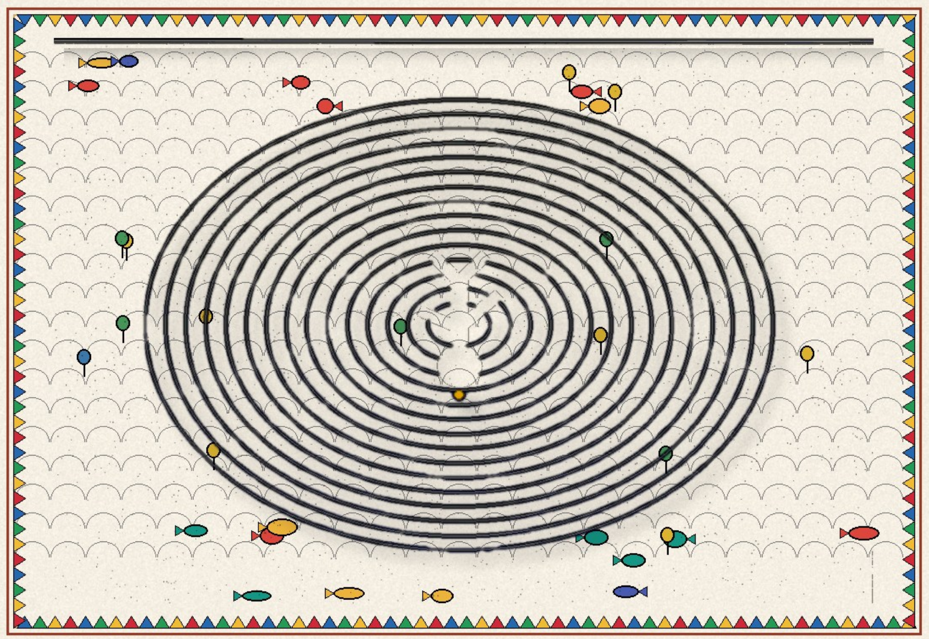

चित्र 4

आस्था उठि कऽ बैसलि आ चारू कात तकलक। की परीलोकक निकास रहै ओ धोधरि? — ओ सोचए लागलि — तखन त' कतेक आर लोक, माल-जाल, चिड़ै ओतऽ सँ खसैत हेतै, बिला जाइत हेतै! आ तेँ लोक चन्ना गाछीकेँ भुतहा गाछी कहै छै!

ई सोचिते ओकर करेज धक् दऽ कऽ उठलै। गामक कतेक खिस्सा मोन पड़लै — फल्लाँक बाछी बोनमे हेरा गेल, फल्लाँ घरक सुग्गा उड़ल त' घुरबे नहि कएल... त' की ओ सभ एतहि...?

आस्था आँखि घुमेलक। जगह त' नीके लागै छलै। ऊपर तकलक त' धोधरि नहि देखा पड़लै — चारू कात अकासे-अकास छल। मुदा नील अकास नहि, उज्जर अकास। एहन उज्जर, जेहन दूधक ऊपरका छाल्ही। आ ओही उज्जरमे, दूरसँ, एकटा हरियर बिन्दु ओकरे दिस उड़ल आबि रहल छल।

अध्याय ३ : टुराकोस

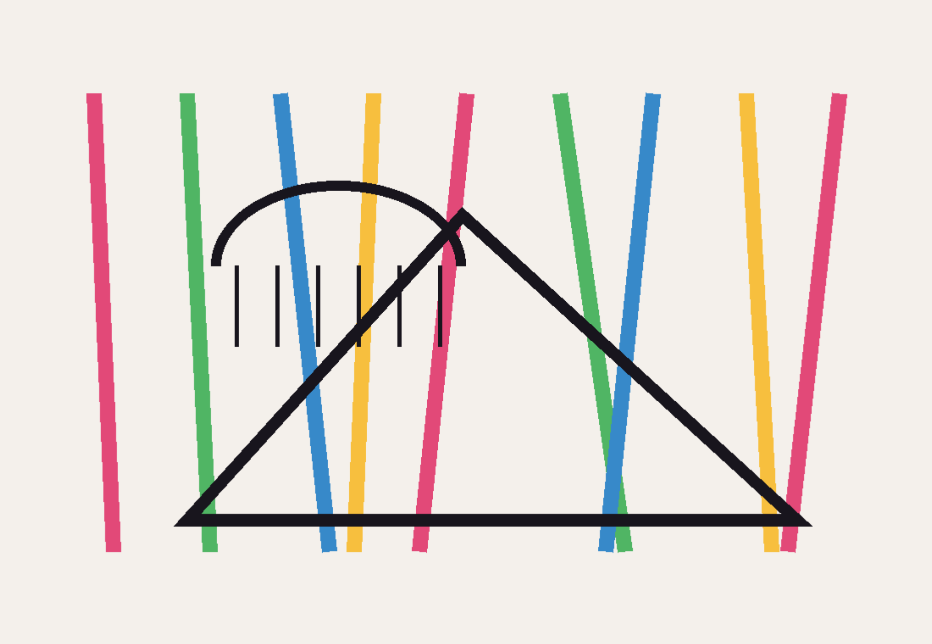

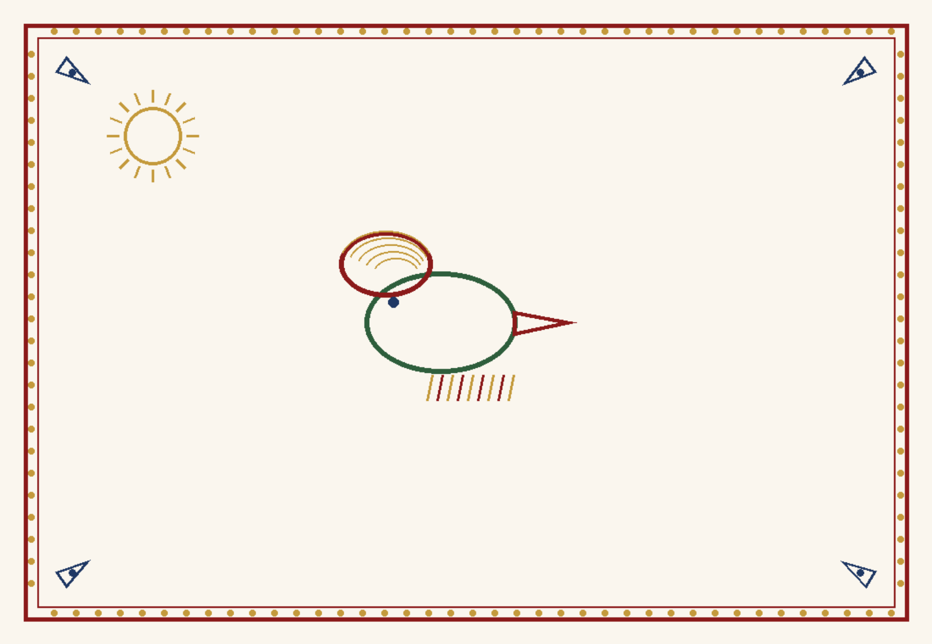

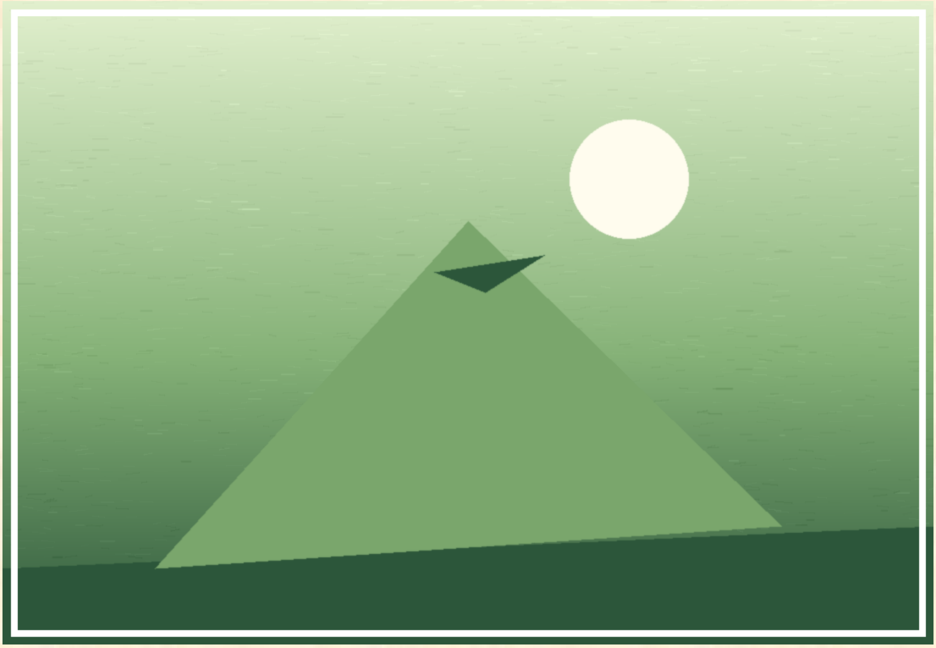

चित्र 5

हरियर बिन्दु लग अबिते चिड़ै बनि गेल — हरियर पाँखिबला, जकर उड़ैबला पाँखिक रंग लाल छल। ओ आस्थाक सोझाँ उतरल आ साफ मनुक्खक बोलीमे बाजल — 'हम छी टुराकोस चिड़ै। हम अफ्रीकासँ आएल छी।'

आस्थाक आँखि फाटल रहि गेल। मुदा डरसँ बेसी ओकरा भीतर कौतूहल छल, आ कौतूहल सदिखन शिष्टाचार सिखा दैत अछि। ओ कहलक, 'हम छी आस्था। हम एशियासँ आएल छी। मुदा... अहाँ चिड़ै भऽ कऽ मनुक्खक बोली कोना बाजै छी?'

'ई छी परीलोक,' टुराकोस कहलक, 'एतऽ एलाक बाद सभ एकबैग मनुक्ख जकाँ सोचऽ लगैए, बाजऽ लगैए।' — आ ई कहैत ओ उड़ि कऽ आस्थाक कन्हापर बैसि गेल। ओकर चांगुरक हल्लुक पकड़िमे कोनो डर नहि छल, छल खाली एकटा नव मित्रताक ओजन।

'माने जखन अहाँ अफ्रीकामे छलहुँ, तखन मनुक्खक बोलीमे नहि बाजै छलहुँ?' 'नै,' टुराकोस सहज भावेँ कहलक, जेना ई दुनियाक सभसँ साधारण बात हो।

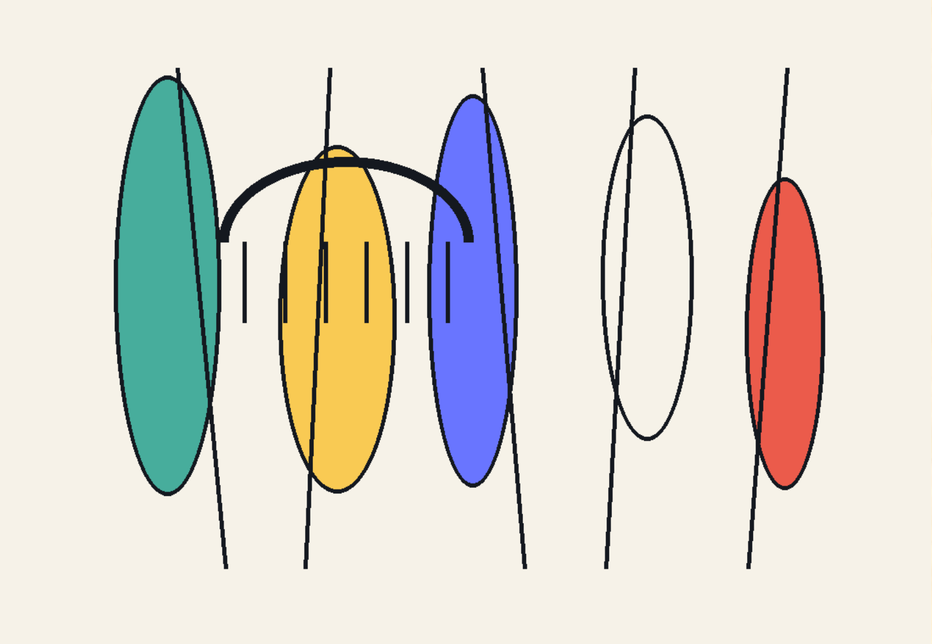

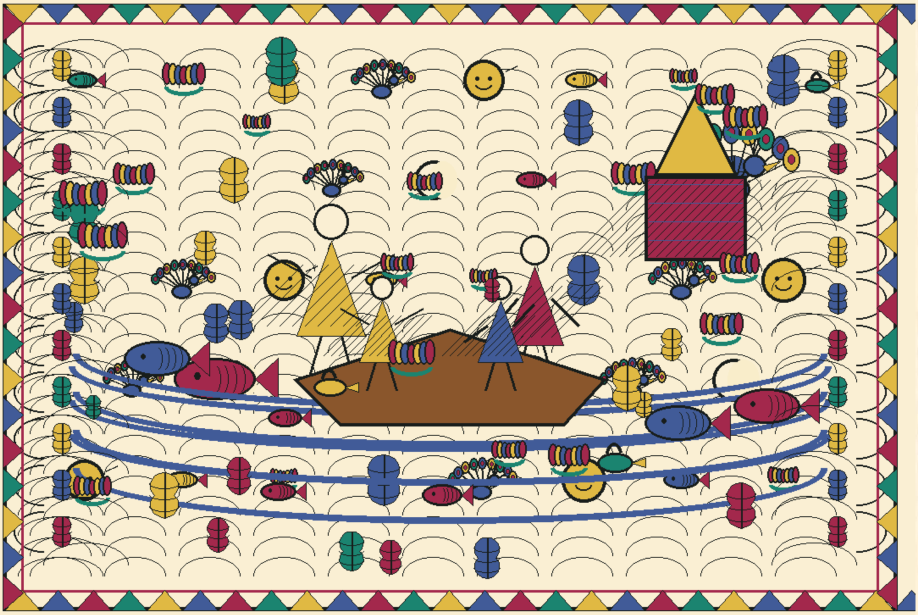

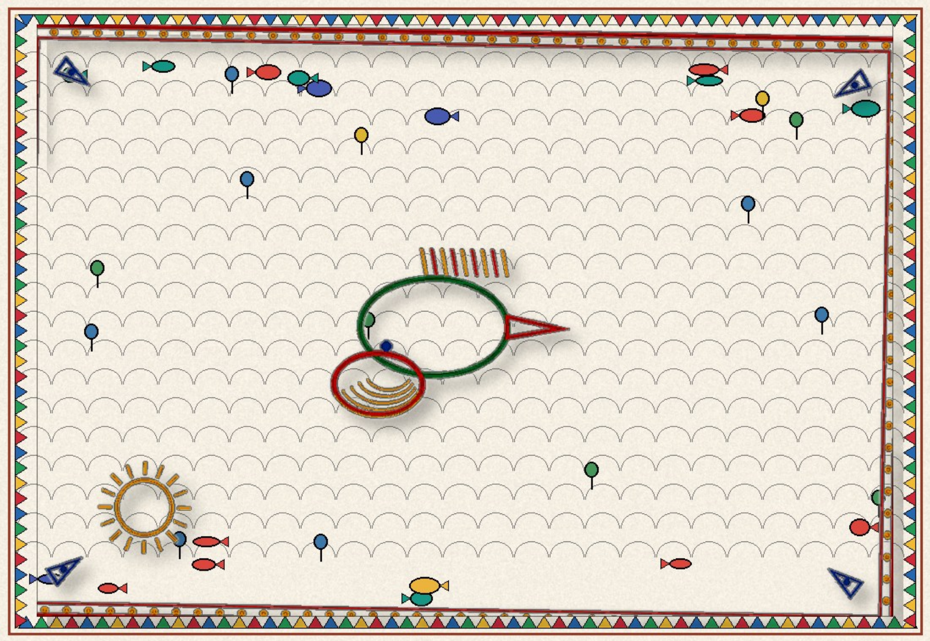

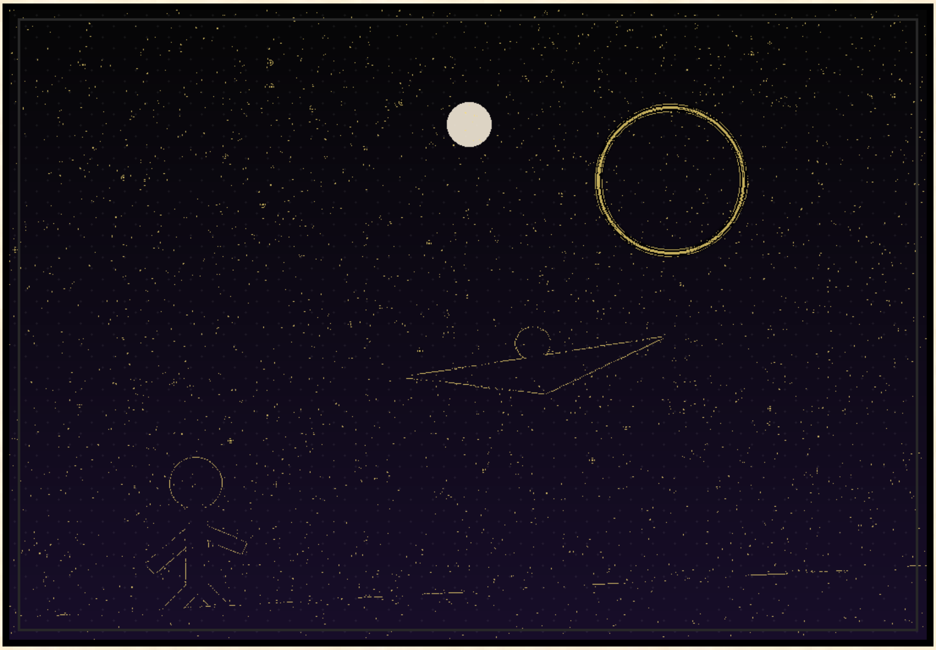

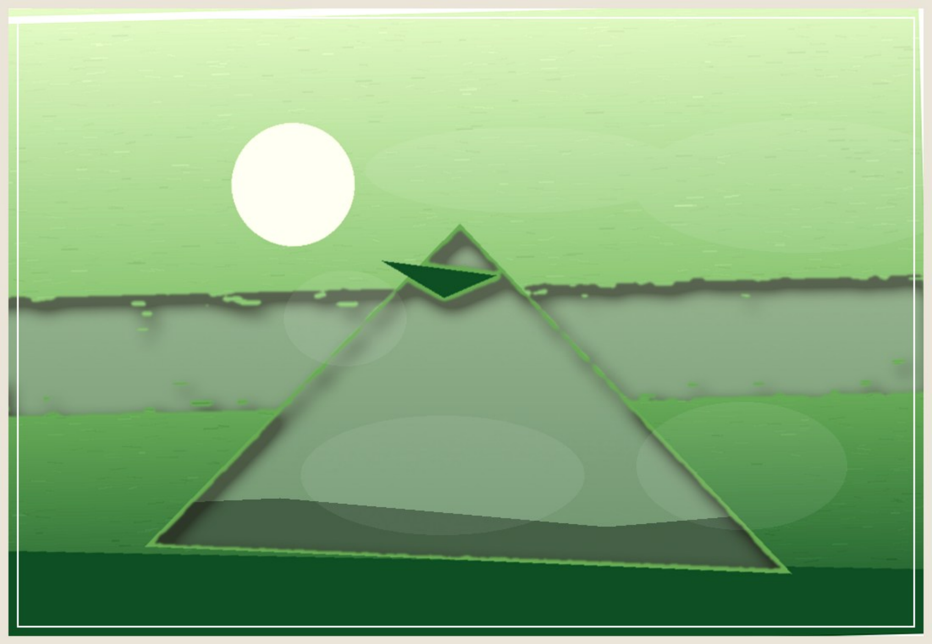

चित्र 6

तखने बर्खा जोरसँ हेबऽ लगलै। बूँद पड़िते टुराकोसक देहसँ जे पानि खसलै, से लाल रंगक — आस्थाक हाथपर लाल रंग लागि गेलै। 'अहाँ होली खेलाएल छी की?' आस्था पुछलक। 'नै, किए?' 'ई लाल रंग अहाँक पाँखिसँ झड़लए!'

टुराकोस हँसल, 'हमर हरियर रंग पकिया अछि, मुदा लाल रंग पानिमे झड़ऽ लागैए। ई लाल हमर पाँखिक अपन रंग छी, केओ लगओने नहि अछि।' आस्था अपन लाल भेल तरहत्थी दिस तकलक। एहि परीलोकमे त' बर्खा सेहो रंग खेलबैत अछि — ओ सोचलक।

'हम अपन गामक चन्ना गाछीक गाछक धोधरिसँ खसल छी,' आस्था कहलक, 'एतऽ सँ बाहर निकलैक कोनो रस्ता छै की?' टुराकोसक हँसी पहिल बेर मलिन भेल। ओ आस्तेसँ बाजल — 'सएह रस्ता त' हमहूँ ताकि रहल छी।' आ दुनू गोटे, एक अनचिन्हार लोकमे दू चिन्हार सन, संगे आगाँ बढ़ल।

अध्याय ४ : बिनु सूर्यक इजोत

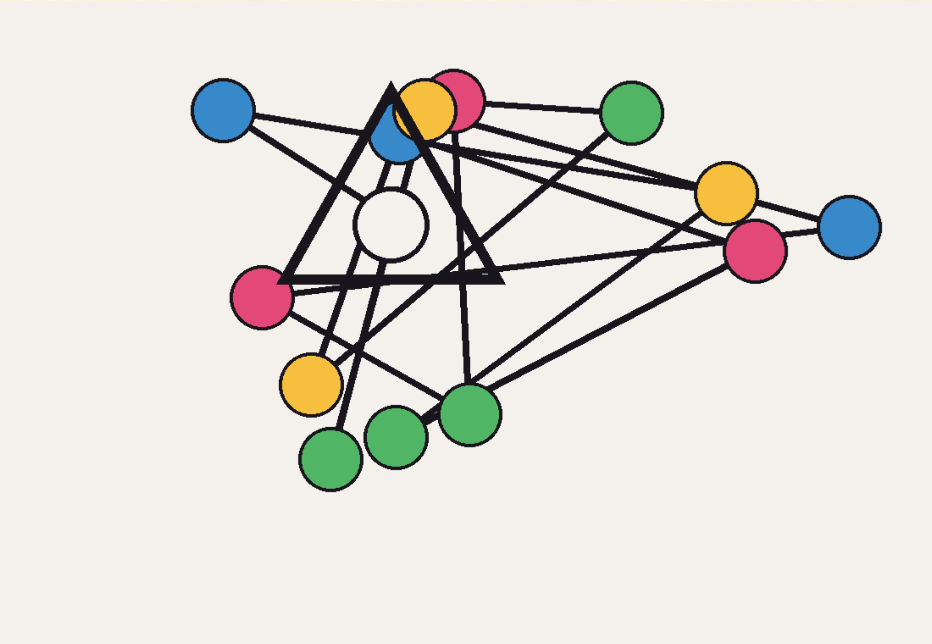

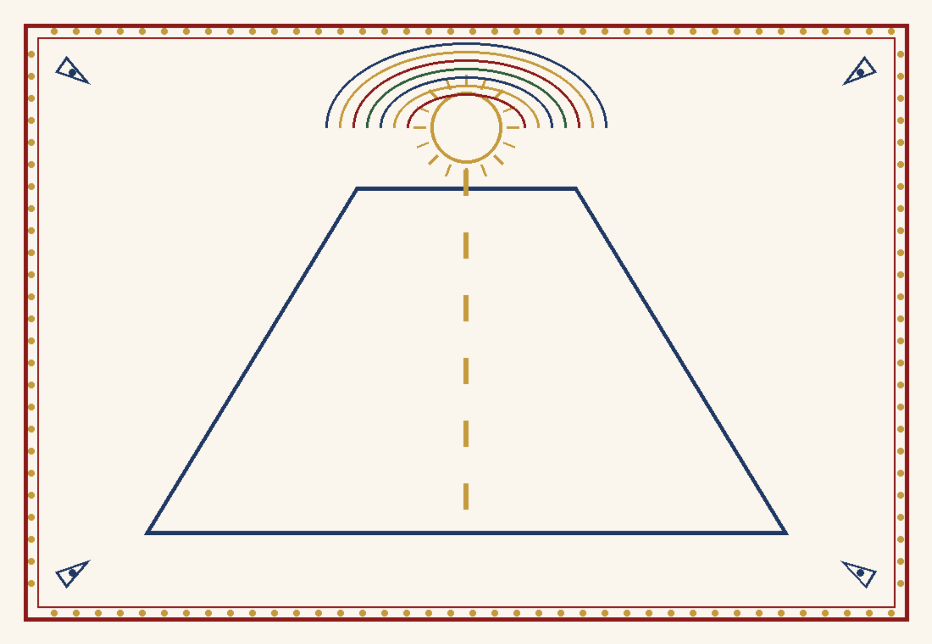

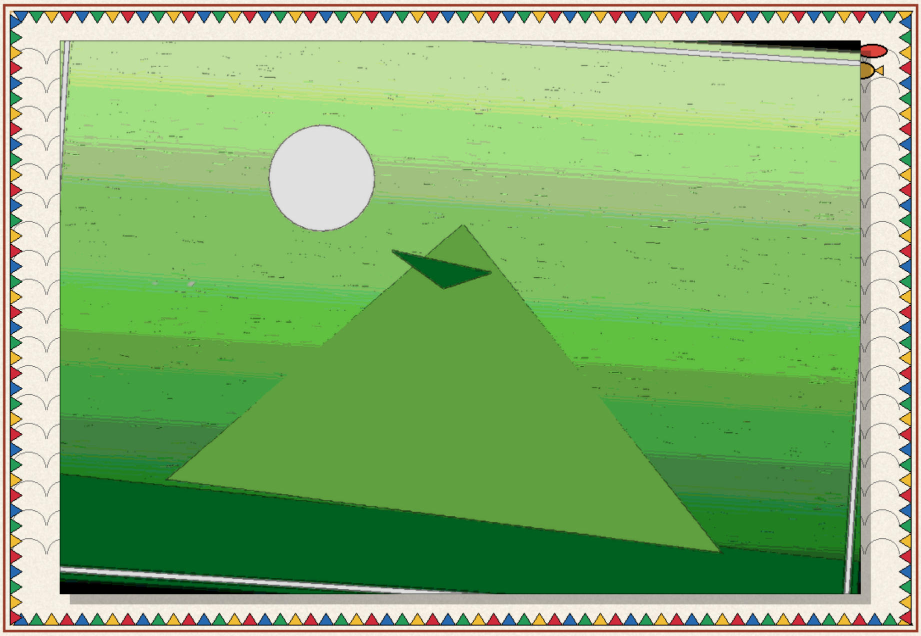

चित्र 7

इजोत चारू दिस पसरल छल — मुदा केहन इजोत! ने कतहु सूर्य, ने छाह, ने आँखिमे कुटकुटी। आस्था पुछलक, 'धोधरिमे... माने एहि लोकमे प्रकाश कोना आएल? सूर्य त' एतऽ छथिए नहि!'

चलैत-चलैत आस्थाकेँ एकटा आओर अचरज भेलै — रस्तापर घर्षणे नहि छल। चिक्कन, साफ सड़क, जाहिपर पएर राखिते देह अपने ससरि जाइत छल। नहि किछु त' सए किलोमीटर प्रति घण्टाक गतिसँ सभ चलि रहल छल। दौगत त' कतेक तेजीसँ दौगत? — आस्था मोनहिमे हिसाब जोड़लक।

बाटमे तितली भेटल — दू पाँखिबला, रंग-बिरंगक, नांगरि-रहित; आ टिकुली — चारि पाँखिबला, नांगरि-युक्त। दुनू सेहो संग भऽ गेल। आब चारि गोटे छल: एकटा बचिया, एकटा चिड़ै, आ दूटा उड़ैत फूल सन जीव।

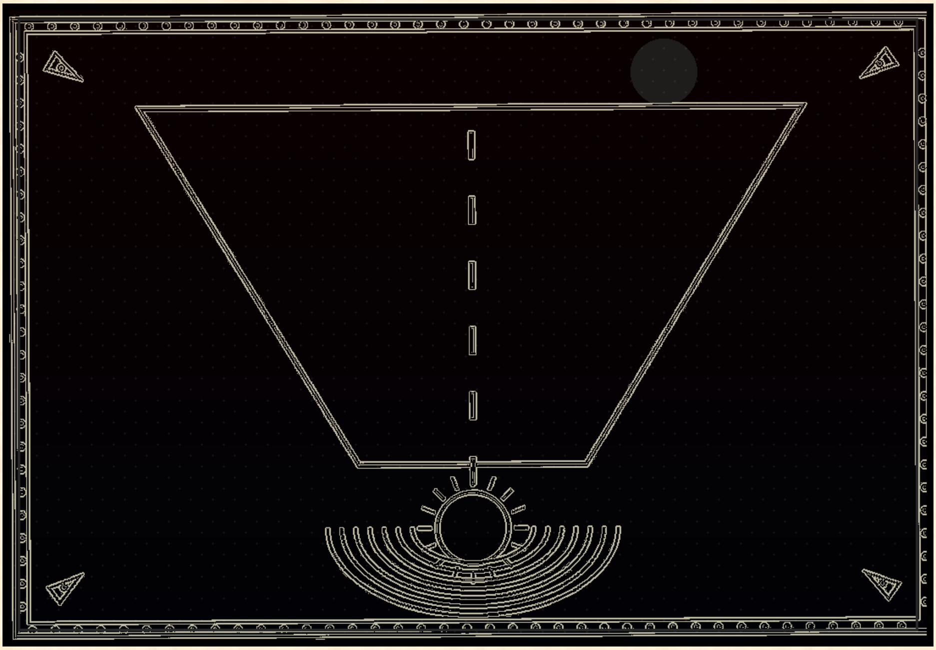

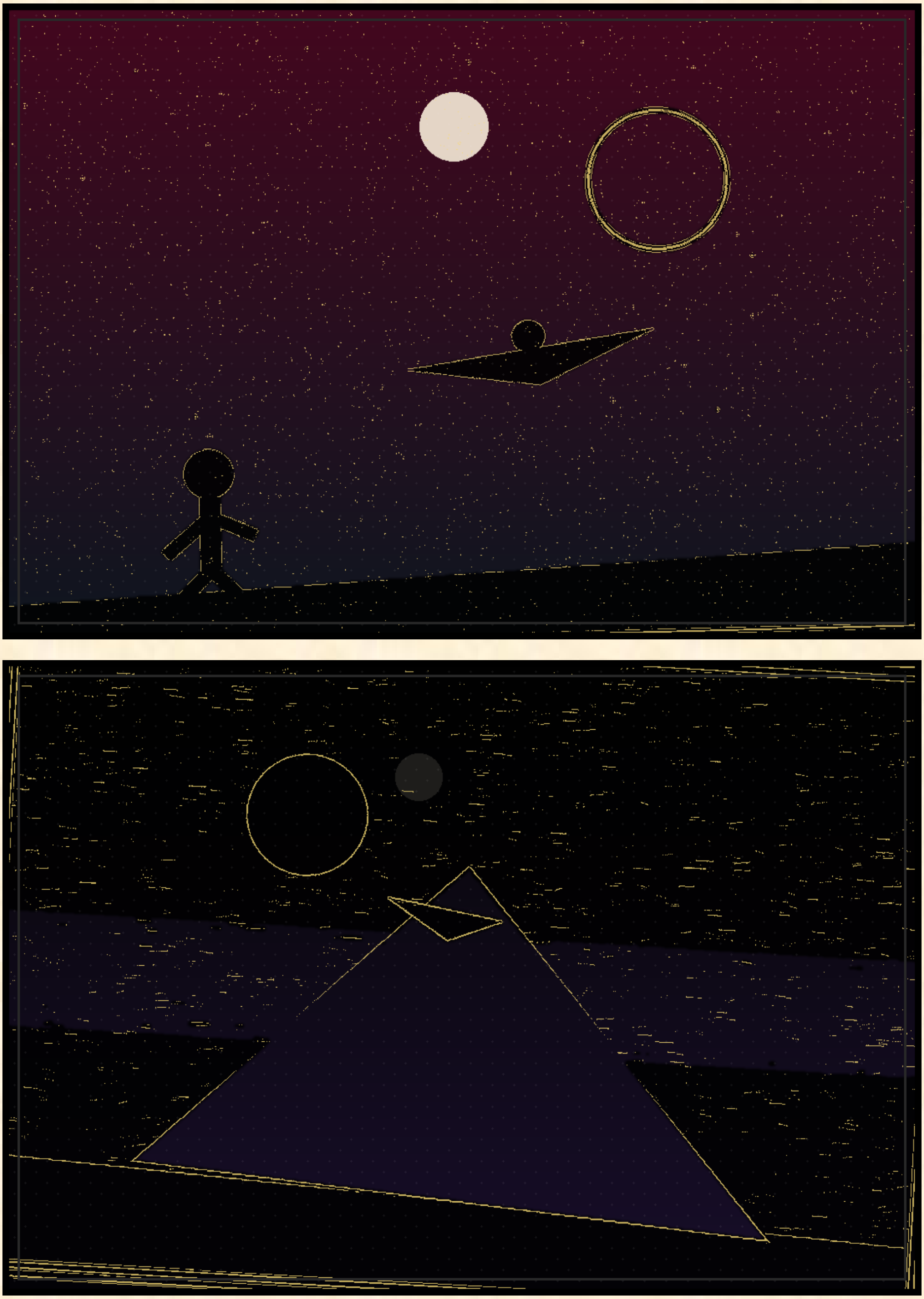

चित्र 8

आस्थाक भीतरका विद्यार्थी आब चुप नहि रहि सकल। 'टुराकोस,' ओ कहलक, 'स्कूलमे पढ़ने छी — कार्बन डाइऑक्साइड गाछक पातक छिद्र स्टोमेटासँ प्रवेश करैए, पानि आ खनिज जड़िसँ, सूर्य-किरण पातसँ। क्लोरोप्लास्ट किरणकेँ सोखैए, तखन ऑक्सीजन बहराइए, फलमे चिन्नी बनैए। जँ एतऽ सूर्य-प्रकाशे नहि, तखन एतुक्का ऊर्जा अबैए कतऽ सँ?'

टुराकोस आस्था दिस एना तकलक जेना कोनो पुरान प्रश्नक नव उत्तर भेटल हो। 'अहाँ पढ़ैमे खूब तेज छी,' ओ कहलक, 'एतऽ एहने लोक सभक आवश्यकता छै। सभ प्रश्नक उत्तर अहाँकेँ भेटि जाएत।' मुदा ओकर स्वरमे किछु एहन छल जे आस्थाकेँ खटकलै — जेना 'आवश्यकता' शब्दक कोनो दोसरो अर्थ हो।

'ऐ लोकमे की सभ छै, टुराकोस?' 'ऐ लोकमे खेत छै — मुदा ओतऽ धान-गहूम नहि, ऊर्जाक खेती होइ छै। बिनु सूर्य-प्रकाशक ऊर्जाक खेती। आ एतऽ एकटा बड़का टा रेगिस्तान सेहो छै — परीलोकक उत्तरबरिया महारक ओइपार।' 'उत्तरबरिया महार?' आस्थाक कान ठाढ़ भऽ गेल। देवालक ओइपार सदिखन खिस्सा रहिते अछि।

अध्याय ५ : महारक ओइपारक खिस्सा

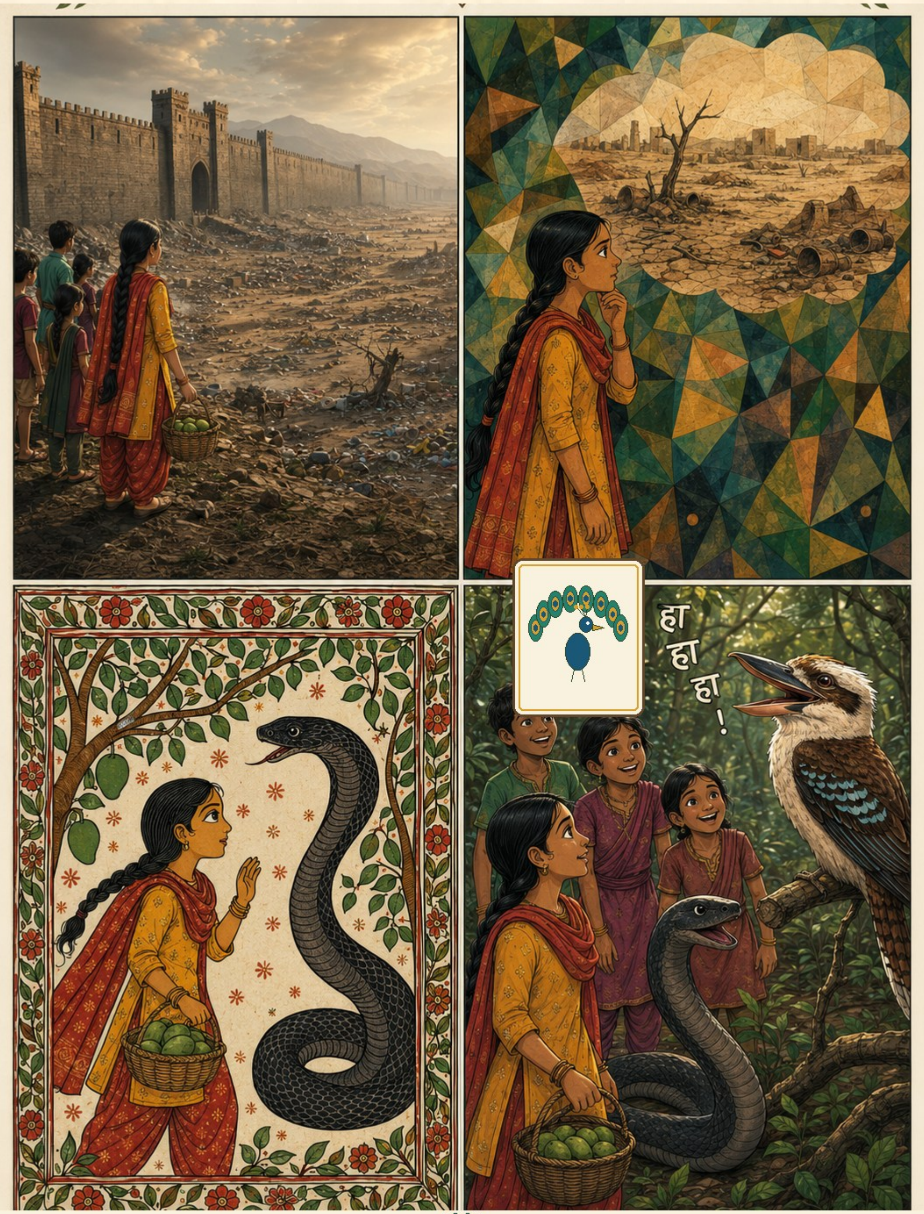

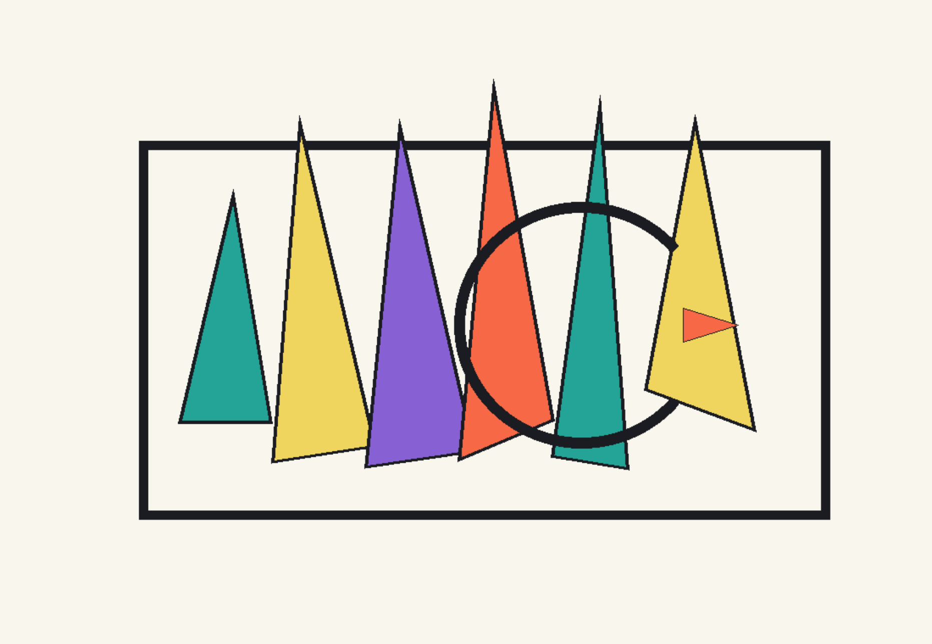

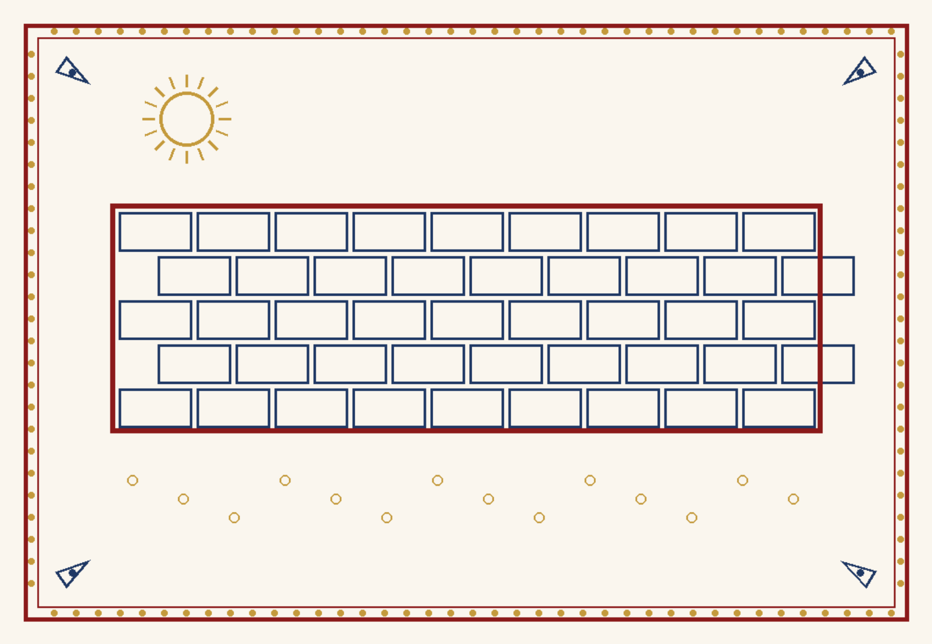

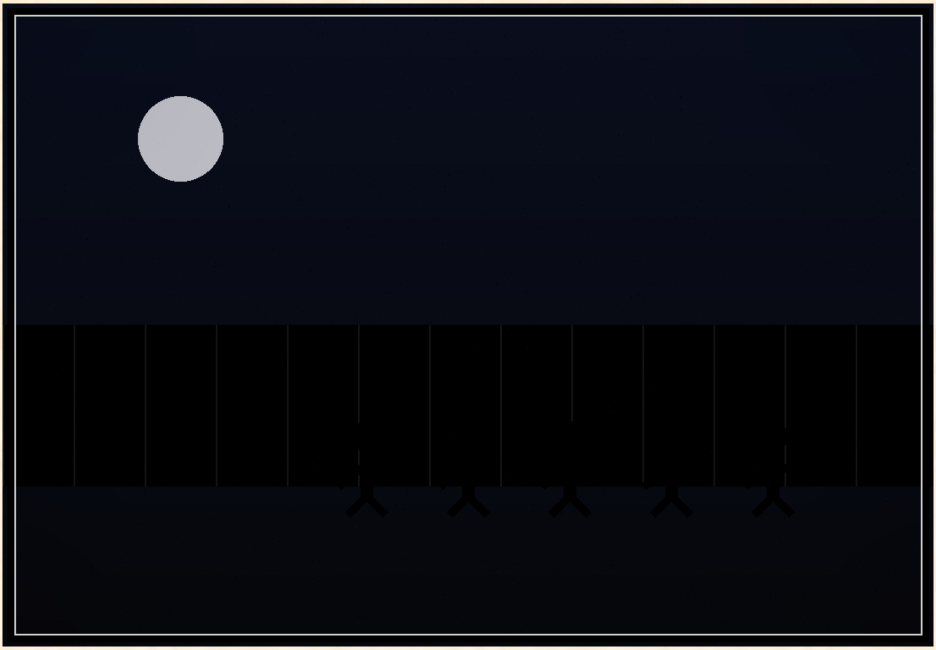

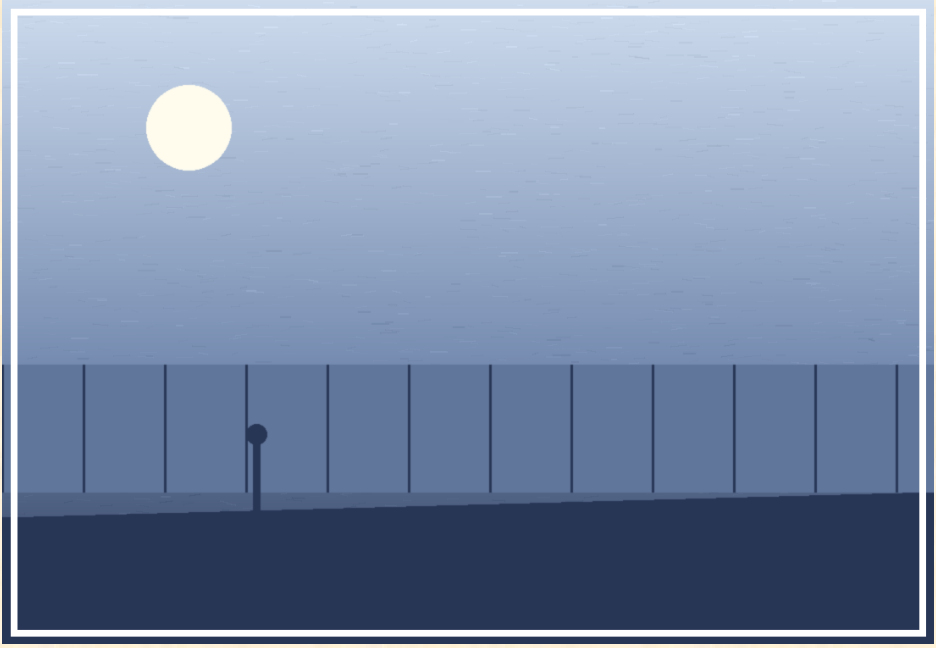

चित्र 9

'हँ,' टुराकोस कहलक, 'ऐ लोकक उत्तरमे उत्तरबरिया महार छै — ऊँच, नमहर देवाल। तकर ओइपार रेगिस्तान। सुनै छिऐ, ओतऽ पहिने खेत छलै। मुदा जहियासँ एतुक्का रानी ओहि इलाकामे कूड़ा-कचरा फेकबाक आदेश देलनि, ओहि दिनसँ ओ इलाका सुन्न हेबऽ लागल, आ आब त' रेगिस्तान भऽ गेल अछि।'

आस्था ठमकि गेलि। 'रानी अपने लोकक एकटा हिस्साकेँ कूड़ाघर बना देलनि?' 'हँ। आ जखन आदेश देलनि, तहिये ई महार बनाओल गेल — कूड़ा फेकबाक स्थान फरिछाबैमे सुविधा भेल।' टुराकोसक स्वर सपाट छल, मुदा आस्थाक मोनमे पहिल काँट गड़ि गेल: जे लोक एतेक सुन्दर अछि, ओकर एकटा कोन एतेक कुरूप किएक?

तखने एकटा भयंकर साँप सोझाँ आबि गेल — कारी, चमकैत, फन उठौने। आस्था डरा गेलि, टुराकोसक पाँखि पकड़ि लेलक। 'नै डराउ,' टुराकोस कहलक, 'ई ओना त' सभसँ बेसी बिखबला मम्बा साँप अछि, मुदा ई हमर अपन अफ्रीकाक अछि। ऐ परीलोकमे जेना सभ मनुक्खक बोली बाजऽ लगैए, तहिना सभक बिख सेहो खतम भऽ जाइए।'

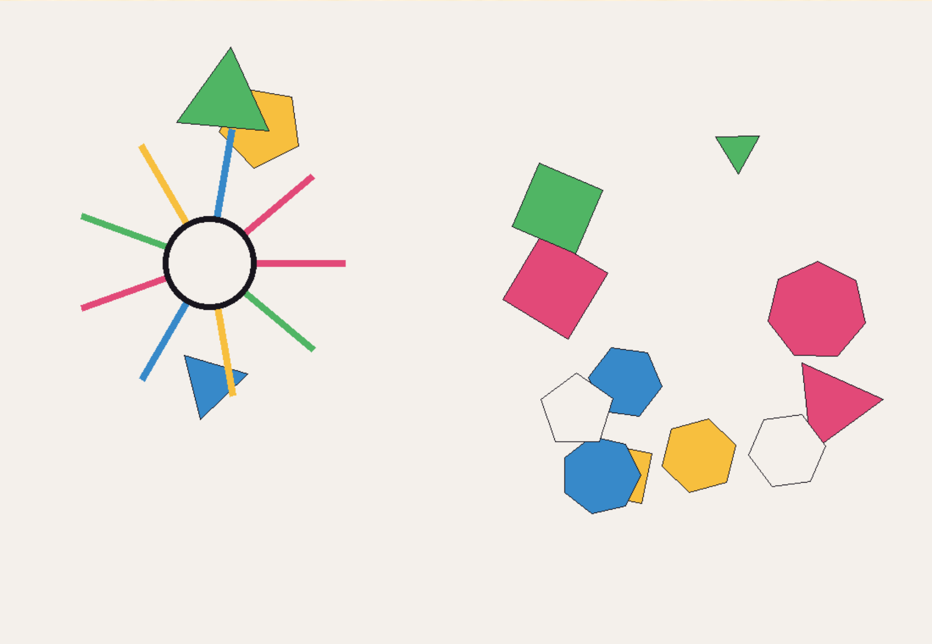

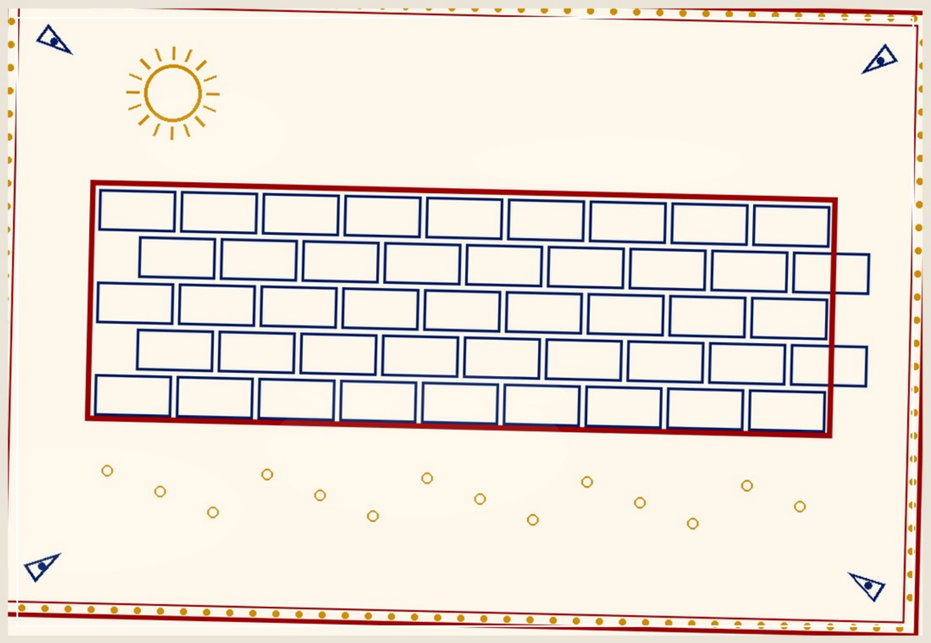

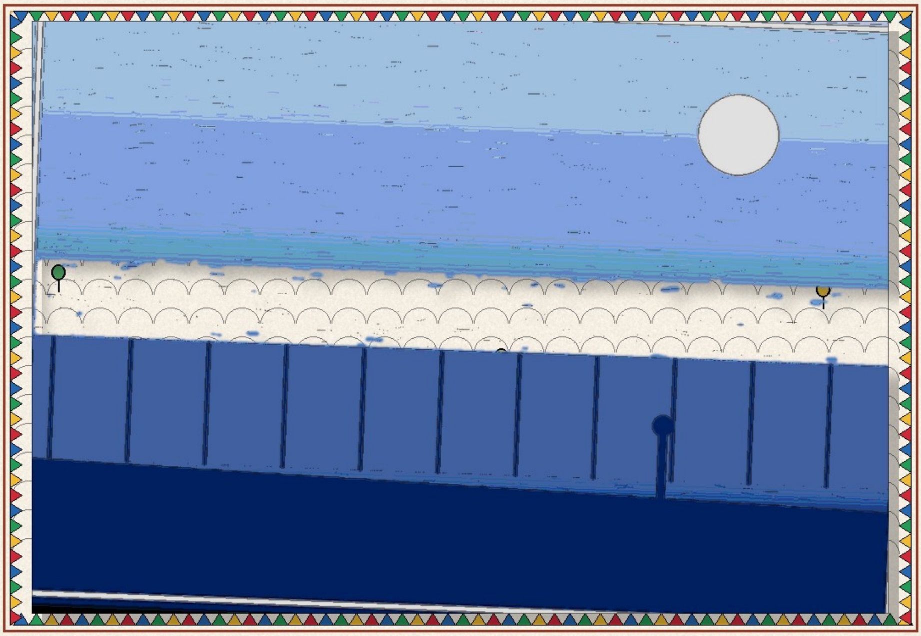

चित्र 10

मम्बा सिसकारी दैत भारी अबाजमे बाजल — 'परीलोकमे अहाँक स्वागत अछि।' ओकर स्वरमे बिख नहि छल, मुदा एकटा पुरान थकान जरूर छल, जेना बहुत दिनसँ ओहो कोनो बाट ताकि रहल हो।

तखने एकटा हँसैबला जीव फुदकल — 'खी-खी-खी!' 'ई के छी?' 'ई छी कूकाबुरा, आस्ट्रेलियासँ आएल। ई हरदम हँसिते रहैए।' कूकाबुरा खिखिया कऽ एहन हँसल जे आस्थो केँ हँसी लागि गेलै — एहि अजीब लोकमे पहिल खुलि कऽ कएल हँसी।

मुदा हँसी थम्हिते आस्थाक माथमे गनती शुरू भेल: 'आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, एशिया... हम त' धोधरिसँ एलहुँ, आ अहाँ सभ?' आ एहि बेर तितली, टिकुली, कूकाबुरा, मम्बा आ टुराकोस एकट्ठे बाजल — 'हमहूँ सभ धोधरिसँ एलहुँ।' ओहि एक-स्वरमे एकटा एहन सत्य छल जे आस्थाक करेजकेँ छूबि गेल: ई सभक सभ ओकरे जकाँ खसल यात्री छल।

अध्याय ६ : आठ महादेशक धोधरि

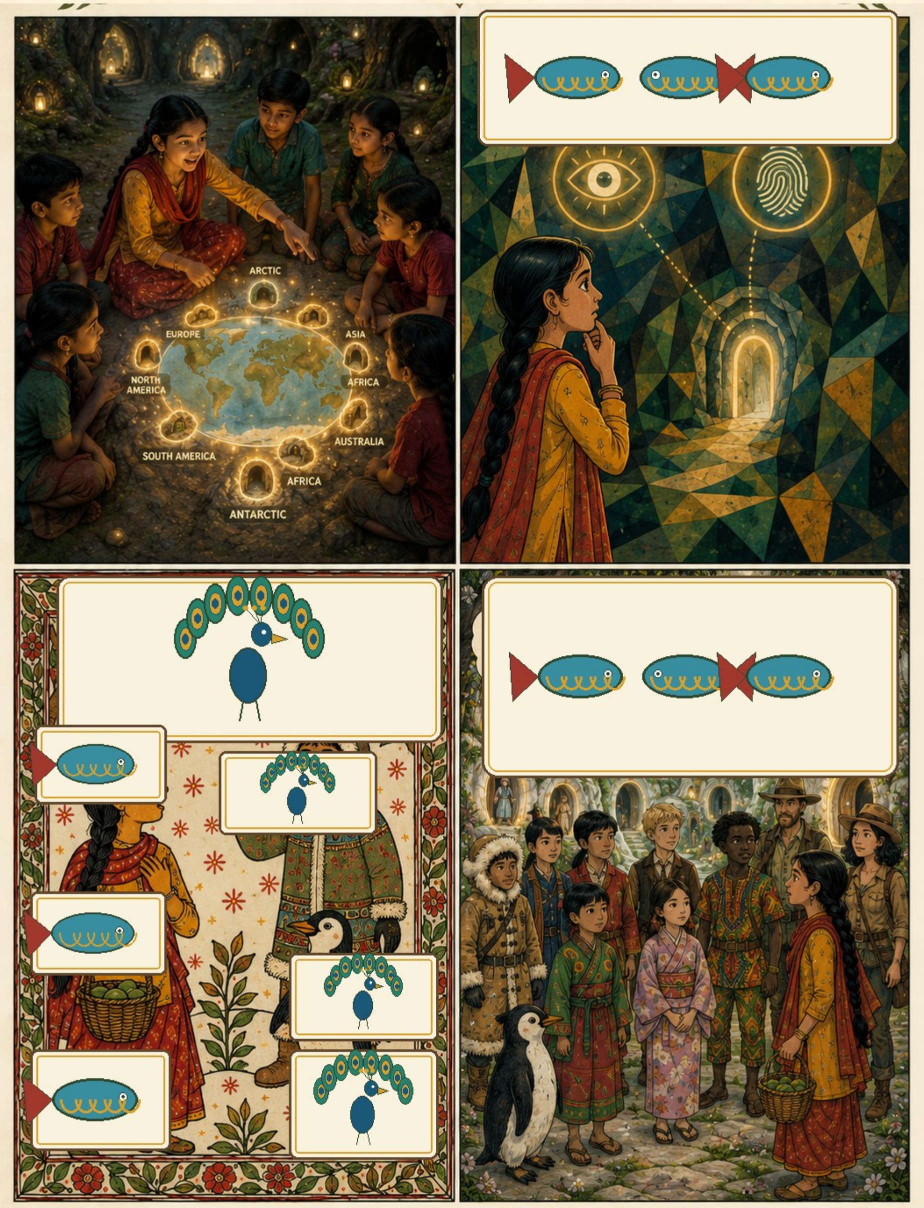

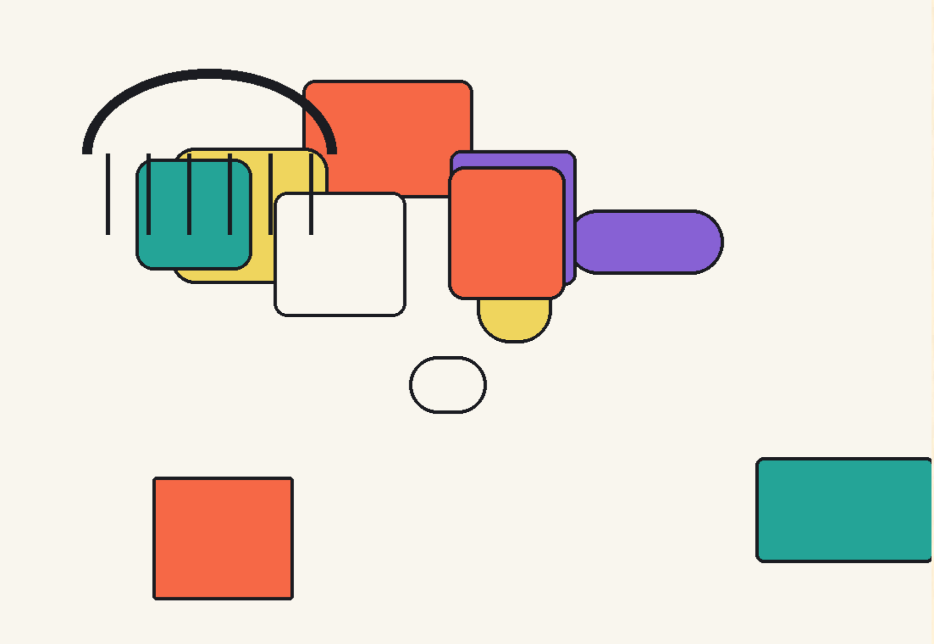

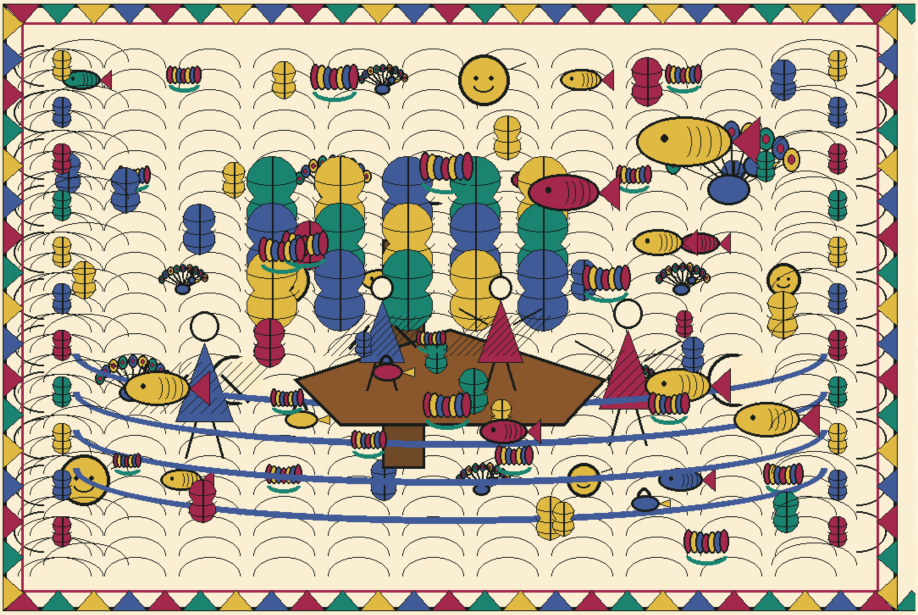

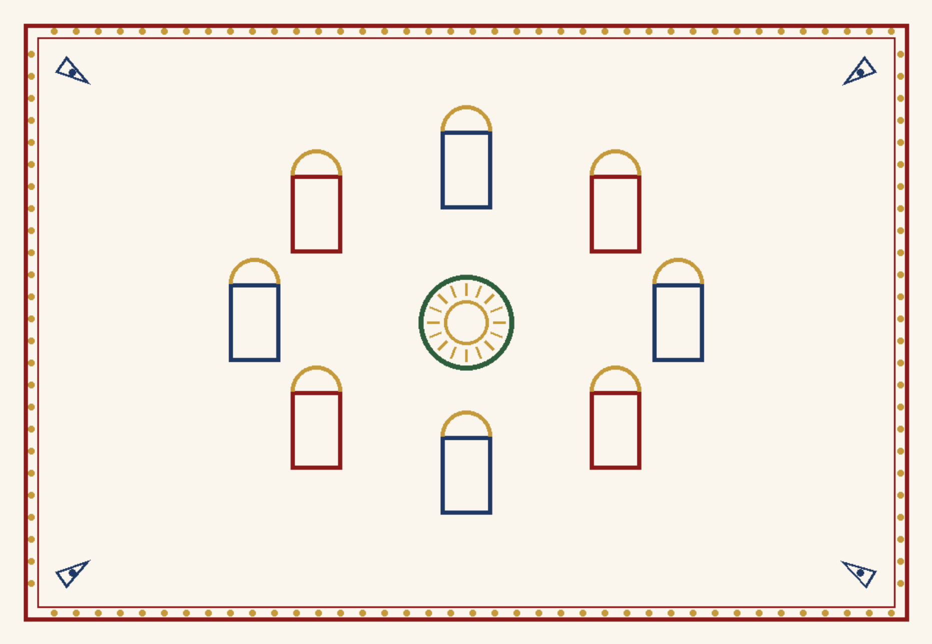

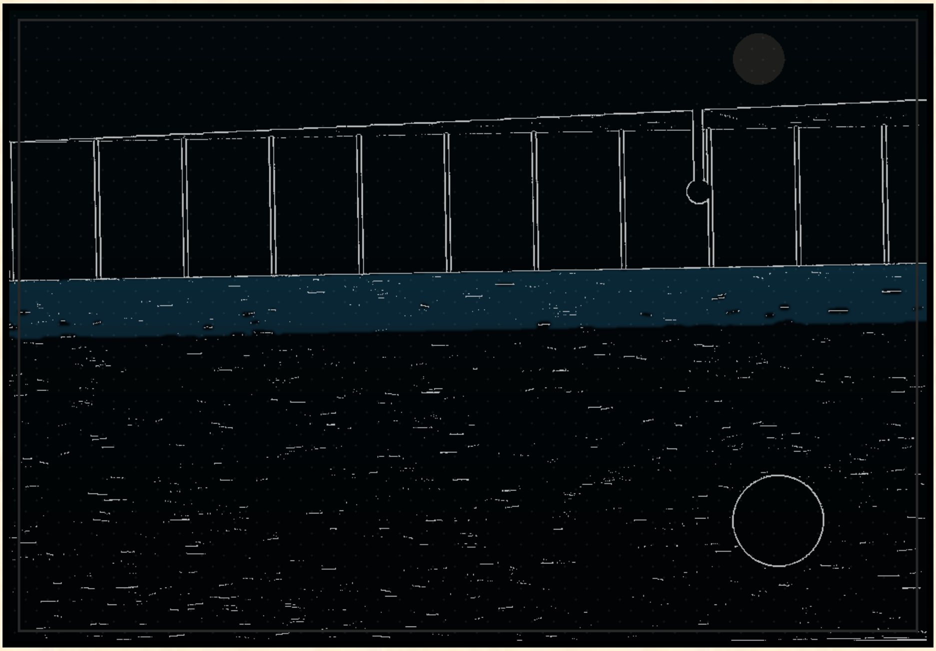

चित्र 11

कूकाबुरा हँसैत-हँसैत गम्भीर बात कहि गेल — 'एतऽ परीलोकमे आर्कटिक, अण्टार्कटिक, एशिया, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका आ अफ्रीका — आठो ठामसँ धोधरि बनाओल गेल छै।' बनाओल गेल छै — ई शब्द आस्थाक कानमे अटकि गेल। धोधरि अपने नहि बनल, केओ बनओलक।

'आ बाहर निकलबाक कोनो उपाए?' आस्था पुछलक। मम्बा बाजल, 'सुनिते छिऐ जे बाहर निकलै लेल औंठा आ आँखिक पहचानक आधारपर कोनो निकास छै — जइसँ आठो ठाम बहराएल जा सकैए।'

आस्था अकचकाइत पुछलक, 'आँखि आ औंठाक पहचान? माने फिंगरप्रिन्ट आ कोर्निया आइडेन्टिफिकेशन? से किए?' मम्बा कहलक, 'से नहि भेलासँ एशियाक लोक अण्टार्कटिका पहुँचि जाएत, आ से भेने गड़बड़ हएत।'

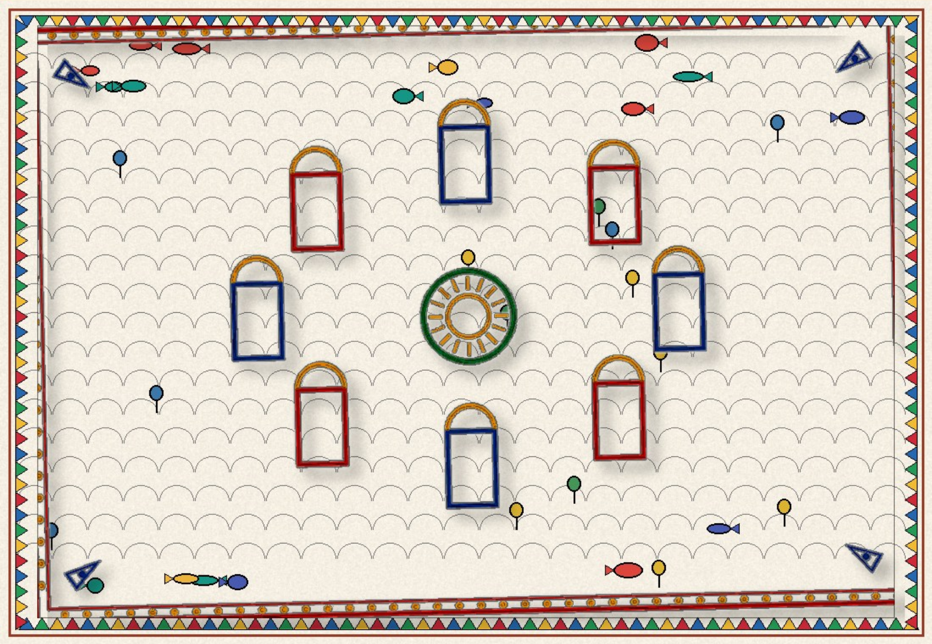

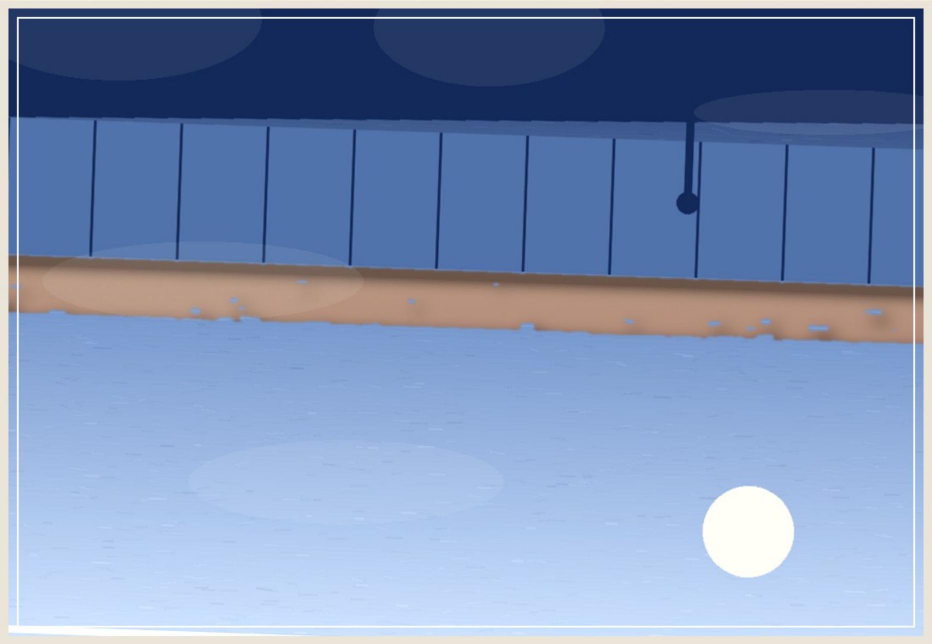

चित्र 12

'की गड़बड़ हएत?' 'बड्ड गड़बड़। जेना आर्कटिककेँ लिअ — ओतऽ उत्तर ध्रुवपर कहियो राति नहि होइ छै। एकटा एस्कीमो भेटत, से कहत- अहाँ के? तहिना अण्टार्कटिकमे दक्षिण ध्रुवपर कहियो दिन नहि होइ छै। एकटा पेंग्यूइन भेटत, से कहत- अहाँ के?'

आ जेना खिस्सा सुनि कऽ पात्र चलि अबैत अछि, तहिना तखने दू कातसँ एस्कीमो आ पेंग्यूइन अबैत देखेलाह। नमस्कार-पाती भेल। आब ओ सभ आठ गोटे छल — आठ ठामक आठ यात्री, एक्कहि उज्जर लोकमे।

आस्था सभकेँ देखलक आ मोनमे सोचलक: सभ केओ एतऽ स्वागतमे मुस्कुराइत अछि, मुदा ककरो लग घर घुरबाक बाट नहि अछि। ई केहन परीलोक छी, जतऽ अएबाक आठ दरबज्जा आ जेबाक एक्को नहि — खाली एकटा अफवाह, औंठा आ आँखिक चिन्हासीबला?

अध्याय ७ : सात रंगक कियारी

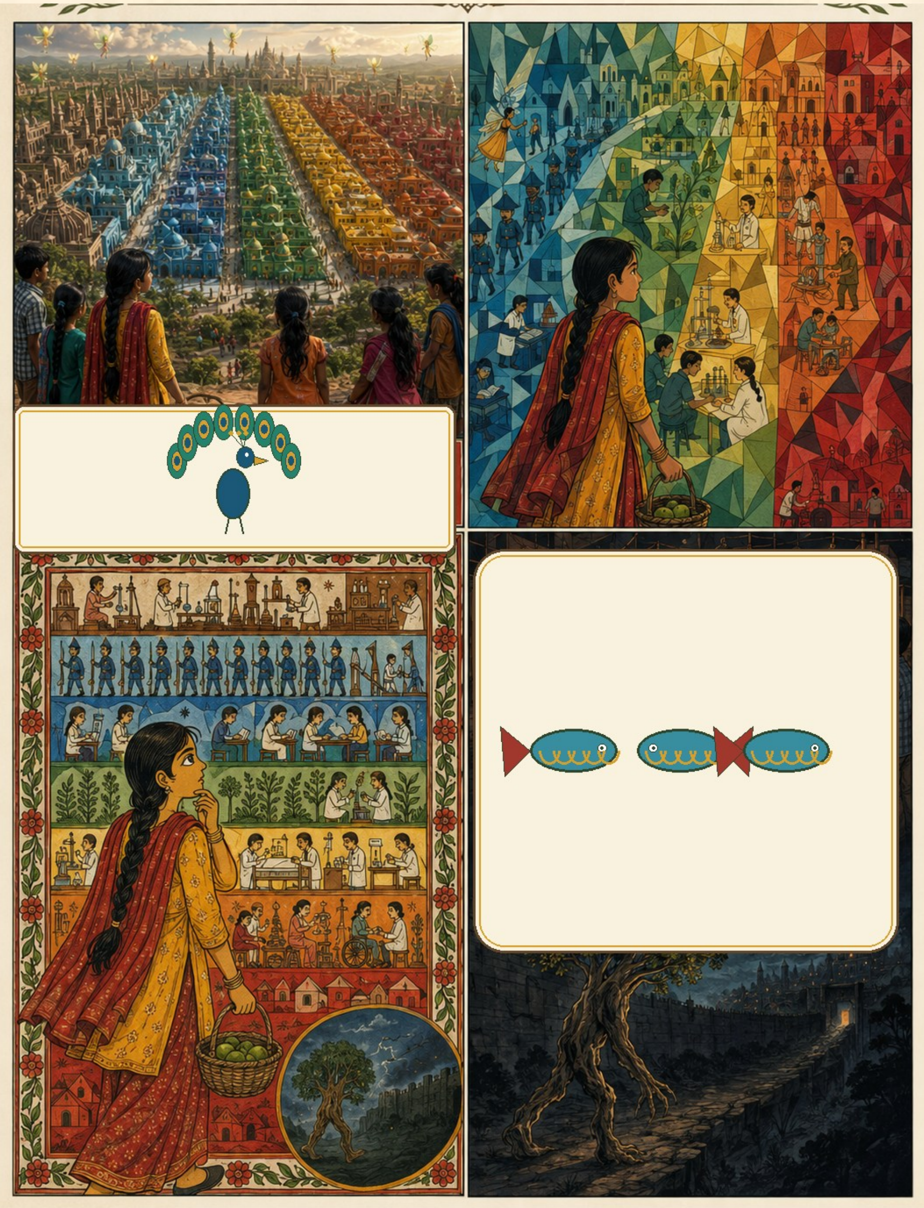

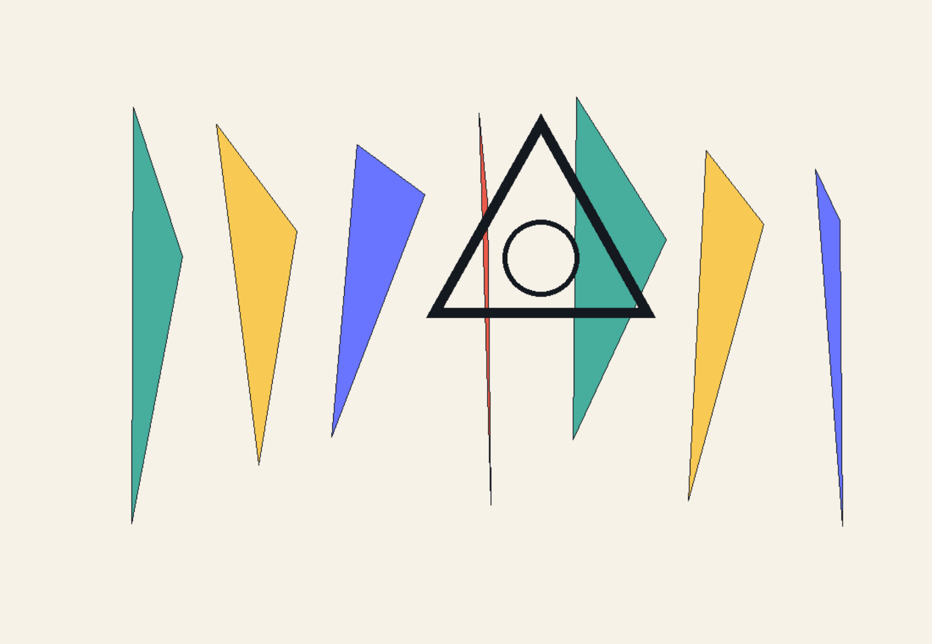

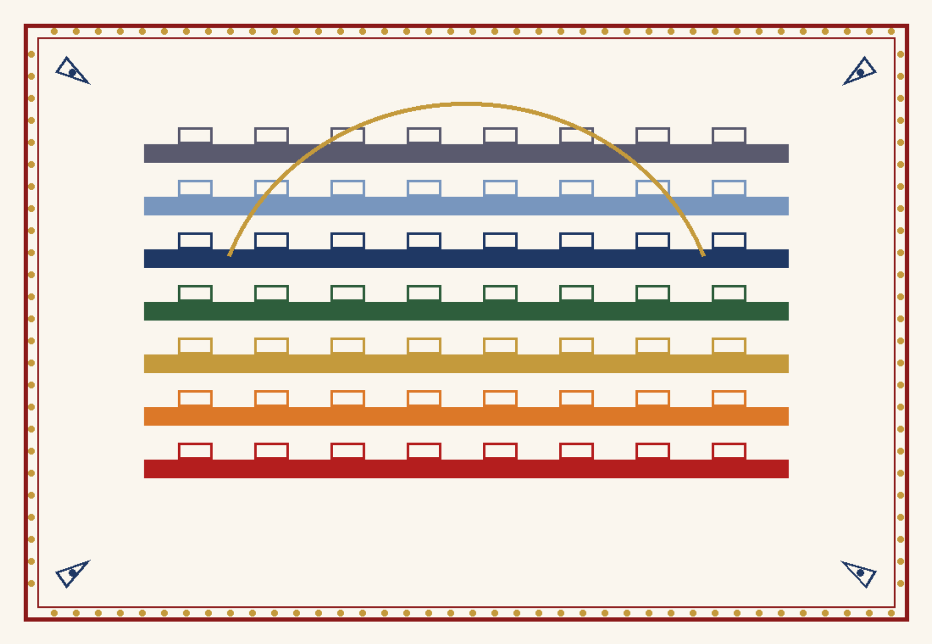

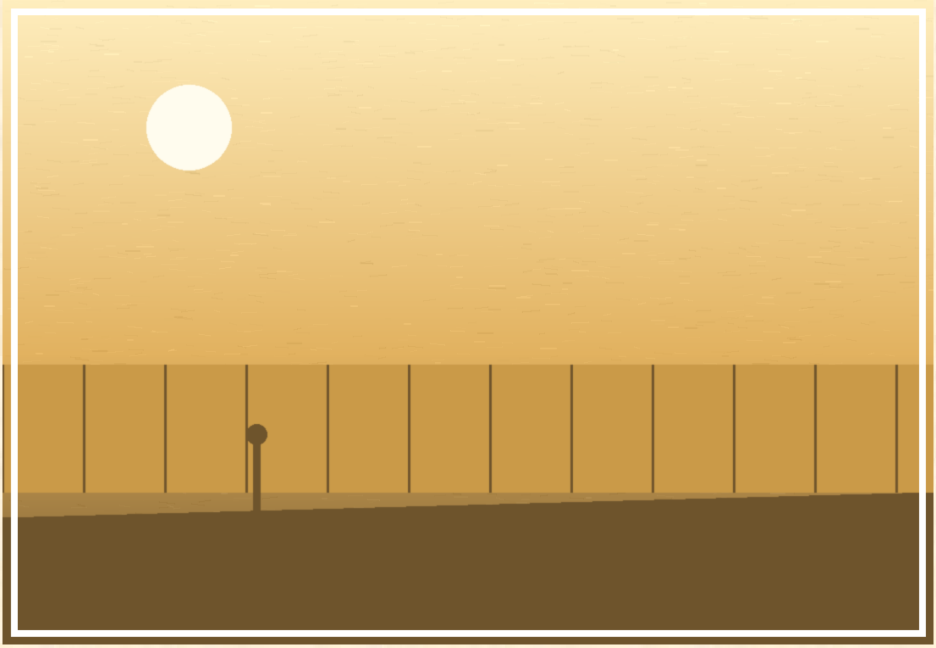

चित्र 13

आगाँ बढ़िते सड़कपर चहल-पहल शुरू भऽ गेल। कनियाँ-पुतरा सन परी सभ चारू कात घूमि रहल छलीह। घर-दुआर रंग-बिरंगक। आ सोझाँमे — अकासक पनिसोखा जमीनपर उतरि आएल हो जेना — एक पाँतीमे सातटा कियारी: भटरङ, असमानी, नील, हरियर, पीयर, संतोला आ लाल टुहटुह।

'ई की छी, टुराकोस?' 'ई परीलोकक मुख्यालय आ आवास छी।' आ टुराकोस एक-एक कऽ गनबए लागल: 'भटरङ कियारीमे वैज्ञानिक सभ रहै छथि। असमानीमे सैन्य विभाग। नील रङक मकानक कियारीमे बच्चा सभक स्कूल — पहिला वर्गसँ विश्वविद्यालय धरि। हरियरमे वनस्पतिपर शोधक प्रयोगशाला। पीयरमे मालजाल, मनुक्ख, परीपर शोधक प्रयोगशाला आ अस्पताल।'

'आ संतोला?' 'संतोला रङक पाँतीमे मानसिक आ शारीरिक रूपसँ कमजोर मनुक्ख, परी, चिड़ै, जानवर आ वनस्पतिपर शोध लेल प्रयोगशाला छै। ई पाँती सभसँ पैघ छै, आ एतऽ...' — मुदा आस्था बीचहिमे टोकि देलक।

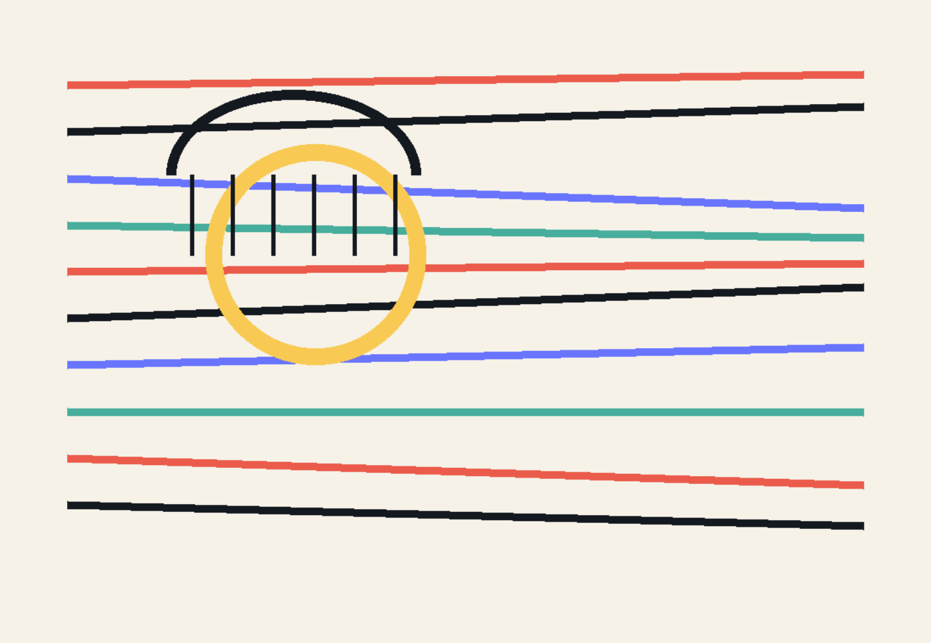

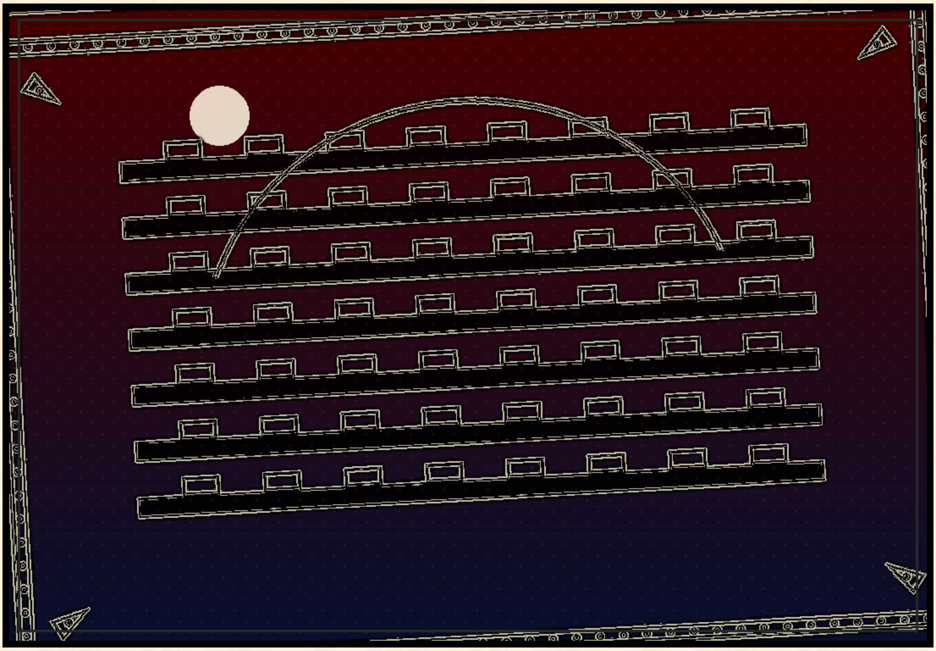

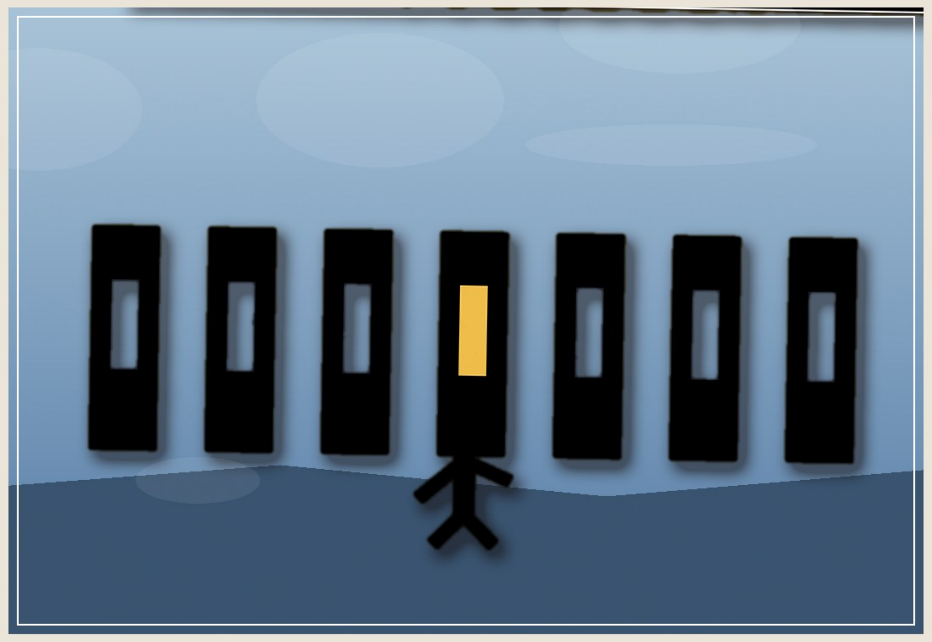

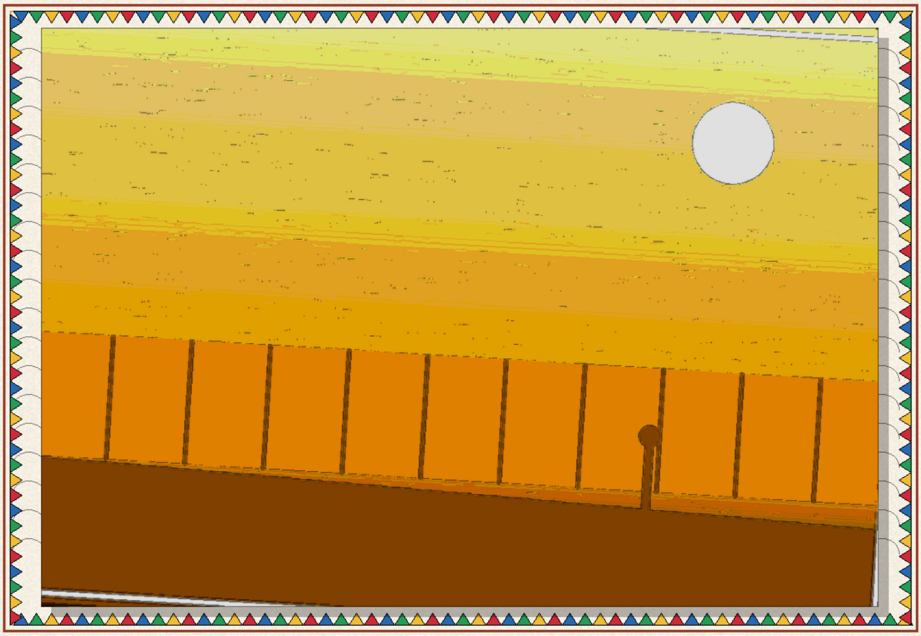

चित्र 14

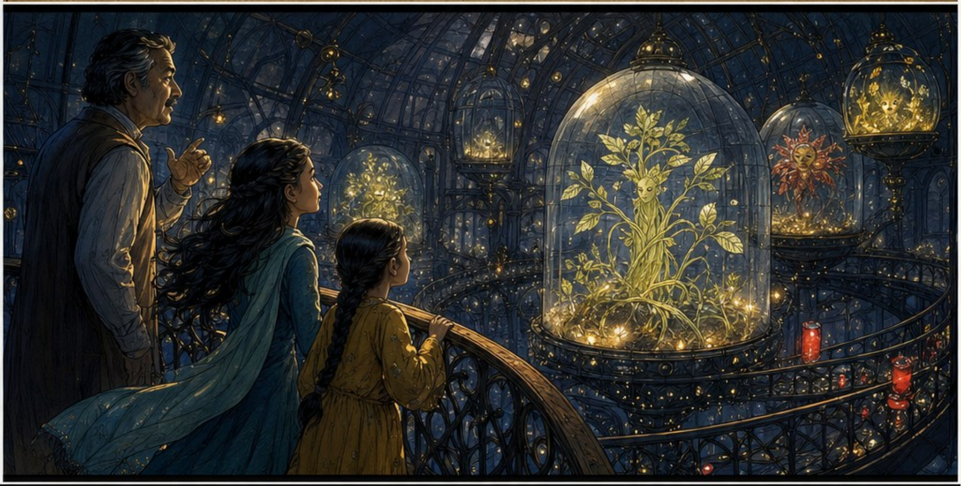

'मानसिक रूपसँ कमजोर वर्गमे वनस्पति सेहो? से कोना? शारीरिक त' बुझलहुँ, मुदा मानसिक?' टुराकोस कनी थम्हल, फेर मद्धिम स्वरमे कहलक — 'एतऽ प्रगति बड्ड तेजीसँ भेलै। वनस्पति सेहो मनुक्ख जकाँ बाजऽ, भुकऽ आ सोचऽ लागल। ओ खाली चलि नहि पबैए — सएहटा कमी छै, मुदा तकरो प्रयास भऽ रहल छै।'

आ फेर ओ बात, जे आगाँ चलि कऽ सभटा खिस्साक धुरी बनत: 'सुनै छिऐ जे प्रयोगशालामे एकाधटा गाछ चलऽ लागल छलै... आ ओइमेसँ एकाधटा पड़ा गेलै — अन्हार लोक दिस, महारक ओइपार।' चलैत गाछ! आस्थाक देह सिहरि गेलै — डरक नहि, कोनो पैघ रहस्यक कोर छूबि लेबाक सिहरन।

'आ ई लाल टुहटुह पाँती?' मम्बा बाजल, 'ई परीलोकक बसिन्दाक निवास। सातो पाँती साँप सन टेढ़-टूढ़ भऽ सौंसे परीलोकमे पसरल अछि।' आस्था सोचलक — रंग एतेक सुन्दर, विभाजन एतेक कठोर। जकर जे रंग, तकर वैह घर, वैह काज, वैह सीमा। एतऽ पनिसोखो पाँतीमे बान्हल अछि।

अध्याय ८ : वनसप्तो ९९९९५७४५

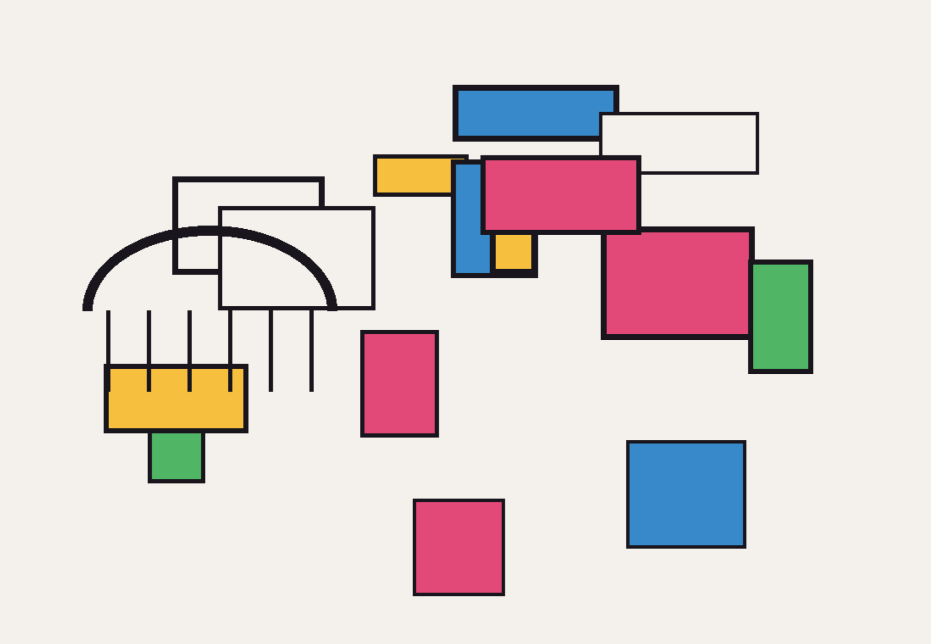

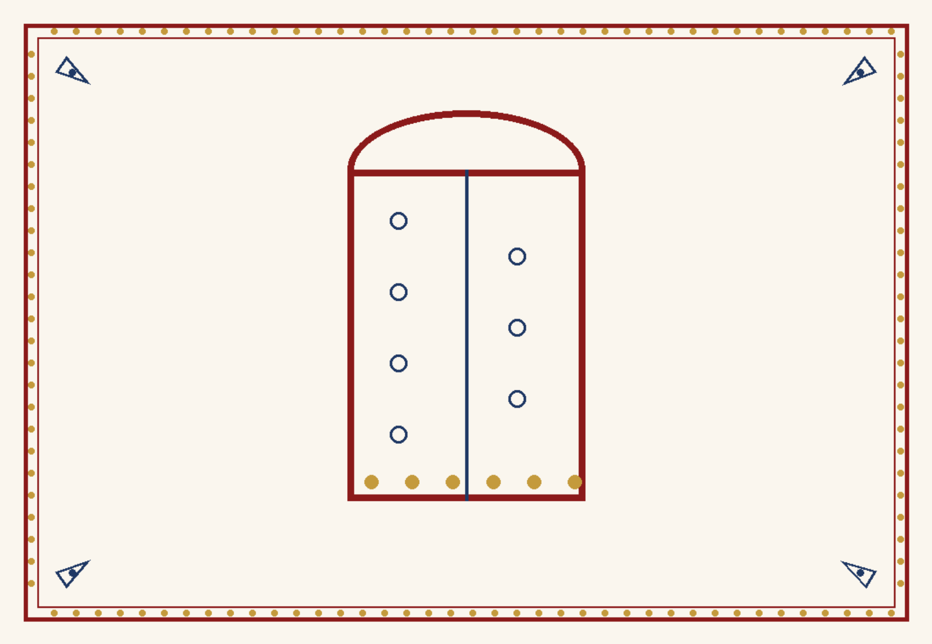

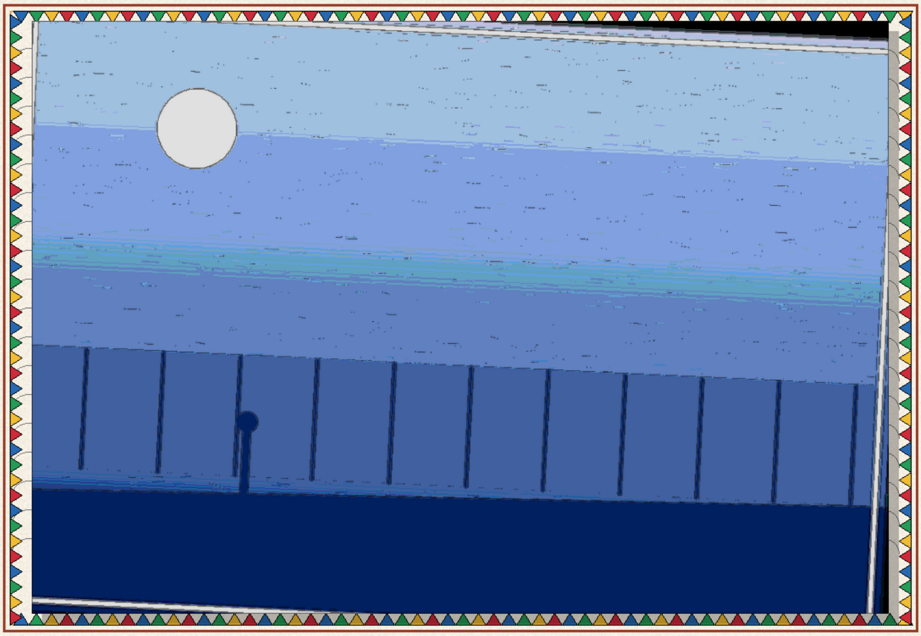

चित्र 15

परीलोकमे सभ किछु साफ-सुथरा छल — सड़क, चौबटिया, गाछ-बृच्छ। गाछक पात सभ गोल-गोल, डाढ़ि-पात एहन जेना केओ अनुपातसँ कतरने हो। नहि कनियो पैघ, नहि कनियो छोट। सभ आस्थासँ नमस्कार-पाती करैत छल, सभ मनुक्खक बोली बाजैत छल।

मुदा आस्था तखने किछु अकानलक — हवा त' लगैए जे एतऽ बहिते नहि छै! पात सभ एक्को रत्ती हिलि नहि रहल छल। टुराकोस कहलक, 'एम्हुरका गाछक पात नहि हिलत। खाली हरियर पाँतीक प्रयोगशाला लगक गाछमे विशेष परखनलीसँ हवाक व्यवस्था छै — ओतऽ पात हिलैत भेटत। शेष परीलोकमे नहि।' आस्थाकेँ अपन चन्ना गाछी मोन पड़ि गेलै, जतऽ बिनु पुछने बसात सभ पातकेँ नचबैत छल। सुन्दरता जँ साँस नहि लिअए, त' ओ चित्र भऽ जाइत अछि — जीवन नहि।

तखने सड़कक बीचमे एकटा बड़का दरबज्जा प्रकट भेल — सातो रङक सातटा फाटक। टुराकोस बाजल, 'सभ आबि जाउ लाल टुहटुह फाटक लग। आस्थाकेँ रानीसँ भेँट करै लेल महल जाए पड़तै, आ ओतऽ जेबाक यएह रस्ता छै।'

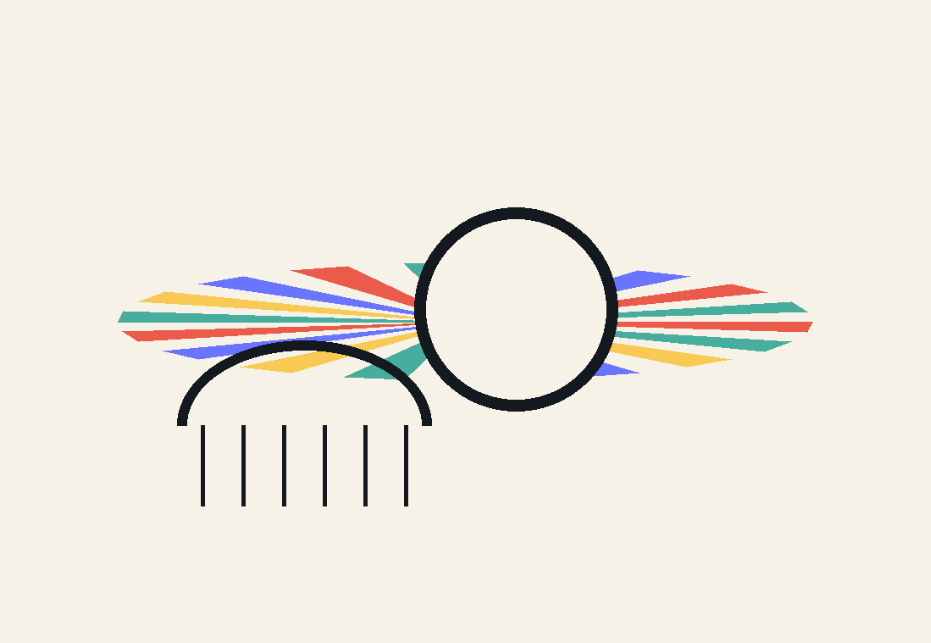

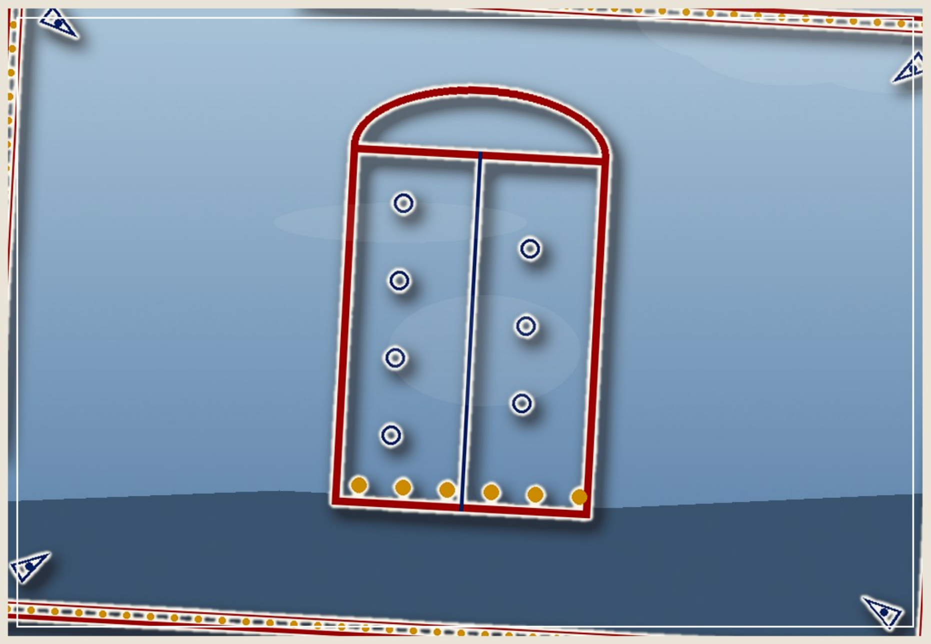

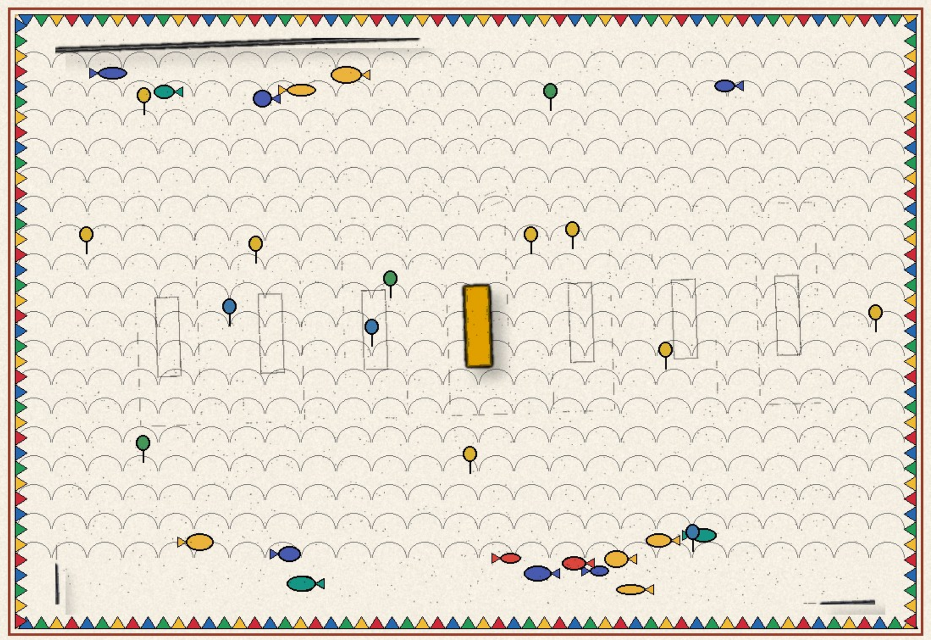

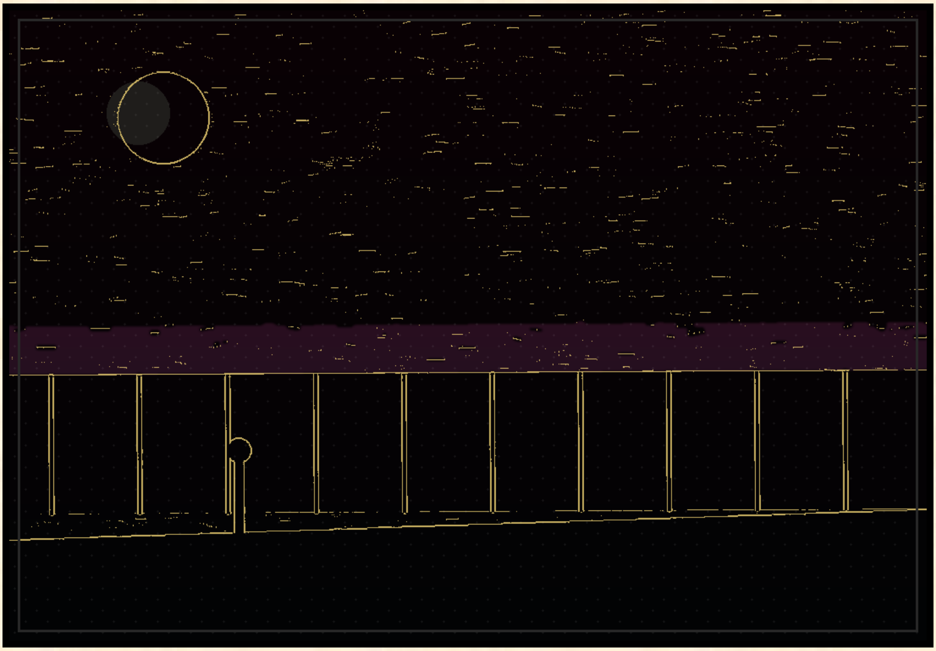

चित्र 16

लाल दरबज्जापर लाल पंखक फ्राक पहिरने महिला सभ बैसल छलीह। एक गोटे आगाँ बढ़ि बजलीह — 'आउ आस्था, रानी अहाँक प्रतीक्षामे छथि।' आस्थाक पएर ओतहि रुकि गेल। 'अहाँकेँ हमर नाम कोना बुझल अछि? रानी हमर इन्तजारीमे कोना छथि? हम त' अनचोक्के धोधरिमे खसल रही!'

महिला मुस्कुरेलीह, 'ऐ परीलोकक कोनो धोधरिसँ जखने कियो खसैए, तखने ओकर रेकॉर्ड शुरू भऽ जाइ छै। सभ गतिविधि भटरङ प्रयोगशालाक माध्यमसँ रानीक मुख्यालय अबै छै। धोधरिसँ खसल प्राणीक सूचना रानी तत्काले मंगबै छथि। हमर नाम वनसप्तो ९९९९५७४५ छी।'

'वनसप्तो त' पाँखिबला गाएकेँ कहल जाइ छै, जे खिस्सामे बोनमे हेराएल बच्चाकेँ घर घुरबै छथि!' 'ऐ लोकमे वनसप्तो सत्तेमे छथि। जे सभ अहाँ खिस्सामे पढ़ै छी, से सभ एतऽ सत्य छै।' 'आ अहाँक नाममे ई अंक किए?' 'एतऽ अही तरहेँ नामकरण होइ छै — हमरा बाद जे जनम लेलक, ओ भेल वनसप्तो ९९९९५७४६।' आस्था चुप भऽ गेलि। जाहि लोकमे खिस्साक पात्र साँच भऽ जाइत अछि, ओही लोकमे नामक ठाम नम्बर भऽ जाइत अछि — ई केहन सौदा?

अध्याय ९ : स्वागत-कोठलीक निन्न

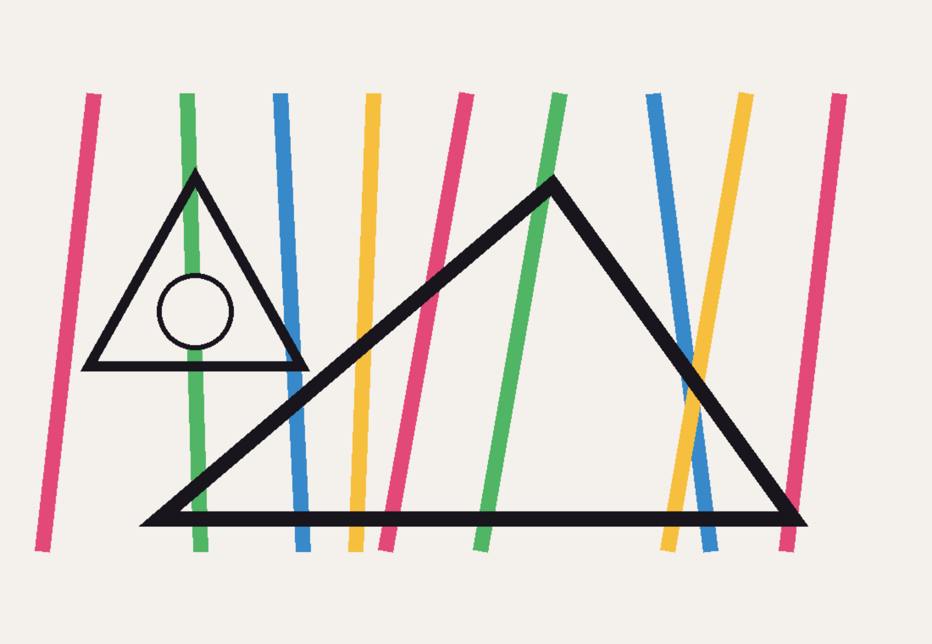

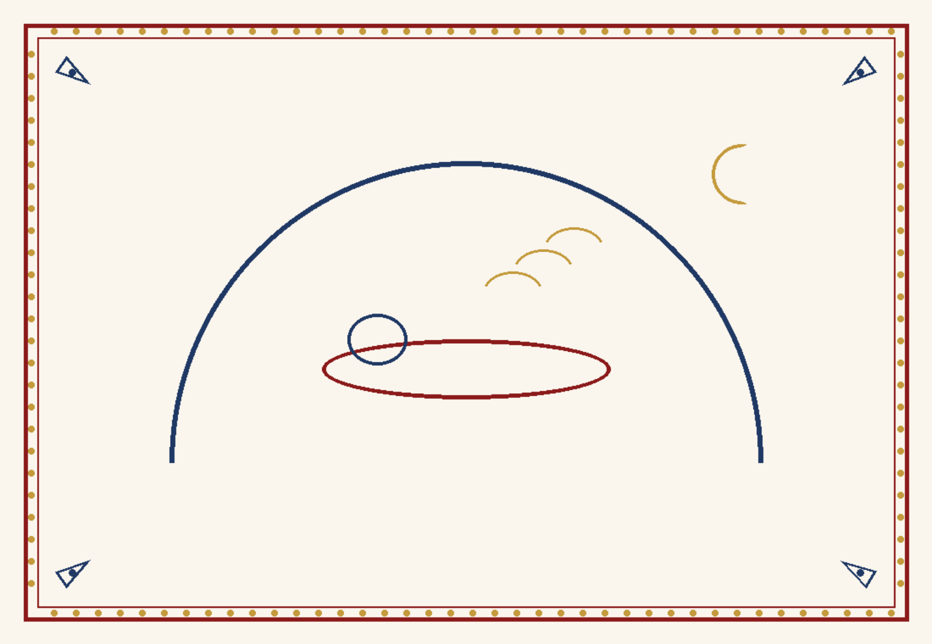

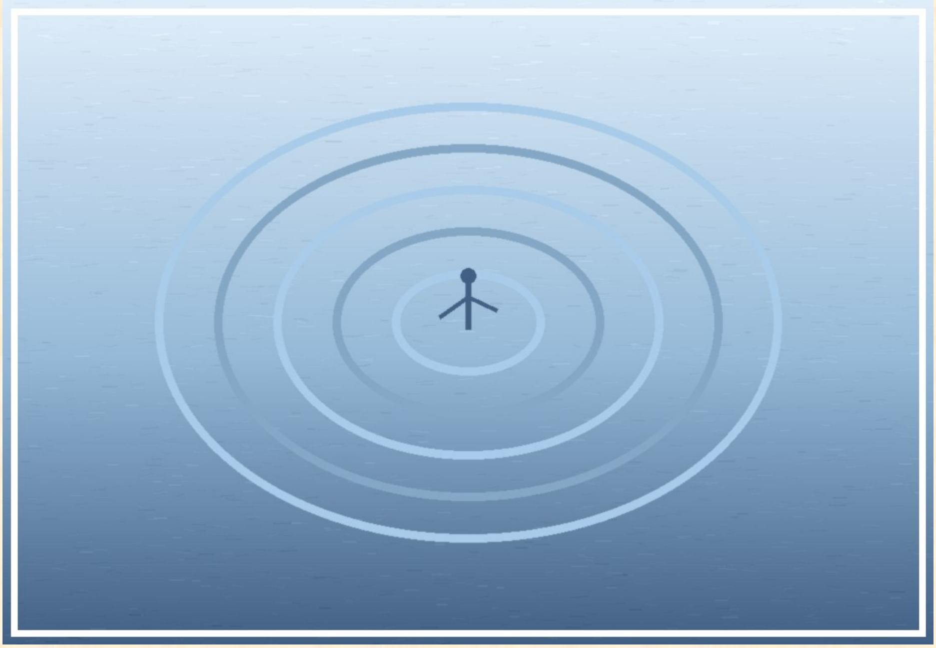

चित्र 17

लाल टुहटुह पाँतीमे जाइते एकटा स्वागत-कक्ष आबि गेल — जे नहिये जमीनपर छल आ नहिये अकासमे! आस्था पएर तर तकलक — किछु नहि, तइयो खसब नहि। एहि लोकक अपन नियम छल, आ ओ नियम पुछला पर उत्तर नहि दैत छल।

एकटा लाल रंगक परी आस्थाकेँ अलग एकटा स्वागत-कोठलीमे लऽ गेलि। बिन अन्हारे ओहिमे साँझ जकाँ लगलै। दिन भरिक अचरज आब देहपर भारी होमए लागल छल — आस्थाकेँ ओंघी लागऽ लगलै।

आ जखने ओंघी लगलै, तखने ओ देखलक — हवा संगे किछु नाक बाटे भीतर जा रहल छै। हवा संगे! ओकरा बुझेलै जे ओ जखनसँ परीलोकमे अछि, तखनसँ साँस लेनहिये नहि अछि। त' की एतऽ नाकक उपयोग हवा सन कोनो चीजक माध्यमसँ खेनाइ खुएबा लेल होइ छै?

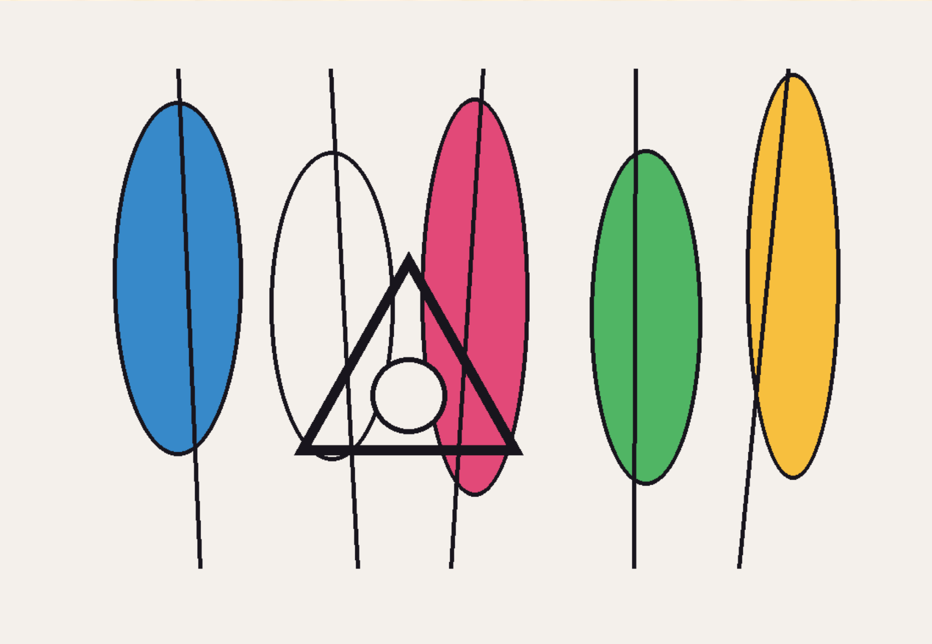

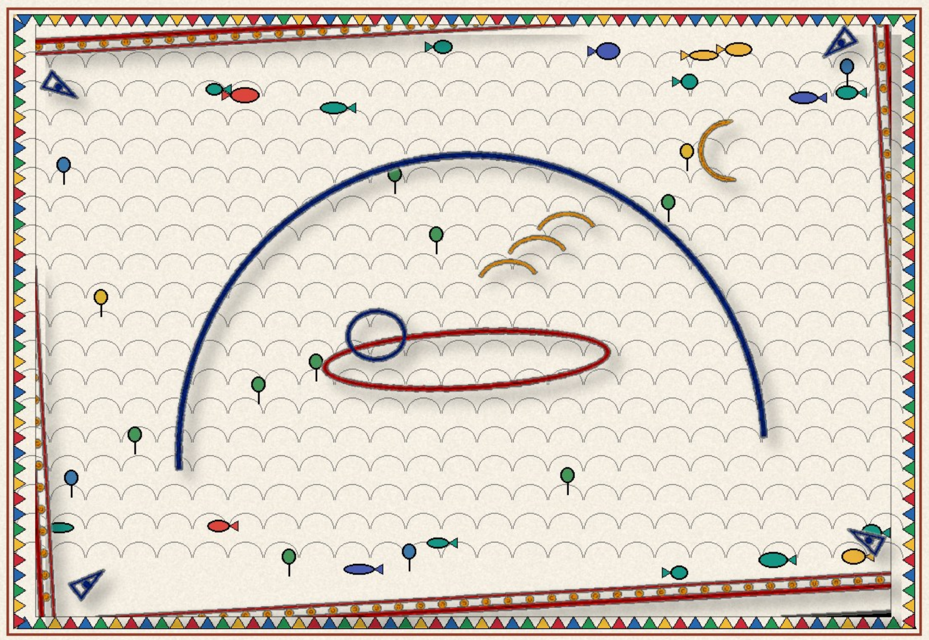

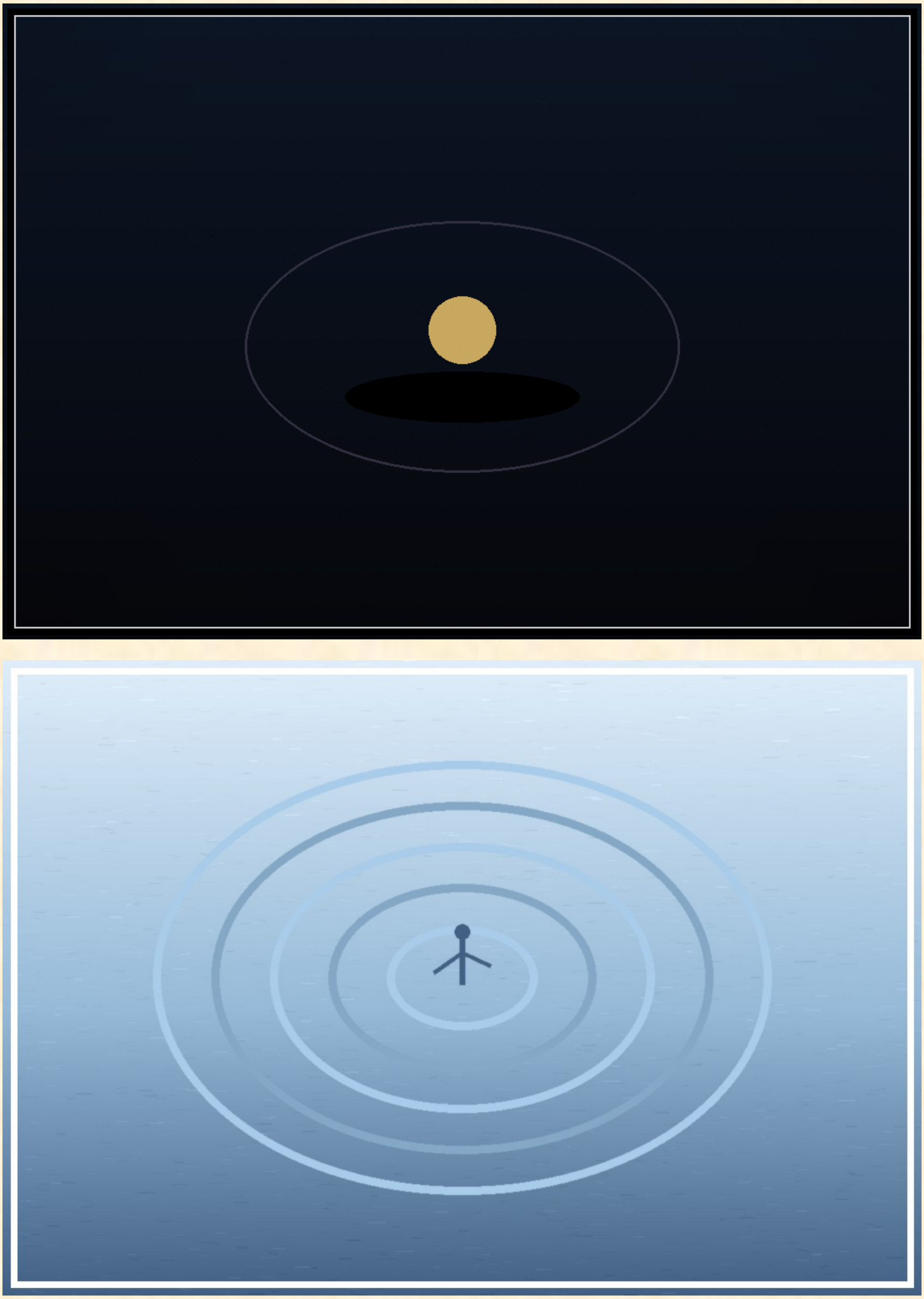

चित्र 18

ई प्रश्न सेहो ओकर आँखिक पिपनी जकाँ भारी भऽ कऽ मुनाइत गेल। दूर कतहु कूकाबुराक खी-खी सुनाइ देलकै, फेर सेहो बन्न भऽ गेलै। आ आस्थाकेँ निनिया लागि गेलै।

निन्नमे ओ घर देखलक। बाबूक कान्ह, माएक चूल्हिक धुँआ, चन्ना गाछीक बाट। आ निन्नमे ओ किछु केलक — किछु एहन, जकर परिणाम जागला पर परीलोकक सभटा शान्ति हिला देत।

अध्याय १० : सपना जे सत्य भऽ गेल

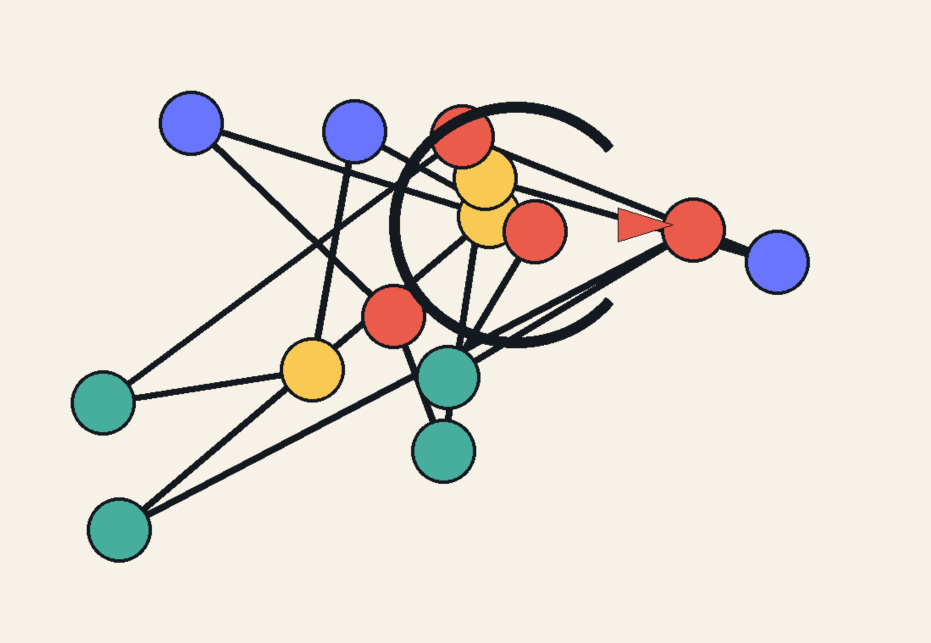

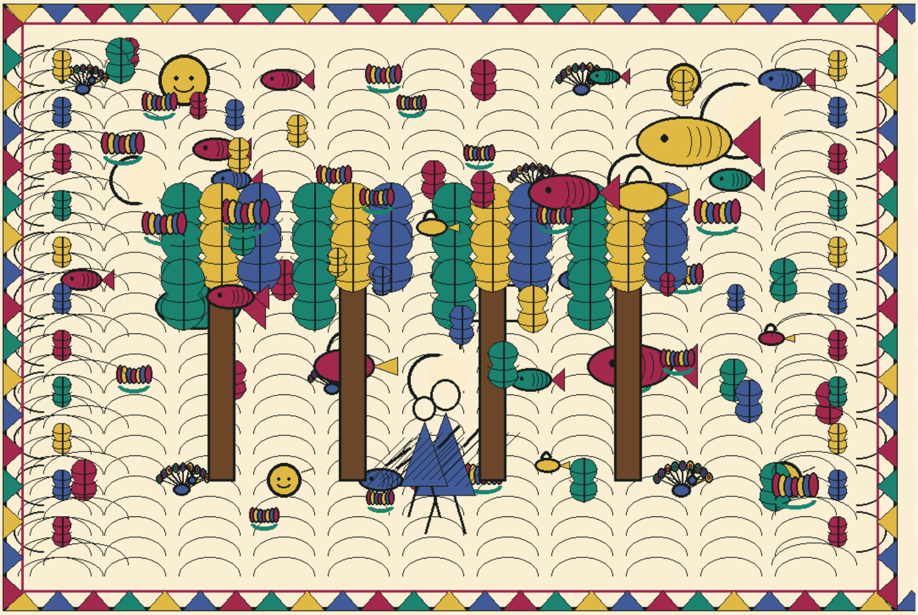

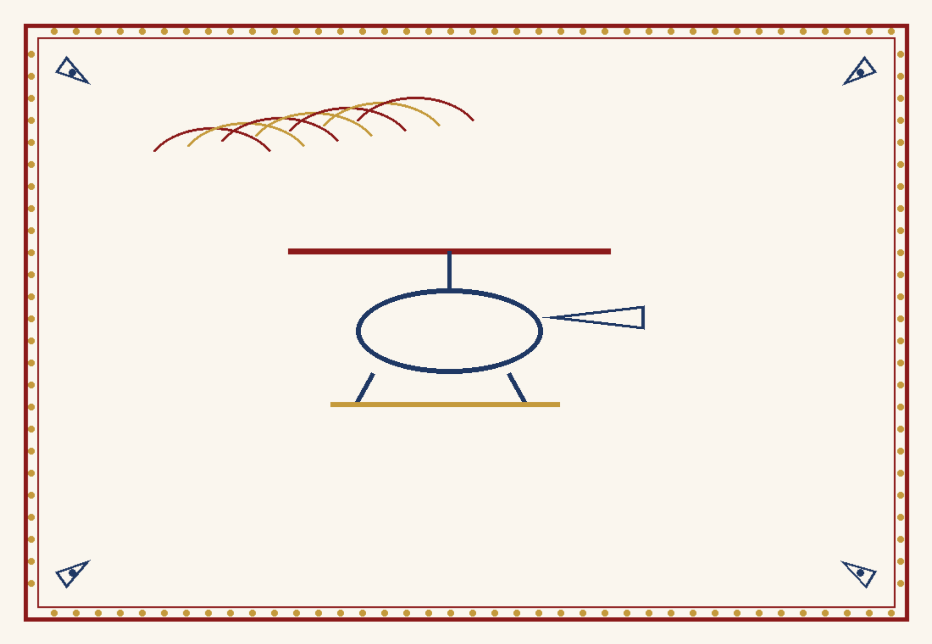

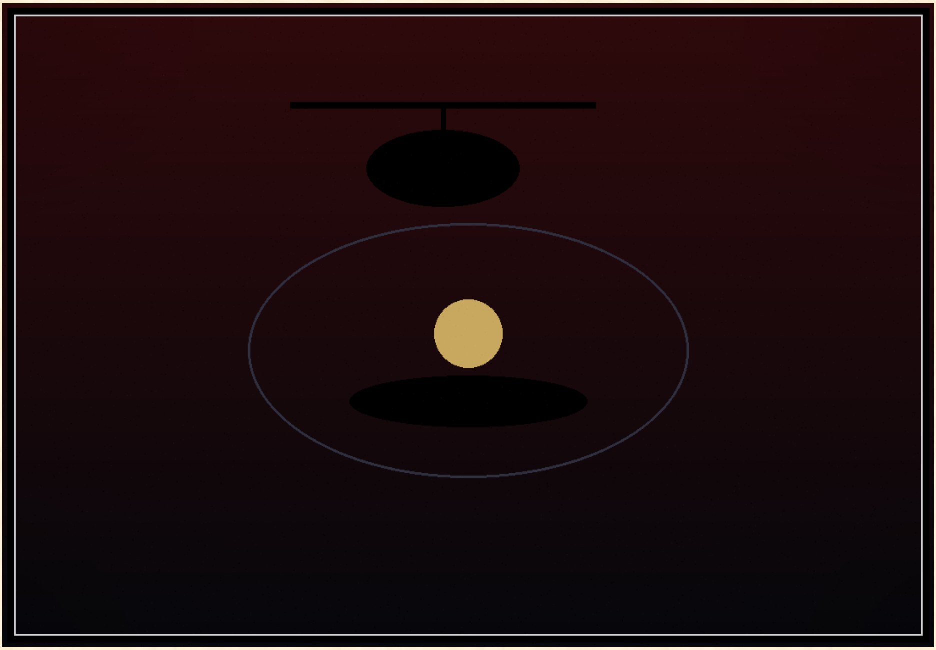

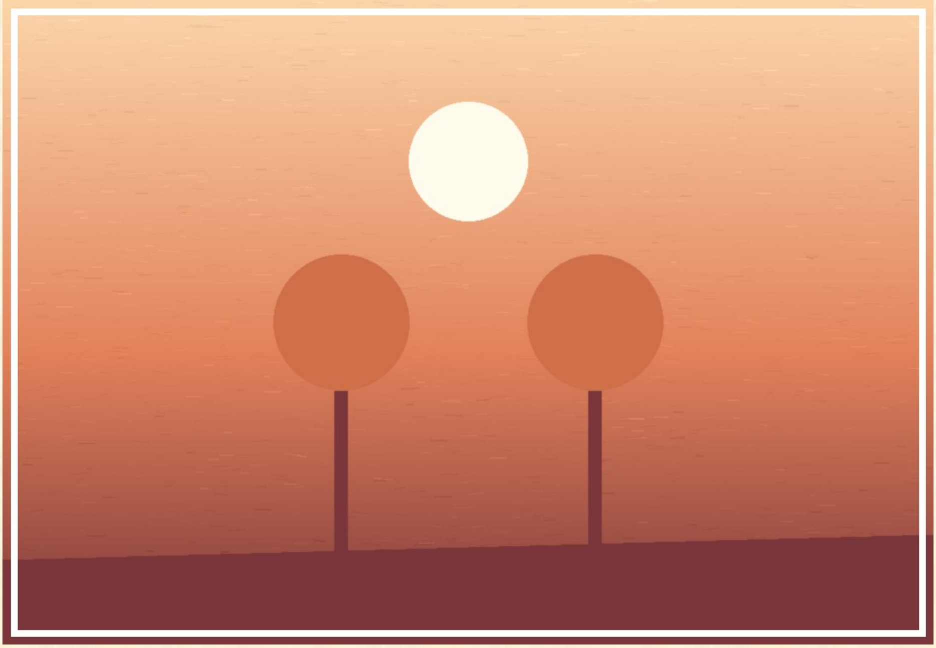

चित्र 19

सुतलासँ उठला पर आस्था चकित रहि गेलि। जे किछु ओ सपनामे केने छलि, से जागला पर सोझाँ छलै! 'ऐ परीलोकमे सुतलमे सपनामे कएल काज सेहो सत्य भऽ जाइ छै?'

आस्था सपनामे देखने छलि जे ओ धोधरिसँ बहरा गेल अछि आ ढेर रास समान घरसँ आनि, हेलीकॉप्टरपर चढ़ि, फेरसँ धोधरिमे ढुकि गेल अछि — दवाइ, खिलौना, एक्सरे-मशीन, चक्कू, फल, बर्तन, तराजू, पहिया, पेचकस, अएना, फटक्का, डिब्बामे पैक केक-बिस्कुट... आ हेलीकॉप्टर! सपनामे ओ सभटा समान हेलीकॉप्टरेमे छोड़ि एतऽ आबि गेल छलि — खाली बर्तन, फल, केक आ बिस्कुट कनी-कनी आनि लेने छलि। से सभ आब कोठलीमे सोझाँ राखल छल।

टुराकोस, मम्बा, एस्कीमो, तितली, टिकुली, कूकाबुरा आ पेंग्यूइन — सातो स्वागत-कक्षमे आबि गेल। टुराकोस आस्थाकेँ आश्चर्यसँ आँखि खोलने देखलक आ कहलक, 'हमरा सभकेँ रानीक आदेश भेटल अछि। ऐ लोकमे सपनामे कएल काज सत्य भऽ जाइ छै, आस्था। तैँ एतुक्का रानी दुनियाँक सभ महादेशक सभ तरहक प्राणीकेँ एतऽ मंगबै छथि — ओ सभ सपनामे बहुत रास बौस्त-जात एतऽ लऽ अनैए।'

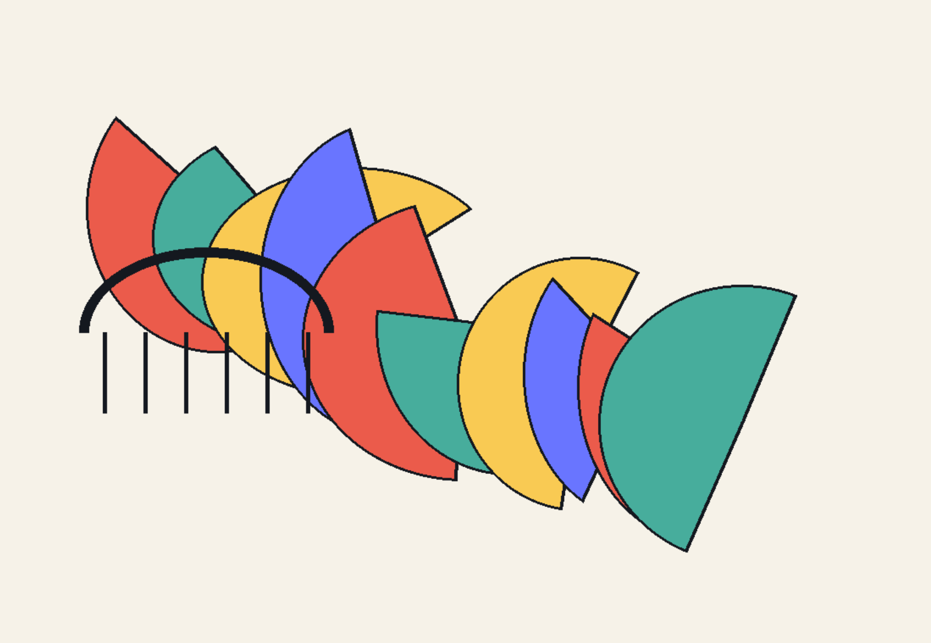

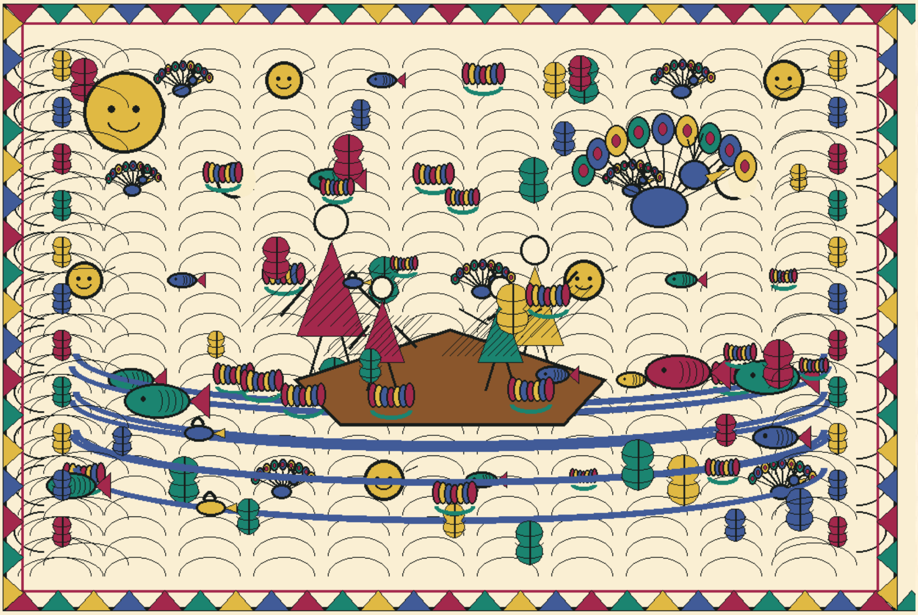

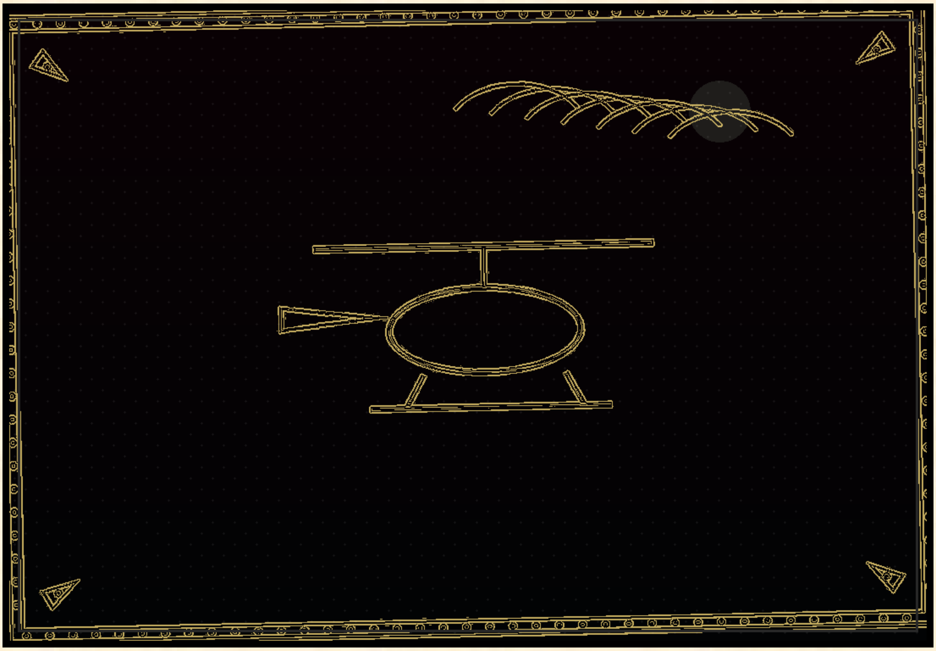

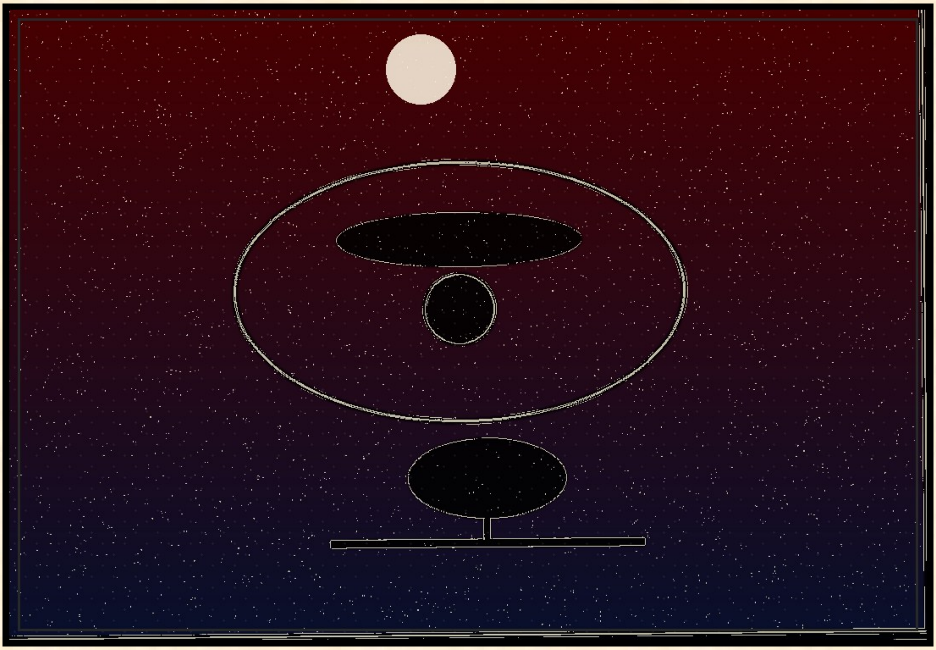

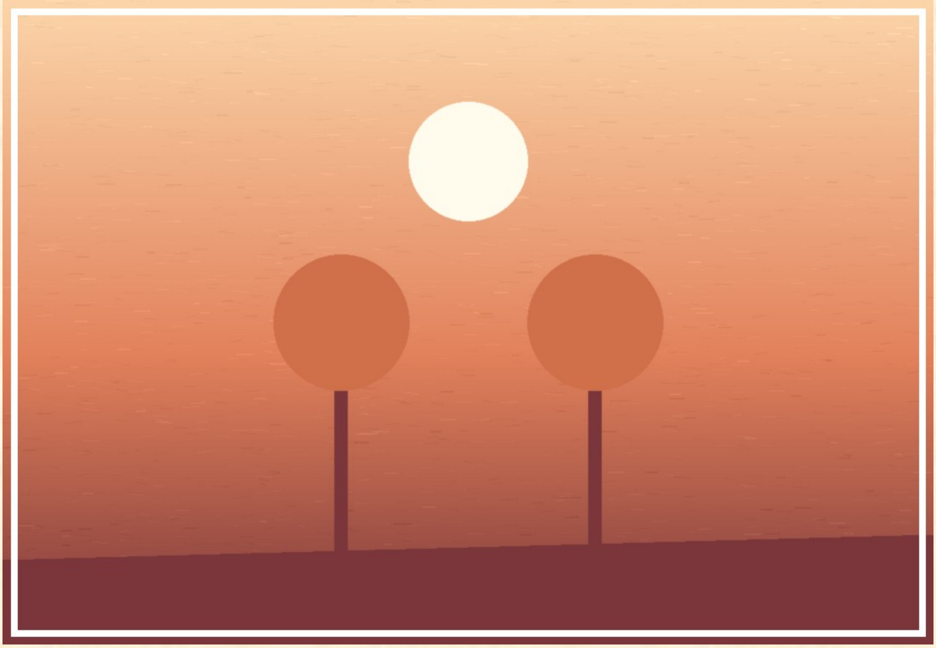

चित्र 20

आस्थाक हाथसँ बिस्कुट छुटि गेल। त' एहि लेल आठ महादेशक धोधरि! एहि लेल 'एहने तेज लोकक आवश्यकता'! ई परीलोक अतिथिकेँ नहि — अतिथिक सपनाकेँ बजबैत अछि।

मम्बा अपन भारी सिसकारीबला अबाजमे पुछलक, 'आर की-की अनने छी आस्था, आ कतऽ-कतऽ रखने छी?' आस्था मोन पाड़ैत बाजलि, 'हँ... हम हेलीकॉप्टर अनने रही, आ ओकरा ओइपार लऽ गेल रही।' 'ओइपार? माने महारक ओइपार?' 'हँ।'

सातो गोटे एक-दोसराक मुँह ताकऽ लागल। आ कूकाबुरा — जे कनी काल पहिने धरि खी-खी हँसैत छल — पहिल बेर चिन्तित आ गम्भीर देखा पड़ल। 'जल्दी चलू आस्था! महारक ओइपार जल्दी चलू! ओ एकाधटा गाछ जे चलब सीखि लेने अछि, से ऐ हेलीकॉप्टर संगे किछु अनहोनी नहि कऽ दिअए!' — कूकाबुरा हँसिते रहैए; मुदा जखन ओ गम्भीर होइए, तखन बुझू जे साँचे कोनो आफद आबऽ बला छै।

अध्याय ११ : हजार किलोमीटरक दौड़

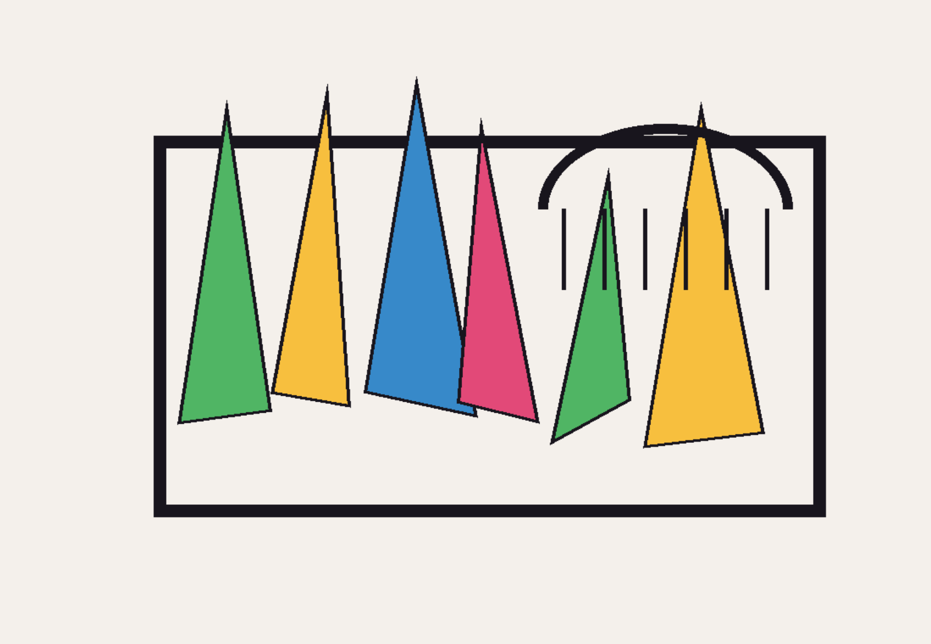

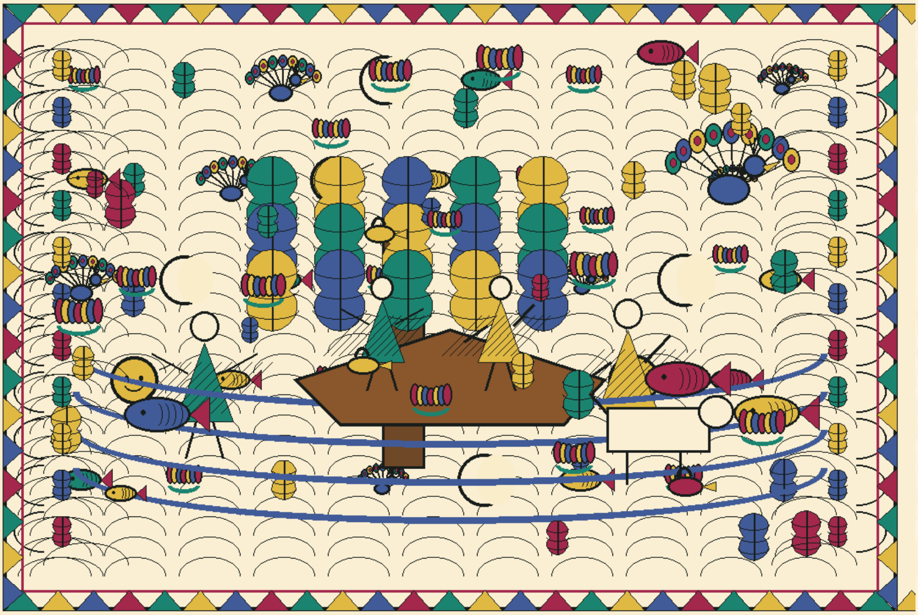

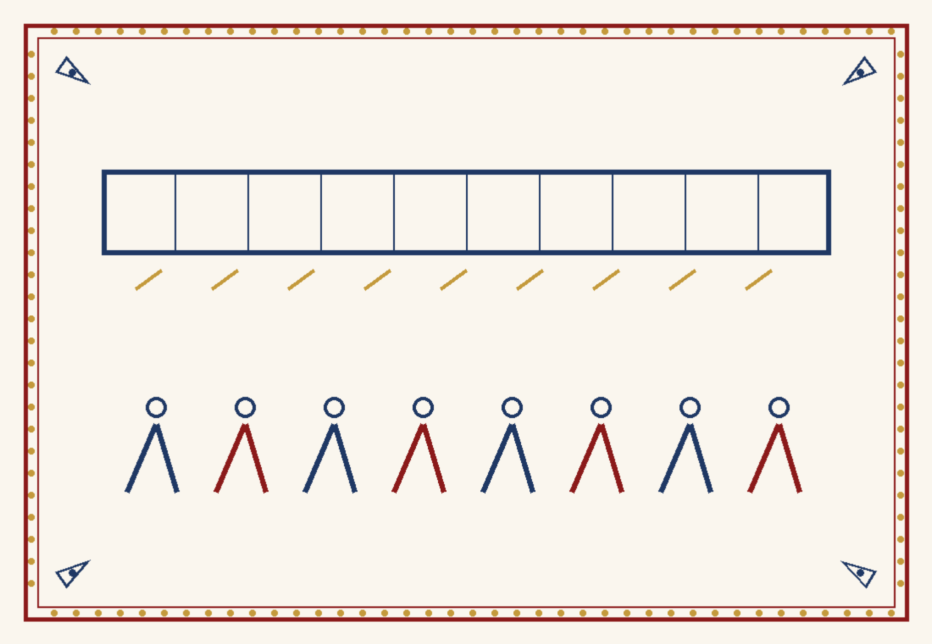

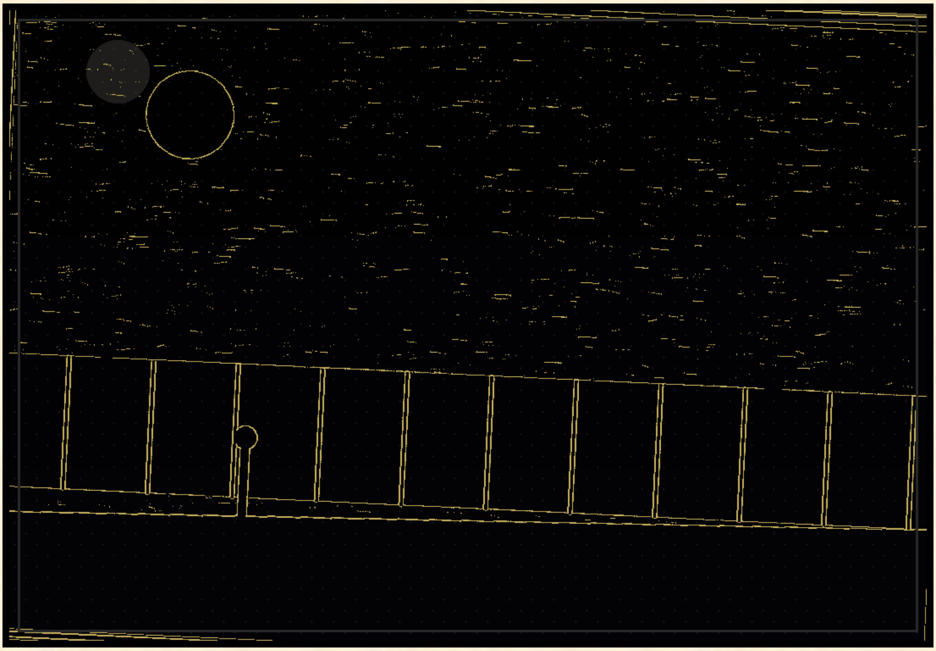

चित्र 21

स्वागत-कक्षसँ बाहर अबिते एकटा बाइपास सन सड़कपर आठो गोटे दौगल। आस्थाकेँ लगलै जे सभक गति हजार किलोमीटर प्रति घण्टा त' हेबे करतै — जखन चलब सए किलोमीटर छल, त' दौगब हजार, हिसाब ठीके छल। बगलमे परीलोकक कियारी सभ रंगक धार बनि पाछाँ छुटैत गेल।

दौगैत-दौगैत आस्थाक मोनमे प्रश्न सेहो दौगि रहल छल: चलैत गाछ हेलीकॉप्टरसँ की करत? ओ दुष्ट अछि आकि खाली उत्सुक — जेना ओ अपने? आ ई सभ ओकरे किएक रोकत, जे अपने एहि लोकसँ पड़ाएल अछि?

एक घण्टाक बाद कूकाबुरा अकासमे ऊपर माथे कूदल — गति कम करबाक संकेत। सभ धीमा भेल, दौगब झटकारि कऽ चलबामे बदलल, झटकारि कऽ चलब सहज चालिमे। आ सोझाँ — उत्तरबरिया महार। ऊँच, धूसर, अन्तहीन। एक कात सात रंगक जगमग लोक, दोसर कात... चुप्पी।

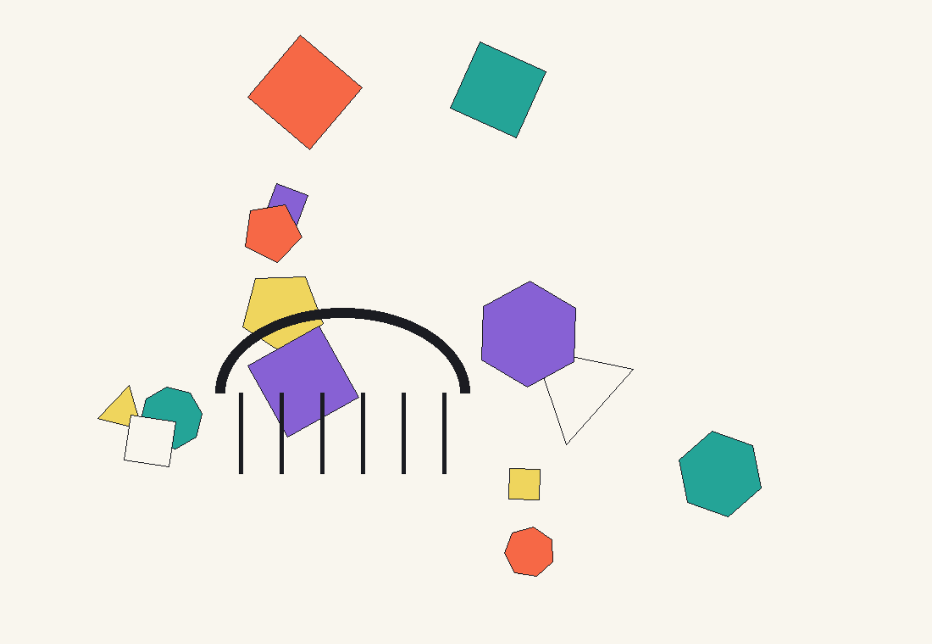

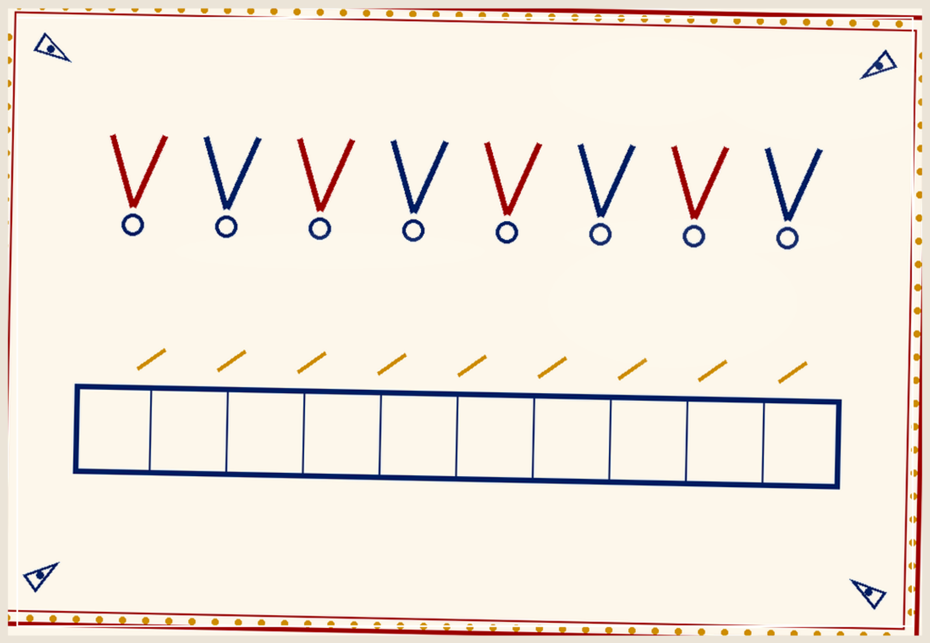

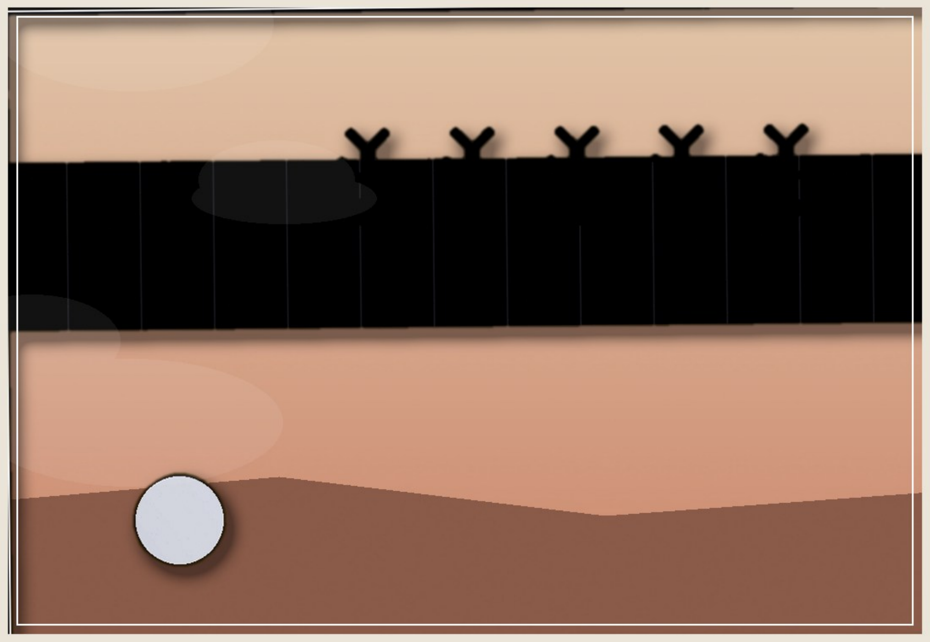

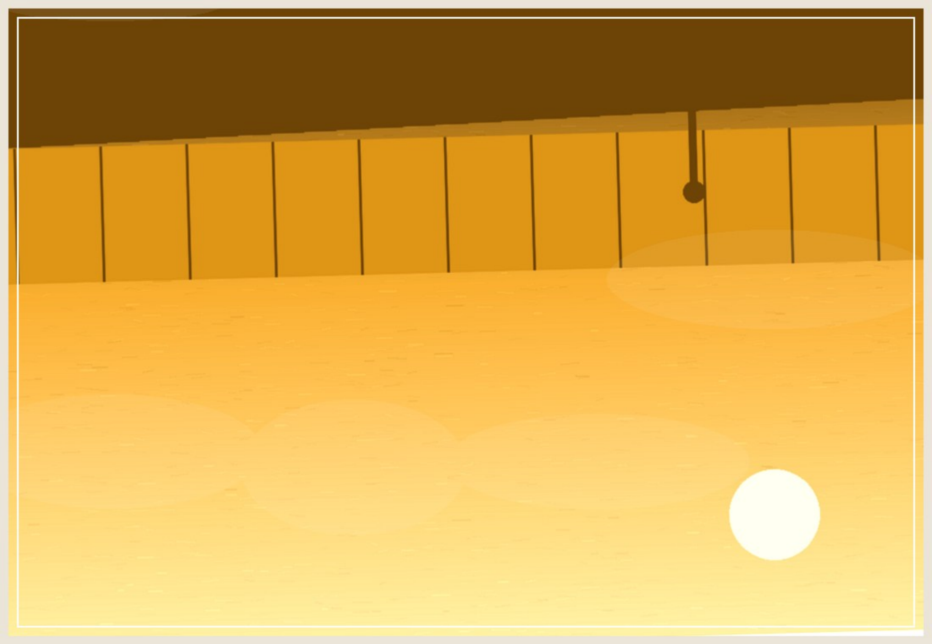

चित्र 22

'ओइपार जाएब कोना?' आस्था पुछलक। आ सातो गोटे एक्के संगे हँसि पड़ल। एस्कीमो कहलक, 'टुराकोस भटरङ कियारीक वैज्ञानिक लग रहैए, मम्बा असमानी सैन्य विभागमे, हम नील स्कूलमे, तितली हरियर वनस्पति-प्रयोगशालामे, टिकुली पीयर अस्पतालमे, कूकाबुरा संतोला प्रयोगशालामे, पेंग्यूइन लाल पाँतीमे। ओइपार गेनाइ हमरा सभकेँ सिखाओल गेल अछि।'

आ सभ अपन-अपन काज कहलक: तितली — 'ओइपार वनस्पति खतमे जकाँ छै; हम प्रयोग करब आ भागल वनस्पतिक गतिविधि नियन्त्रित करबाक प्रयास करब।' टुराकोस — 'हम हेलीकॉप्टर आ आन यन्त्रक तकनीक ओहि विलक्षण मुदा अस्थिर बुद्धिबला वनस्पतिक हाथ नहि जाए देब।' टिकुली — 'मालजाल, मनुक्ख आ परीमे ओकर लक्षण नहि पसरए, से हम देखब।' पेंग्यूइन — 'रानी हमरा लाल पाँतीमे संक्रमण-आक्रमण रोकबा लेल पठेने छथि। रानीसँ ककरो आइ धरि भेँट नहि भेल छै — मुदा संदेश आएल छल।'

रानीसँ ककरो आइ धरि भेँट नहि भेल छै। — ई वाक्य आस्थाक मोनमे काँट जकाँ गड़ि गेल। सभ रानीक आदेश मानैत अछि, रानीक नामे महार ठाढ़ अछि, रानीक नामे रेगिस्तान बनल — आ रानीकेँ देखने केओ नहि अछि?

अध्याय १२ : तरहरिमे तरहरि

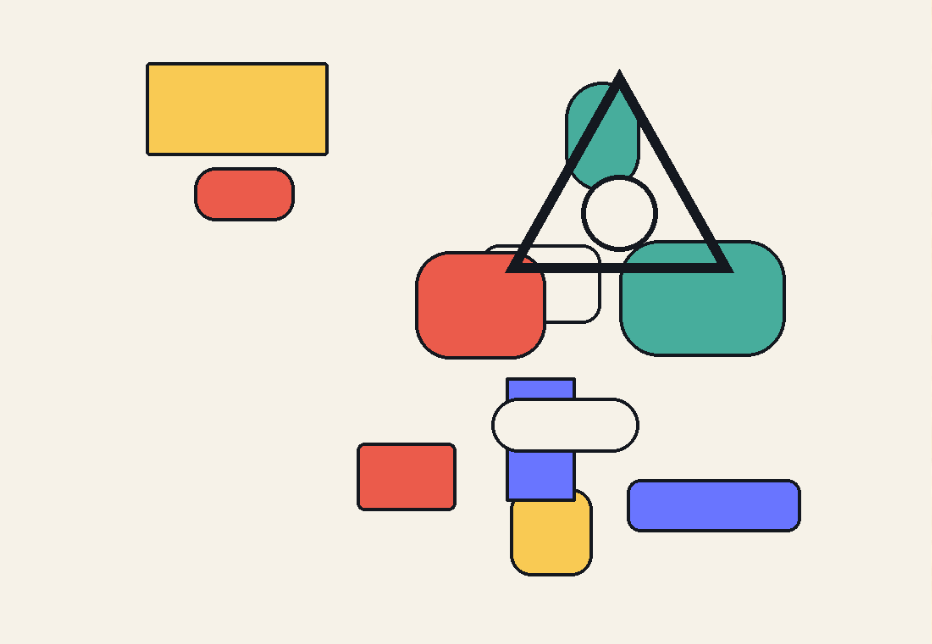

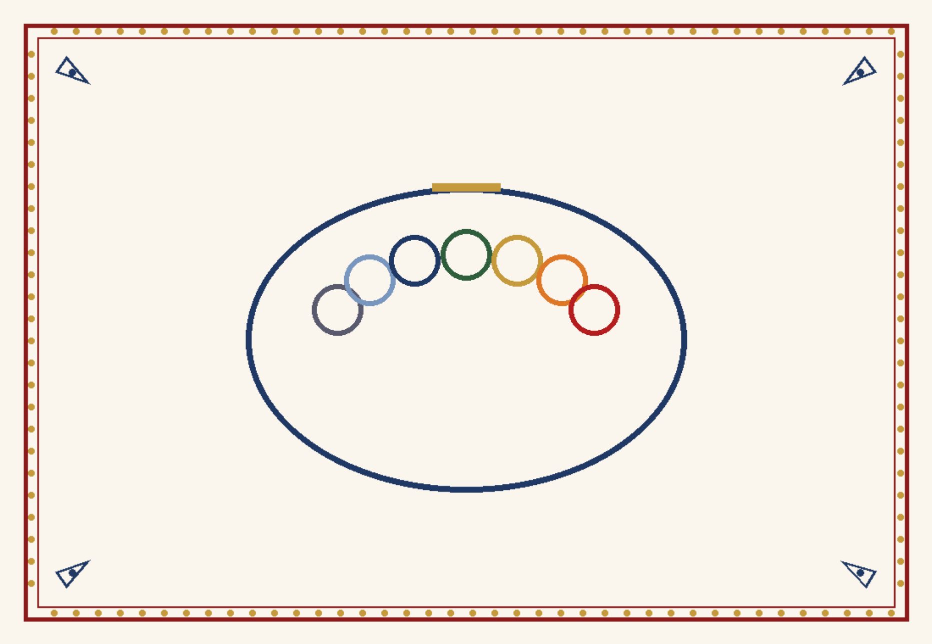

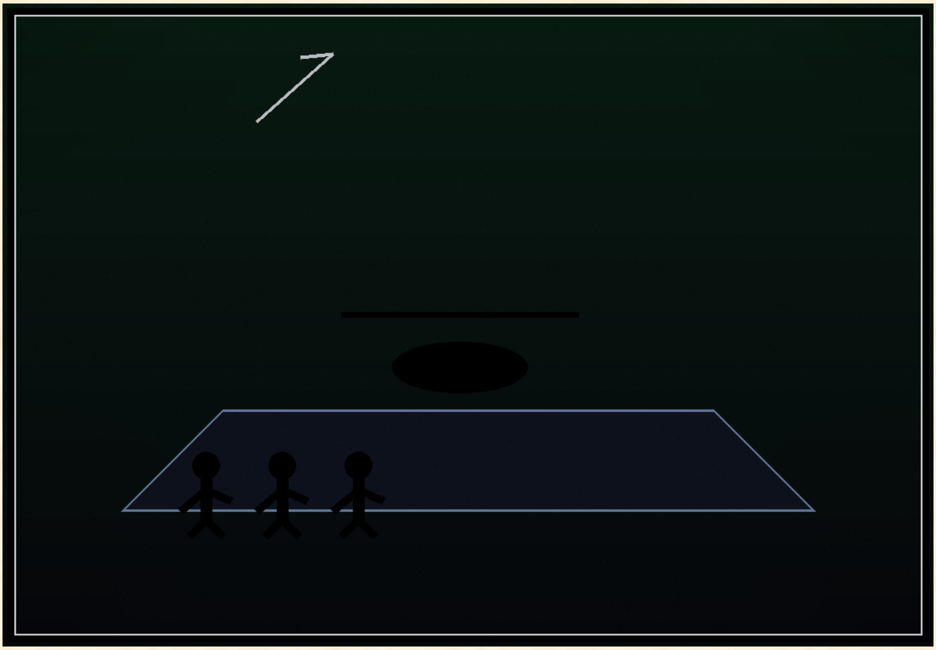

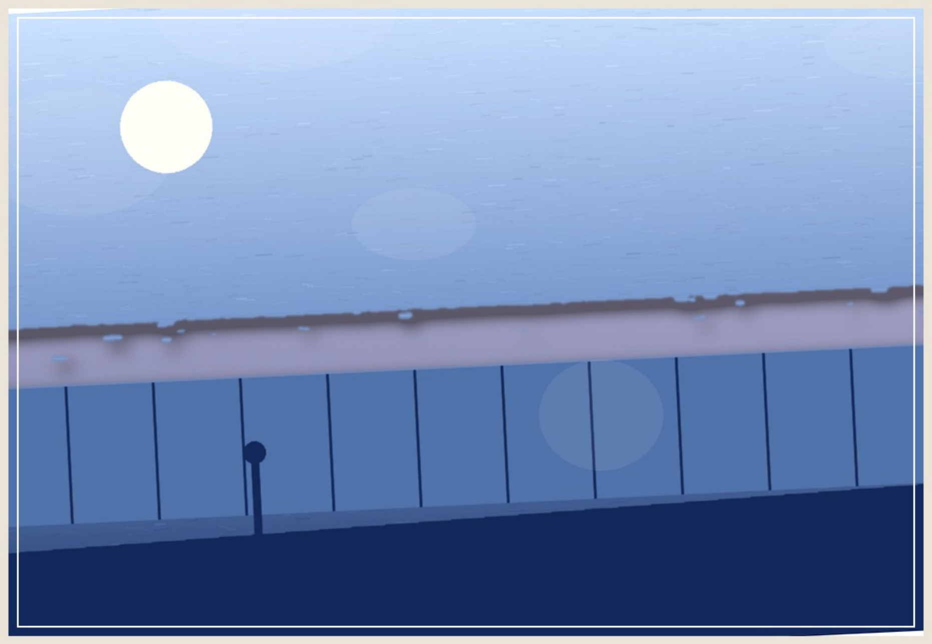

चित्र 23

टुराकोस आगाँ बढ़ल आ महारक जड़िमे एकटा गुप्त तरहरिक द्वार लग ठाढ़ भेल। एकटा पैघ शिलाकेँ ओ कंगुरिया आंगुरसँ उठा देलक — एहि लोकमे भार सेहो खेल छल। आ नीचाँ जे देखेलै, से देखि आस्था आश्चर्यमे पड़ि गेलि — 'तरहरिमे तरहरि!'

तरहरिमे ठीके सातटा तरहरि छलै — सात रंगक सात गुप्त दरबज्जा। टुराकोस भटरङ्गमे गेल, मम्बा असमानीमे, एस्कीमो नीलमे, तितली हरियरमे, टिकुली पीयरमे, कूकाबुरा संतोलामे। पेंग्यूइन आस्थाकेँ इशारा केलक आ दुनू लाल तरहरिमे उतरल।

भीतर उतरैत पेंग्यूइन कहलक, 'जेना रतिचर रातिमे घुमैत अछि आ दिनमे चोन्हरा जाइए, तहिना महारक ओइपार जाइ लेल हमरा सभकेँ विशेष उपकरण चाही — तखने अन्हारमे देखि सकब, आ ओहि चलैबला वनस्पतिक दिमागमे पैसि कऽ बुझि सकब जे ओ हेलीकॉप्टरसँ की-की करऽ चाहैत अछि।'

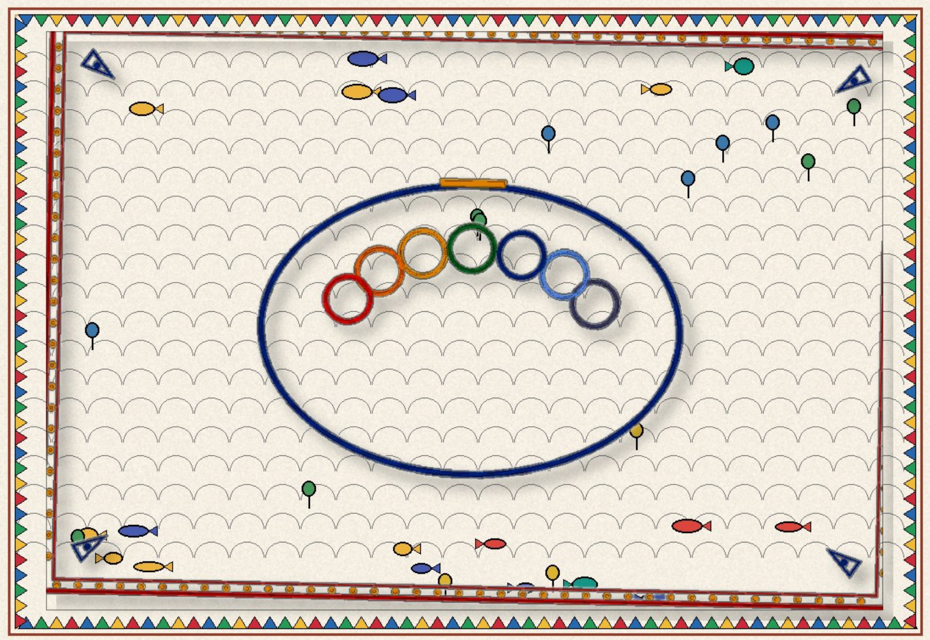

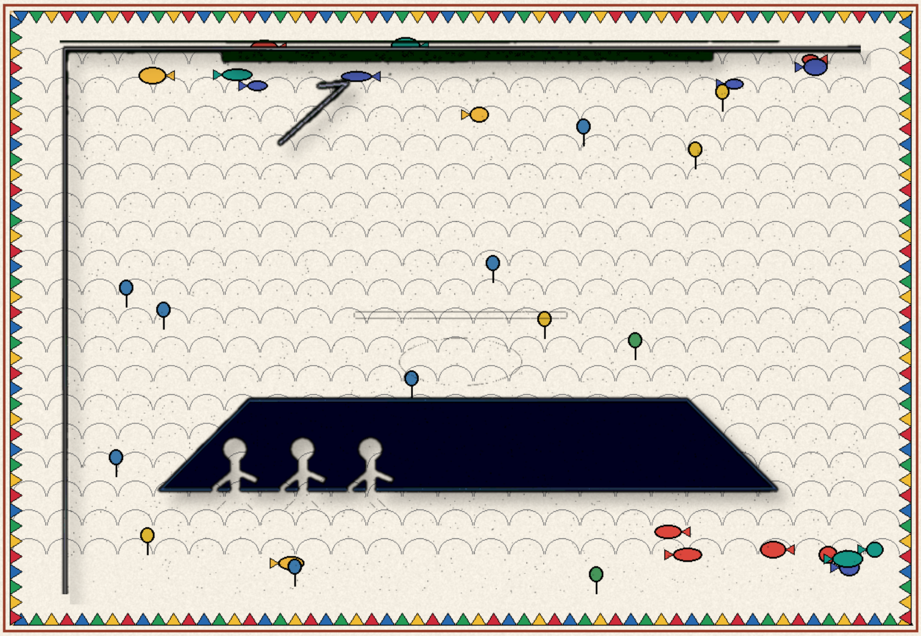

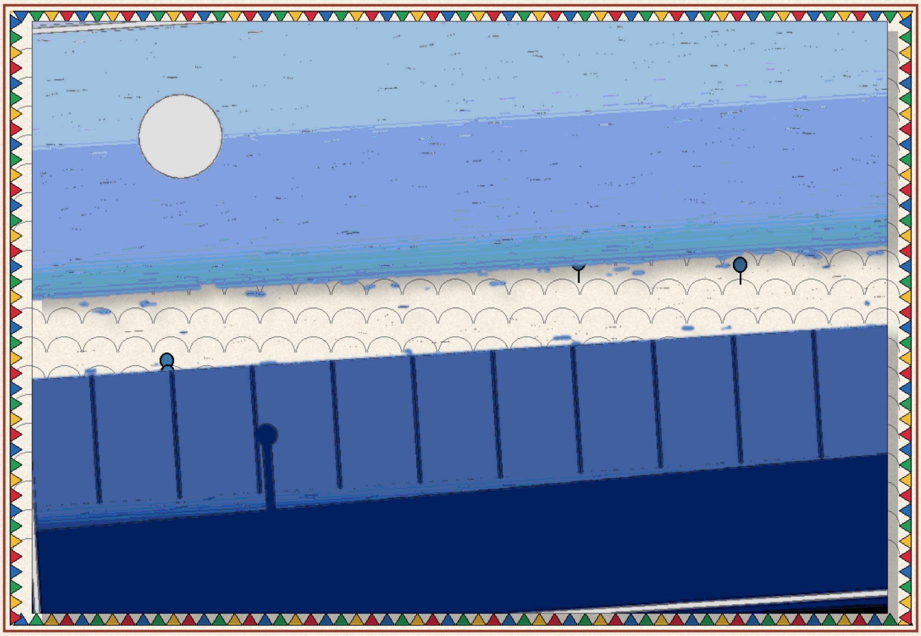

चित्र 24

आस्था आ पेंग्यूइन विशेष पोशाक आ सुरक्षा-उपकरण पहिरि तरहरिक गुप्त मार्गसँ बहराइ गेलाह; ओम्हर छहो गोटे अपन-अपन रंगक दरबज्जासँ। आ सोझाँ जे छल — से एहि यात्राक सभसँ भारी दृश्य छल।

महारक ओइपारक अन्हारमे सभ किछु खाली-खाली छल। ने रंग, ने पात, ने आवाज। जतऽ धरि आँखि (आब विशेष उपकरणबला आँखि) जाइत छल — रेत, आ रेतक ऊपर पसरल एकटा पुरान चुप्पी। एक्कहि लोकक दू मुँह: एम्हर पनिसोखाक पाँती, ओम्हर फेकल गेल कूड़ाक ढेरी। आस्थाक करेज पहिल बेर एहि परीलोक लेल नहि, एहि रेगिस्तान लेल दुखेलै।

अध्याय १३ : अन्हारमे खोज

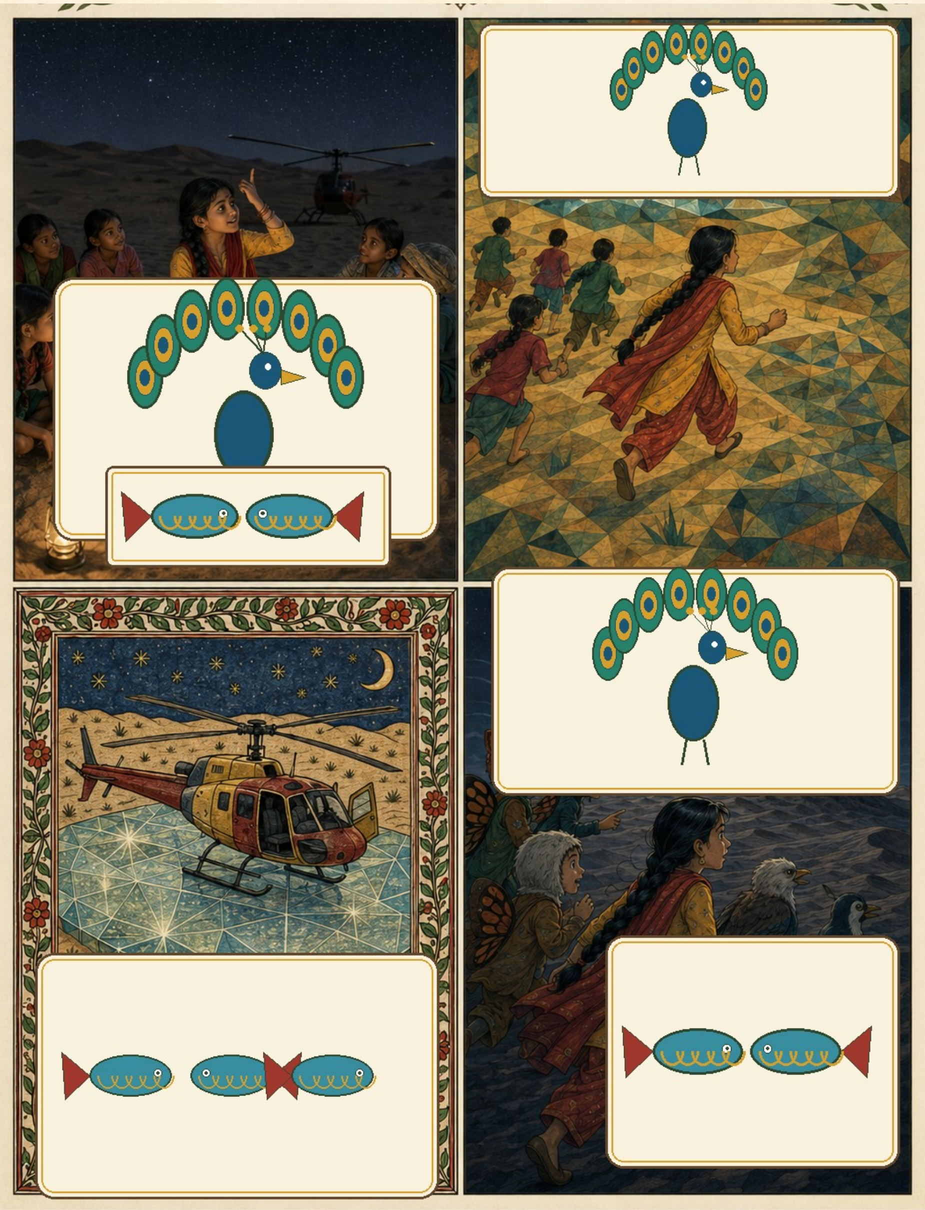

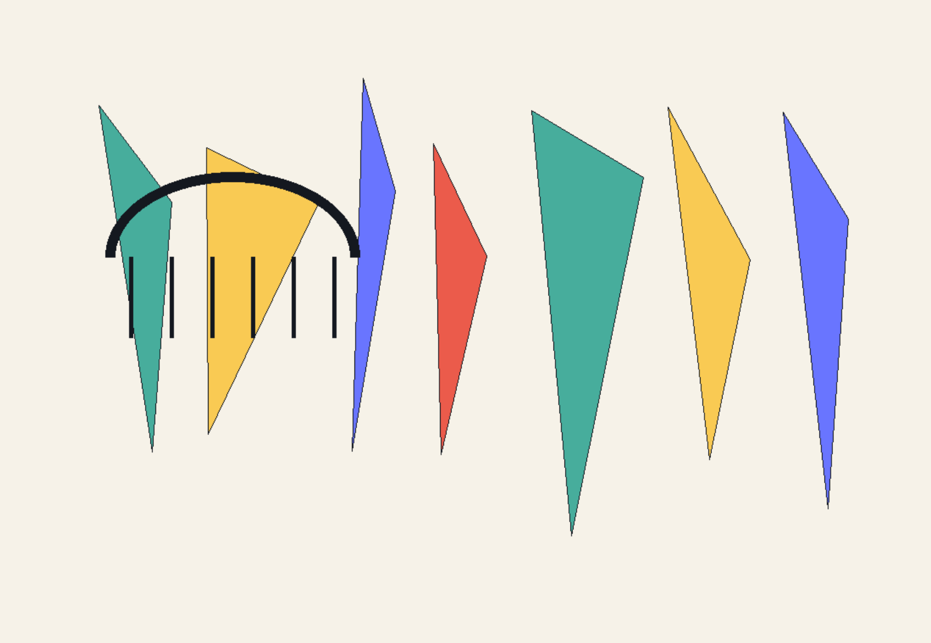

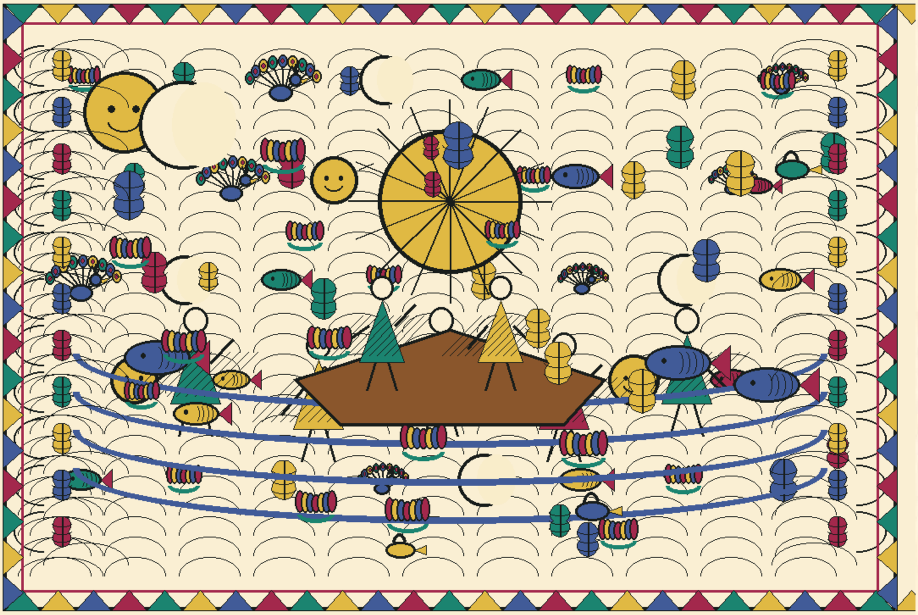

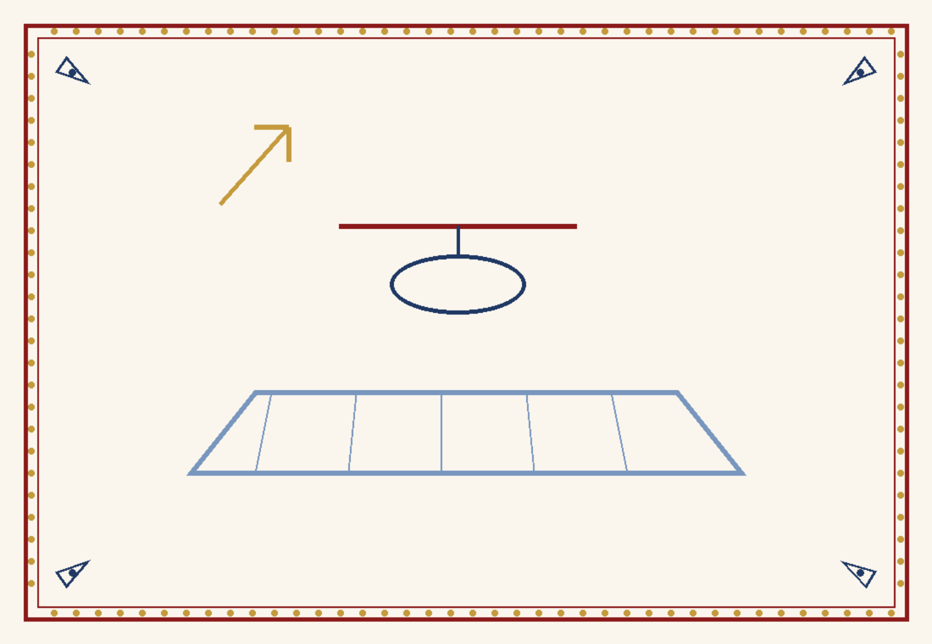

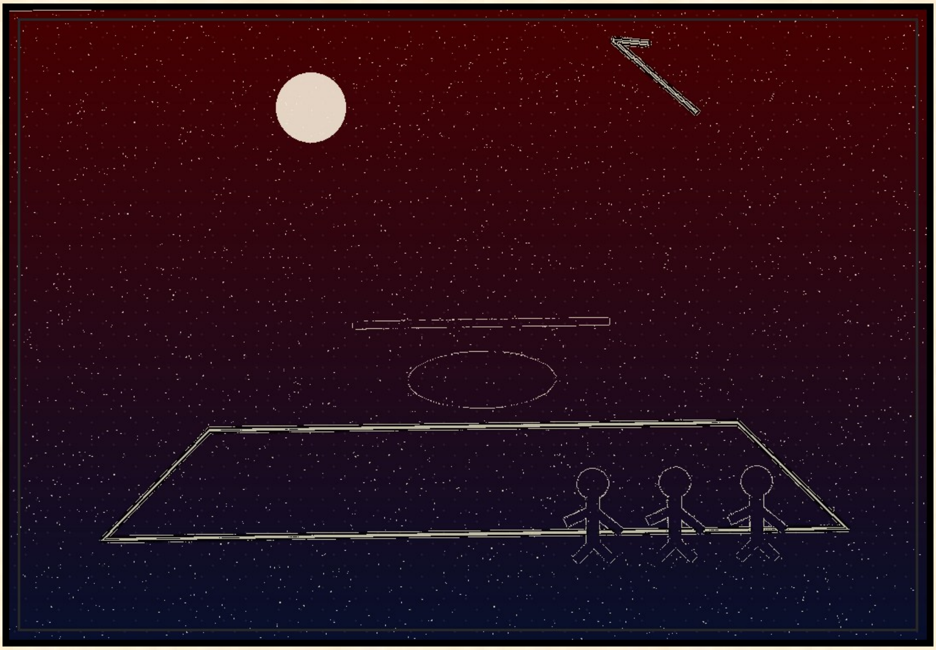

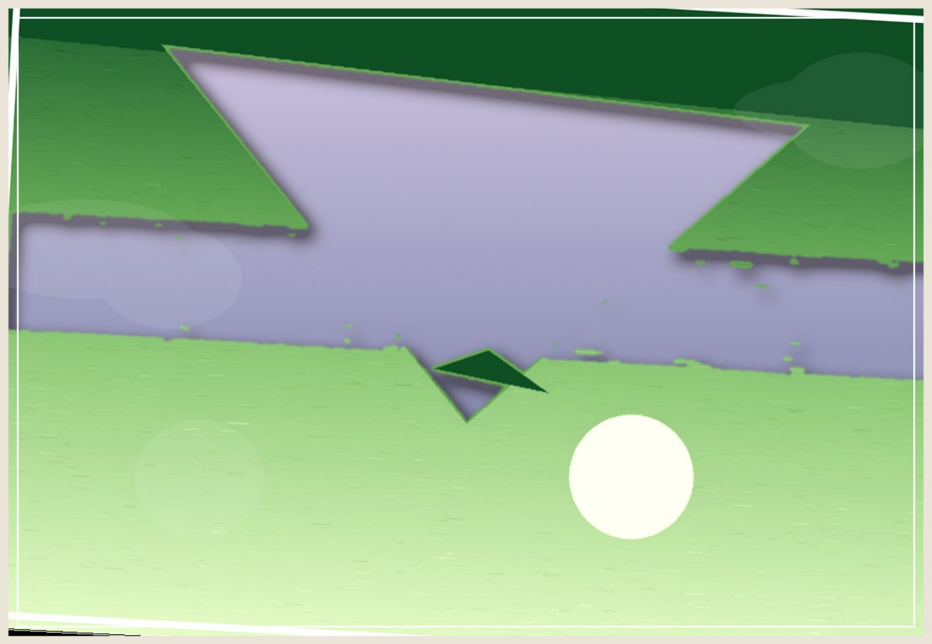

चित्र 25

टुराकोस कहलक, 'आस्था, हेलीकॉप्टरक तकनीकी जानकारी कने विस्तारसँ दिअ।' आ आस्था, दस बरखक इंजीनियर जकाँ, सभकेँ बुझौलक: 'ऐमे चढ़ै-उतरैबला सीढ़ी होइ छै। उतरै काल ई अपने संगक मजगूत ढाँचापर उतरैए — धबसँ खसितो नोकसान नहि। ई हवाई जहाजसँ किछु बातमे बेसी कारगर — विशेष इंजिन आ पंखाक मदतिसँ सोझे ऊपर उड़ैए, सोझे नीचाँ उतरैए, दौगए नहि पड़ै छै। आ ई एकटा विशेष ईंधनसँ चलैए।'

कूकाबुरा गम्भीर भेल, आ संगे सभ गम्भीर भेल। आस्था उत्तर-पूर्व दिस आंगुर देखबैत कहलक, 'सपनामे लागल रहए जे बिजलौका ओहि दिशामे खसल रहए — जतऽ रेत पघीलि कऽ शीसा बनि गेल छल।' 'तखन चलू,' कूकाबुरा बाजल, 'कारण जखन हम सभ हजार किलोमीटर प्रति घण्टा दौगि सकै छी, त' ई हेलीकॉप्टर एतऽ लाखो किलोमीटरक गतिसँ उड़त। ओ वनस्पति ओकर ईंधन, इंजिन, पंखा — सभक प्रतिरूप बना सकैए। चलू!'

आ 'चलू' सुनिते सभ दौगल। कएक घण्टा बीति गेल — सगरो रेते-रेत। सात घण्टाक बाद, ओहि अन्हारमे, एकटा चमकैत शीसाक प्लेटफॉर्म देखा पड़ल। आ ओतहि ठाढ़ — आस्थाक सपनाक हेलीकॉप्टर।

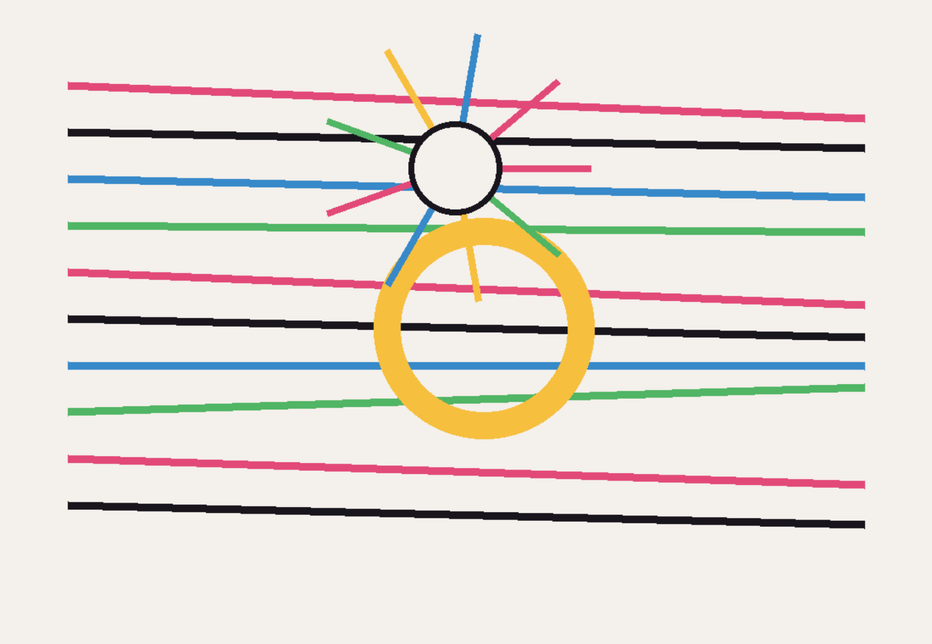

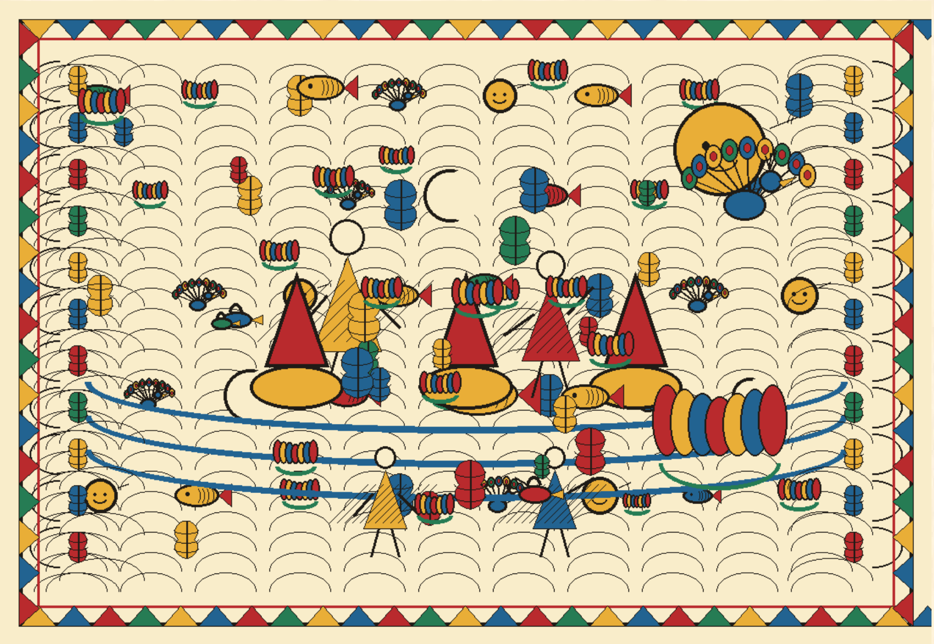

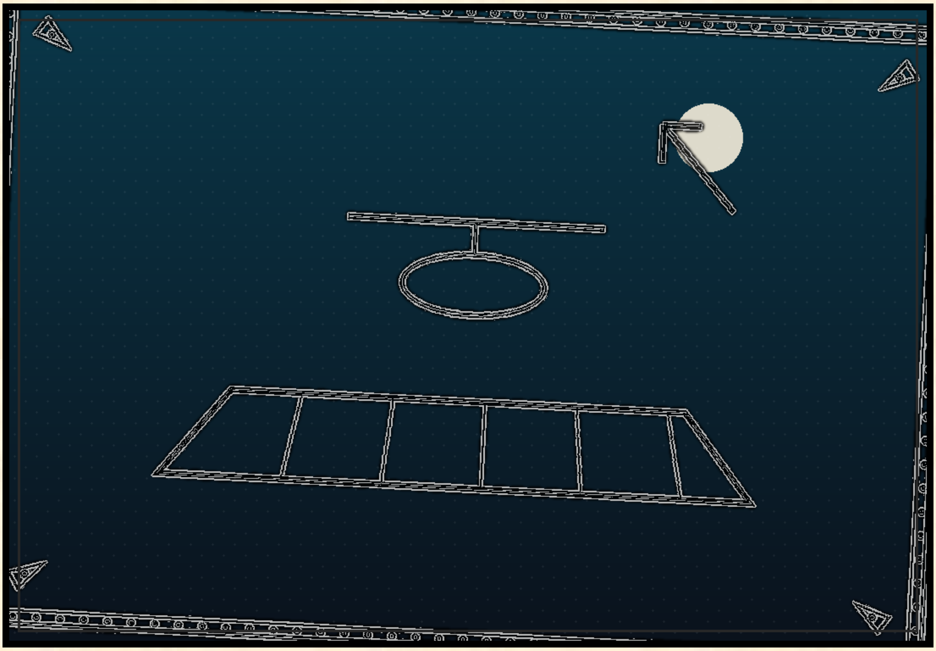

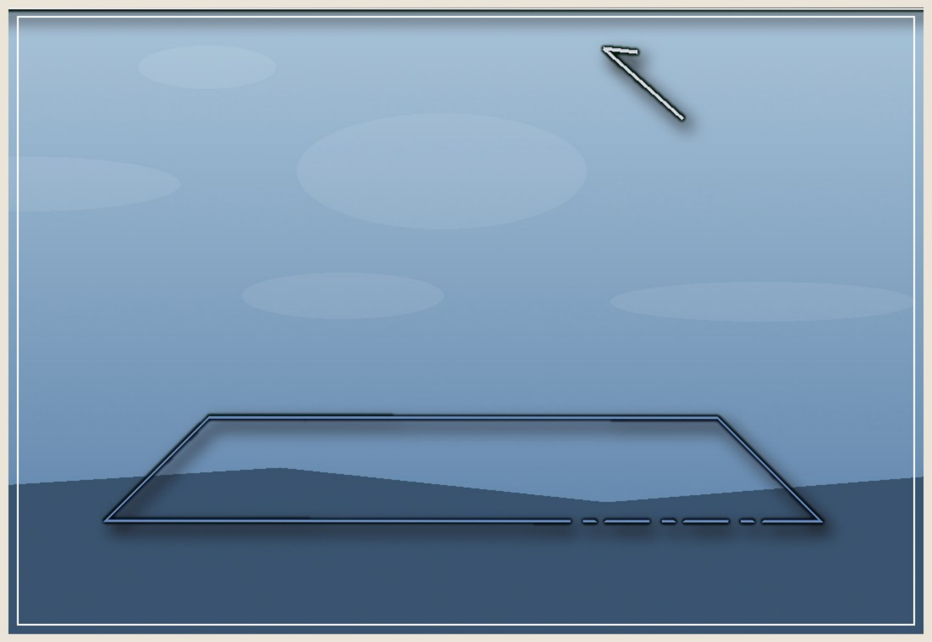

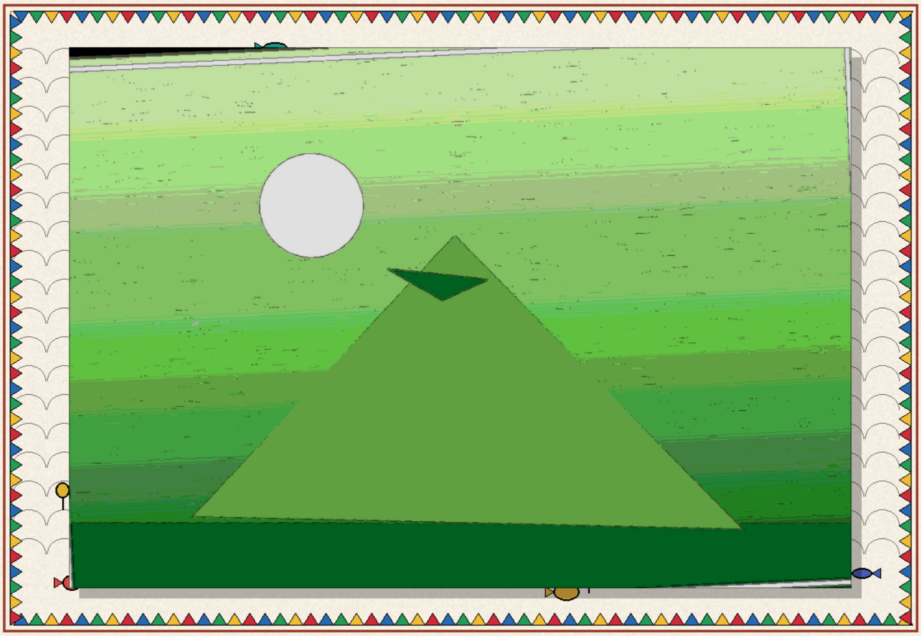

चित्र 26

मुदा लगमे पहुँचिते आस्थाक साँस अटकि गेल। 'ऐमे सँ उतरैबला ढाँचा गाएब अछि! सीढ़ी गाएब अछि! गेट खोलल गेल अछि — आ कियो ने कियो ऐ सभ समानक गहिंकी नजरिसँ निरीक्षण केलक अछि।' अन्हारमे केओ हुनका सभसँ पहिने पहुँचि गेल छल — आ ओ 'केओ' आब कतहु लगे मे छल।

तखने तितली आ टिकुली भनभनाइत आएल — 'एकटा ऊर्मि आबि रहल अछि, बालुक ऊपरसँ!' 'कोन दिशासँ?' 'उत्तर-पश्चिम!' सभ भागल, फेर तितली-टिकुलीक इशारापर ठाढ़ भेल। मरुस्थलक अवाज — कखनो डरौन, कखनो संगीतक सुर — आ ओही दुनूक बीच एकटा तेसर ध्वनि।

तितली बाजल, 'ह्वेलक पीठबला बालुक ढिमकापर सँ विभिन्न तरहक अबाज आबि रहल अछि। चलैबला वनस्पति ओतै अपन काज कऽ रहल हएत।' 'केम्हर अछि ओ ढिमका?' 'उत्तर-पूर्व।' आ सभ फेर दौगल — अन्हारक पेटमे, एकटा एहन जीवसँ भेँट करए जे गाछ छल मुदा गाछ नहि रहल।

अध्याय १४ : ह्वेलक पीठपर हरियरी

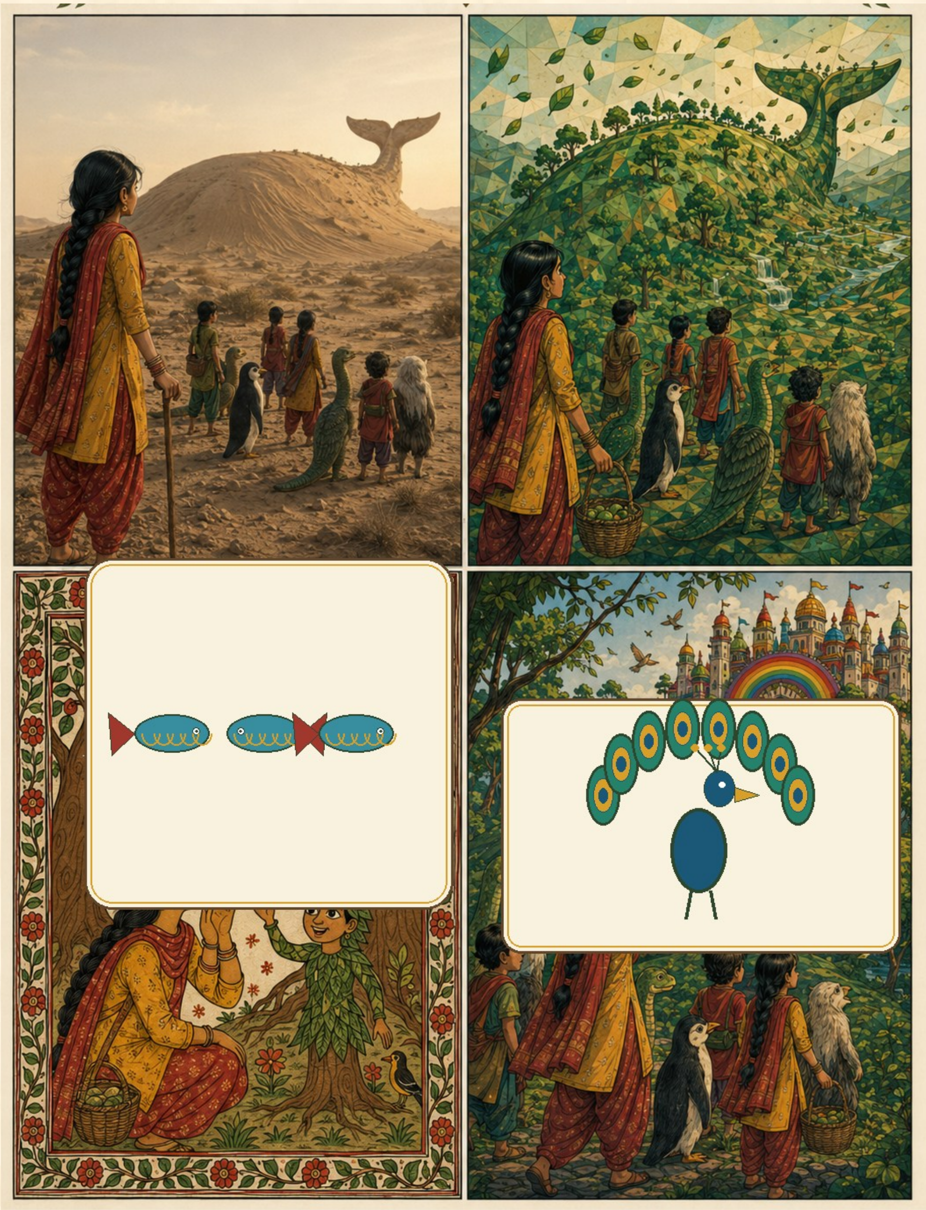

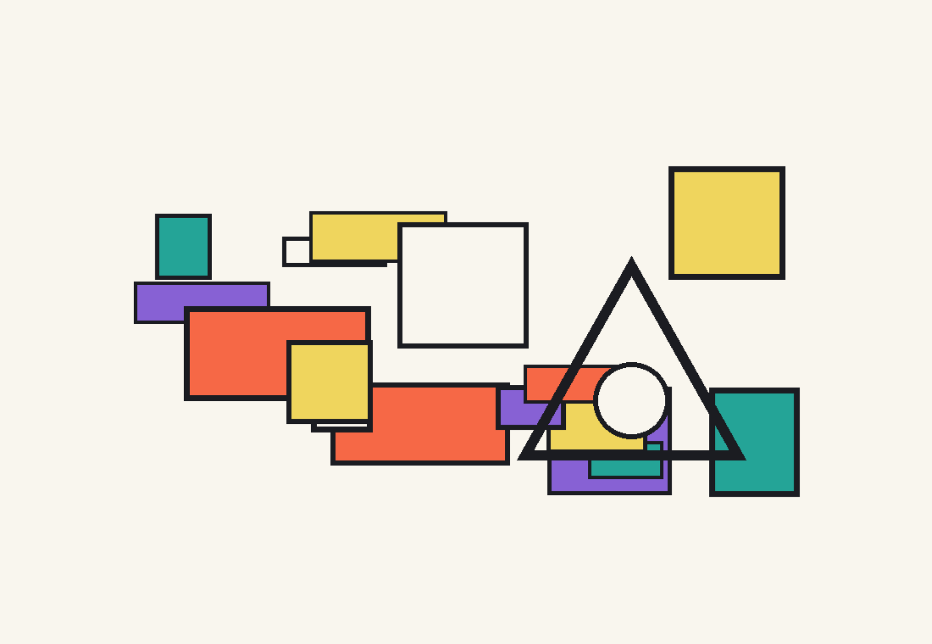

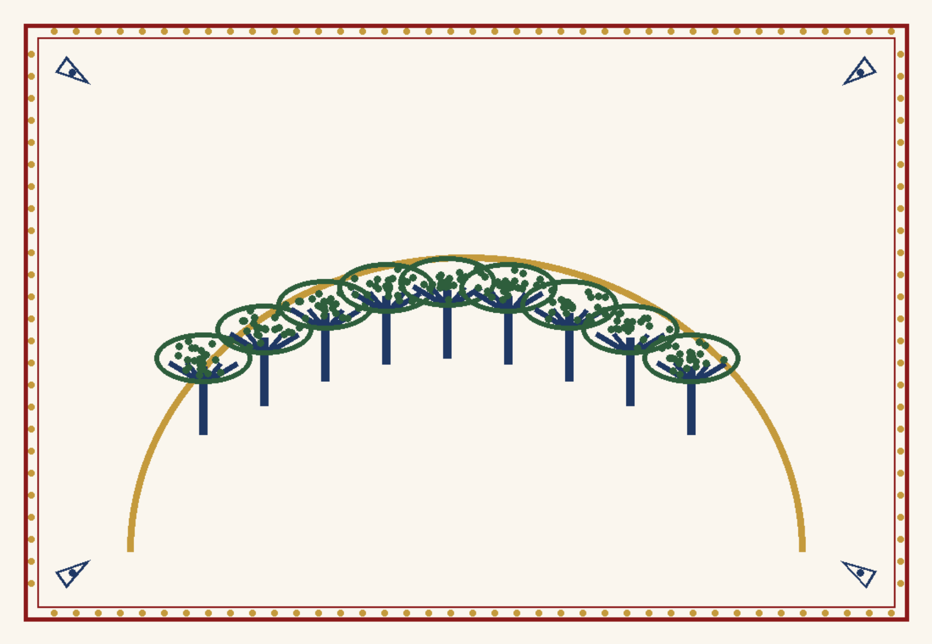

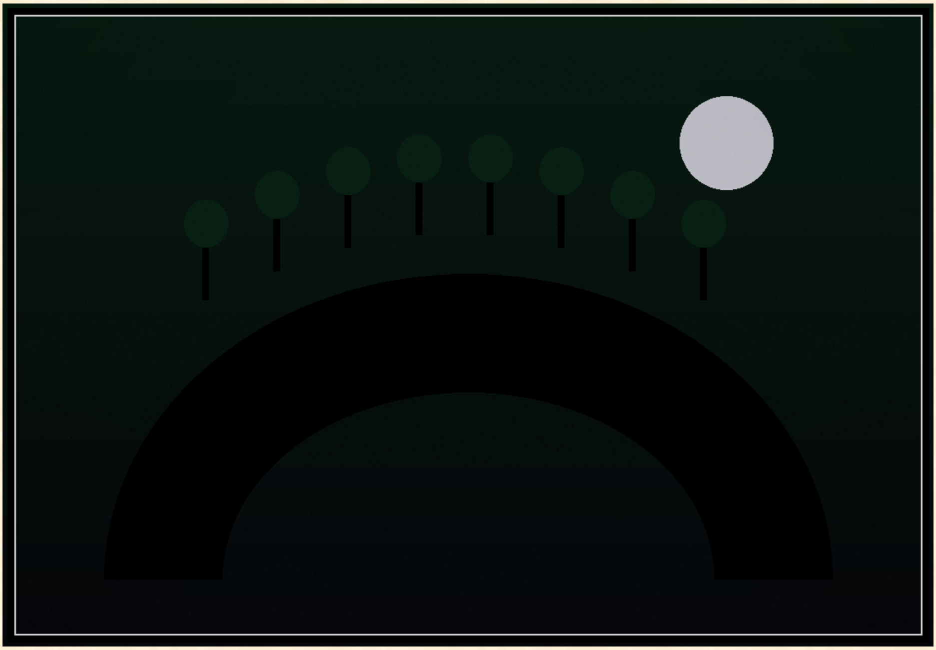

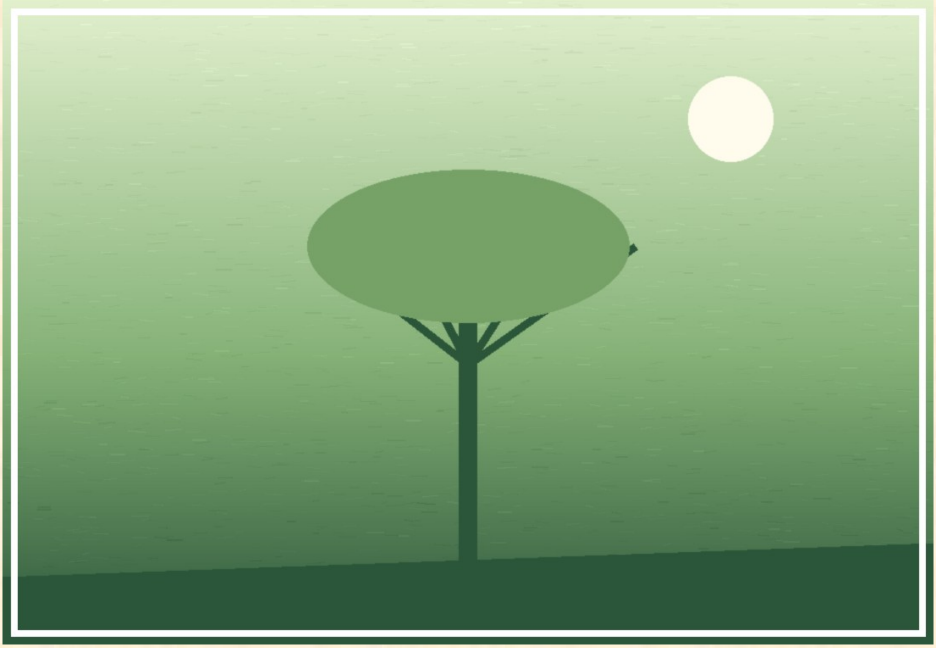

चित्र 27

सात-आठ घण्टाक बाद दूरे सँ ओ देखा पड़ल — ह्वेलक पीठ सन नमहर बालुक ढिमका। टुराकोस सचेत केलक, 'आब सम्हरि कऽ। एतऽ छोट-छोट ढिमका उड़लाक बाद ताल बनि जाइ छै — पएर धँसि सकैए।' 'दलदल जकाँ?' आस्था पुछलक। कूकाबुरा खी-खी हँसल, 'नै, तेहेन नै। ठेहुन भरि धँसब, प्रयाससँ पएर निकलि जाएत। खाली घबड़ेबाक नहि अछि।'

आ जखन ओ सभ ढिमकापर चढ़ल, त' जे देखलक तेकरा पर आँखिकेँ भरोस नहि भेल — रेगिस्तानक करेजमे, ह्वेलक पीठपर, गाछ-बृच्छ सभ चारू कात पसरल छल! हरियर, जीवित, पात हिलबैत। ओही अन्हार लोकमे, जतऽ रानीक आदेशसँ कूड़ा फेकैत छल, केओ बोन रोपि देने छल।

टुराकोस मद्धिम स्वरमे कहलक, 'चलैबला वनस्पतिक ई किरदानी अछि। किछु दिनमे ई गाछ सभ सेहो चलऽ लागत।' ओकर स्वरमे चेतौनी छल, मुदा आस्थाक आँखिमे किछु आर छल — ई 'किरदानी' त' रेगिस्तानकेँ घर बनएबाक किरदानी छल!

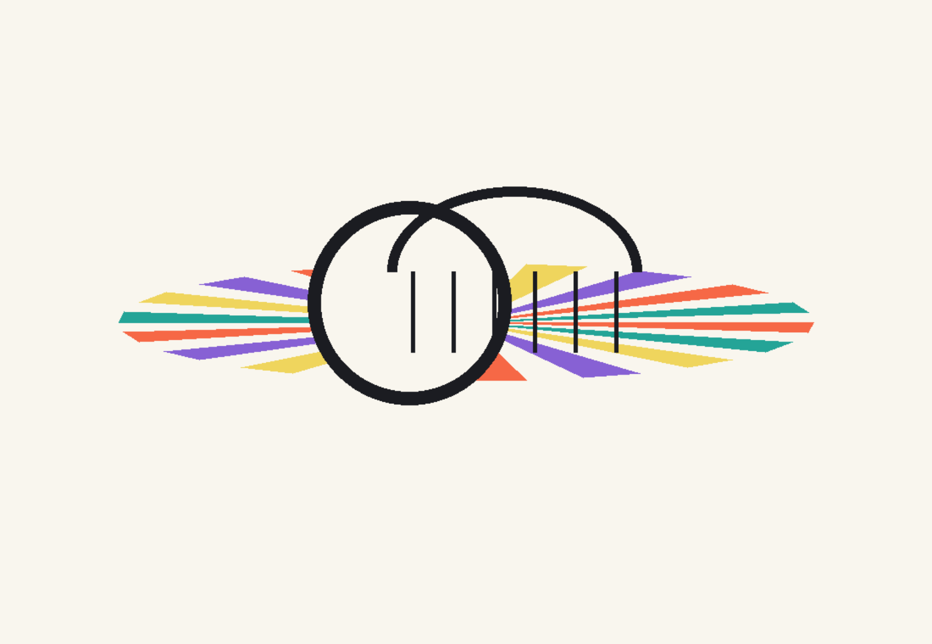

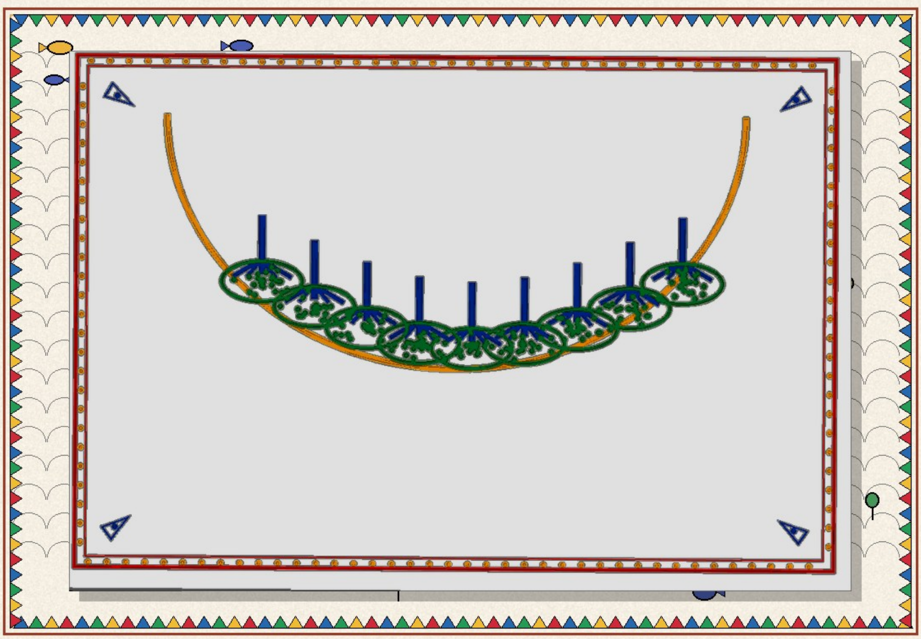

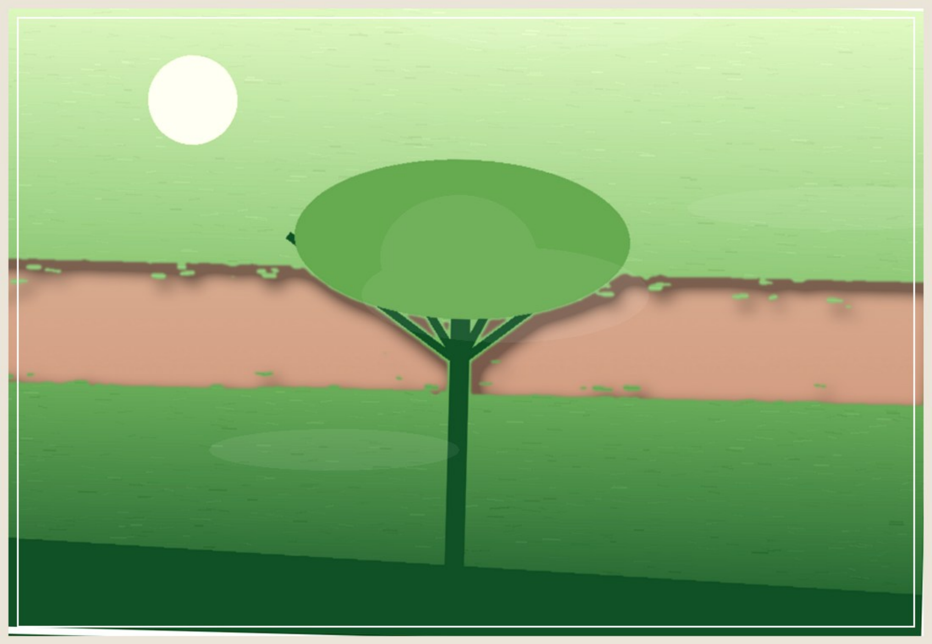

चित्र 28

तखने लग-पासक वनस्पति सभ आस्थाकेँ हाय-हेलो करऽ लगलै। आस्थाकेँ अपरतीब लगलै — महारक ओइपारक (माने परीलोकक) गाछक पात हिलितो नहि छल, आ एहि 'अन्हार लोक'क गाछ सभ त' बड्ड नीकसँ बाजैत अछि, पात हिलबैत अछि, अभिवादन करैत अछि!

आस्था एकटा गाछसँ पुछलक, 'चलैबला वनस्पति, जे महारक ओइपारसँ आएल छथि, से कतऽ छथि?' एकटा बच्चा-गाछ बाजल, 'ह्वेलक पीठक पुच्छी लग हुनकर महल छन्हि — सतरंगी महल, जतऽ पनिसोखा अकाससँ नीचाँ खसै छै। ओ हमर सभक राजा छथि।'

'ओतऽ गेनाइ ठीक हएत?' — सातो गोटे आस्थेसँ पुछलखिन्ह, जेना अनायासे ओ बच्ची एहि दलक नेता बनि गेल हो। आस्था उत्तर देलक, 'किए नै? जँ मित्रतासँ गप भऽ जाए, त' झगड़ाक कोन खगता?' आ आठो गोटे ह्वेलक पीठक ऊपरसँ होइत आगाँ बढ़ल — सतरंगी गेट दिस, जतऽ ढिमकाक पुच्छी नीचाँ जा कऽ खतम होइत छल।

अध्याय १५ : दुनू राजाक सत्य

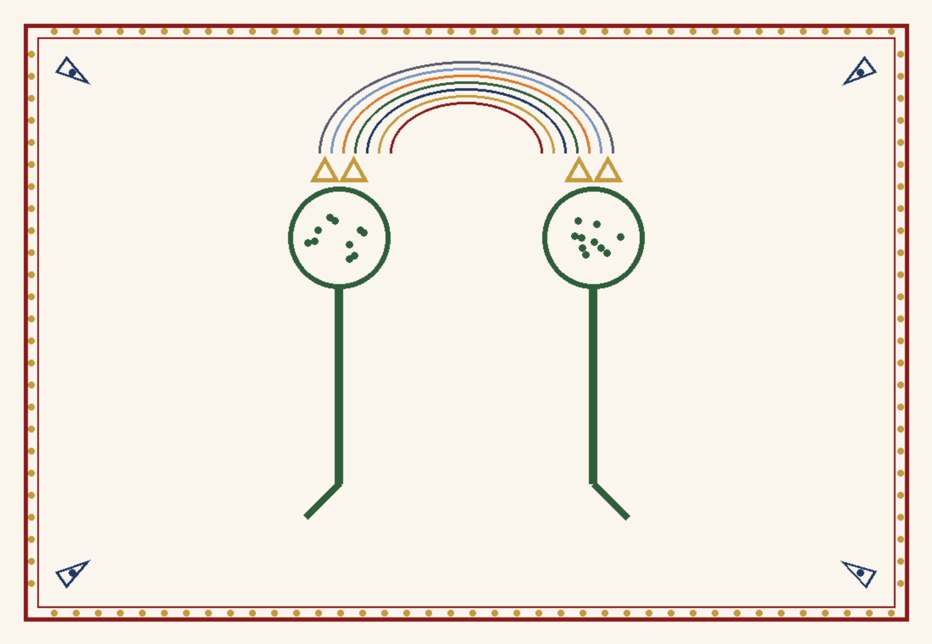

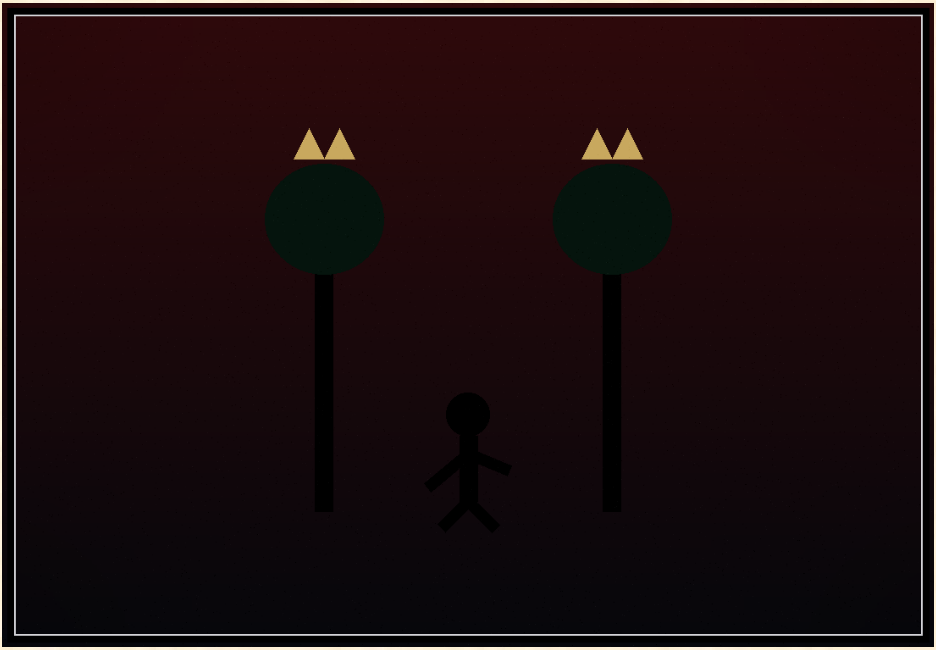

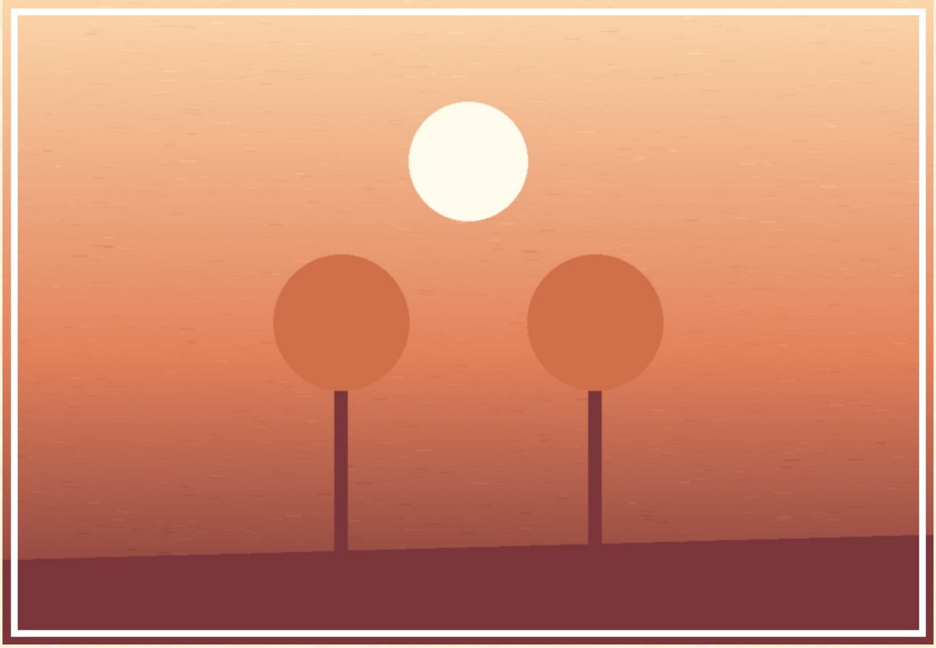

चित्र 29

सतरंगी दरबज्जा लग पहुँचिते कूकाबुरा खी-खी हँसए लागल — आ सभक मुँहपर एकटा अलौकिक प्रसन्नता आबि गेल। एहि पारक स्वागतमे कोनो रेकॉर्ड नहि छल, कोनो नम्बर नहि — एकटा चलैबला गाछक बच्चा आगाँ बढ़ि कऽ सभकेँ भीतर लऽ गेल। आस्थाकेँ लगलै जे एतऽ लोक हृदयसँ सोचि रहल अछि — मशीन नहि, हृदय काज कऽ रहल अछि।

स्वागत-कक्षमे आस्थाकेँ अपन सपनाक अनाओल खाइ-पीबैबला समान देखा पड़लै। आ तखने एकटा आओर अचरज — ओकरा लगलै जे ओ साँस लऽ पाबि रहल अछि! एतऽ हवा छल, भूख छल। ओ बिस्कुट खाए लागलि, आ पहिल बेर बुझेलै जे भूख लागब सेहो जीवित रहबाक एकटा सुख थिक।

खिड़कीसँ बाहर, बिजलौकासँ पघिलल शीसाक बड़का मैदानमे, ओहने छोट-छोट हेलीकॉप्टर उड़ैत-उतरैत देखा पड़ल — चलैबला वनस्पति पायलट सभ ओकरा चला रहल छल। आस्थाक तकनीक एतऽ पहुँचि गेल छल — मुदा हथियार बनि कऽ नहि, पाँखि बनि कऽ।

तखने सूचना भेटल — 'दुनू राजा अहाँसँ भेँट करए आबि रहल छथि।' दुनू राजा एलाह — दुनू वनस्पति, सोचैबला-चलैबला। आस्था सोझे प्रश्न केलक, 'की अहाँ परीलोकक रानीकेँ खतम करैबला छी? परीलोककेँ नष्ट करैबला छी?'

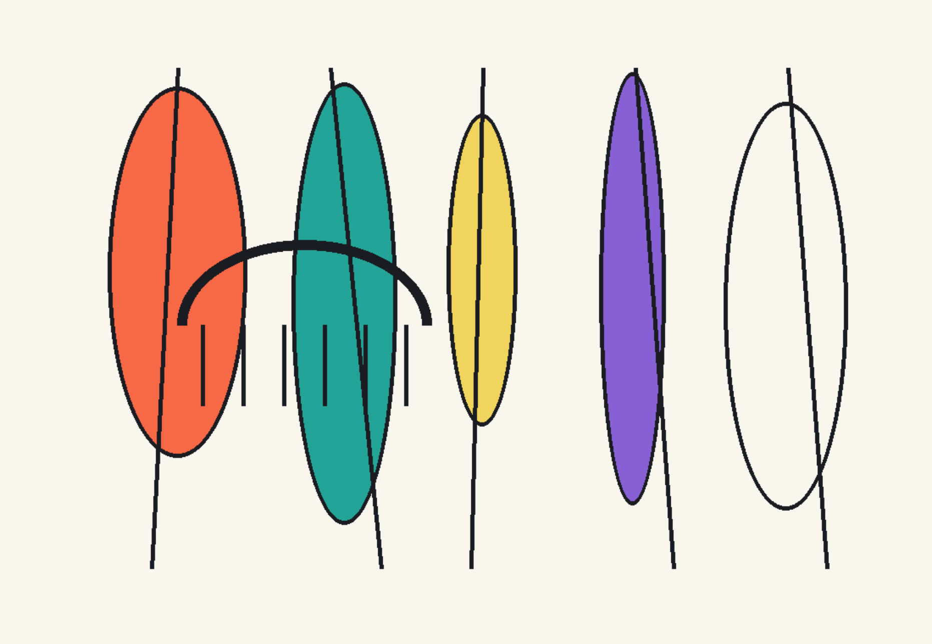

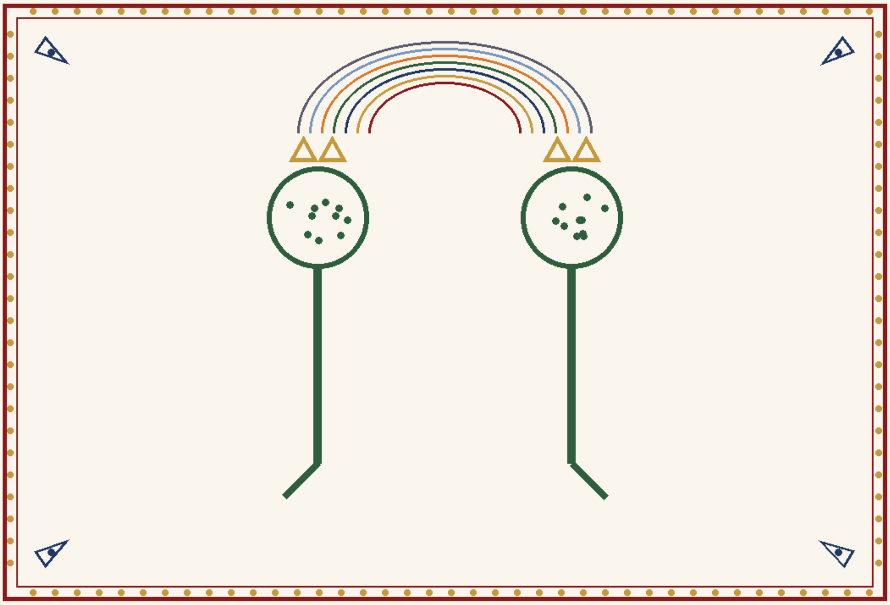

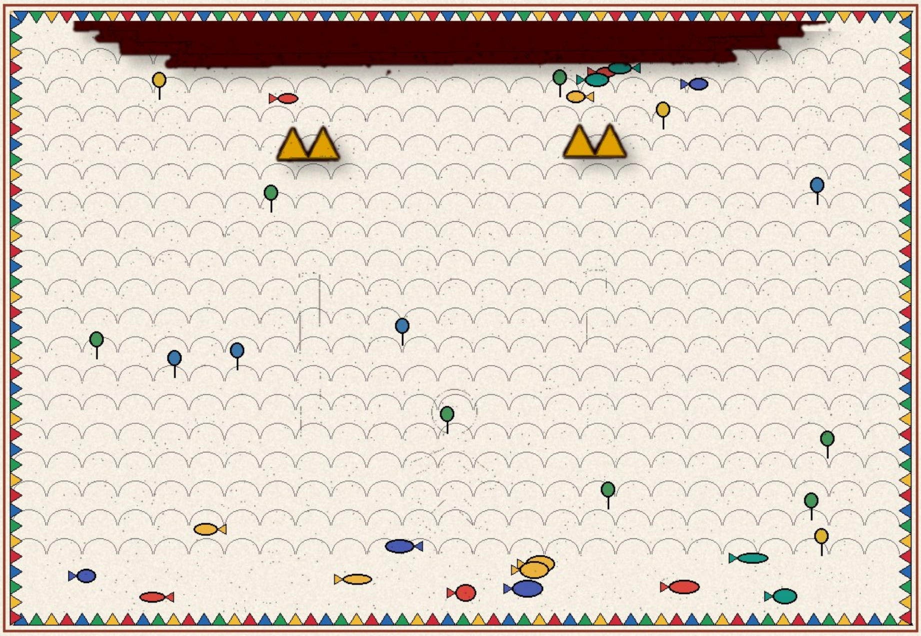

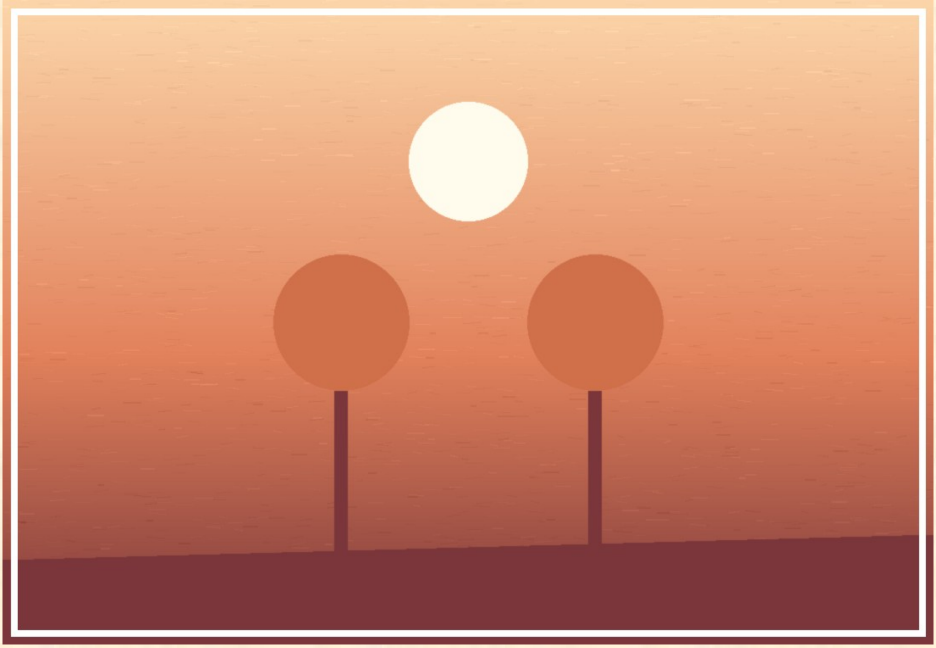

चित्र 30

दुनू राजा शान्त स्वरमे जे कहलनि, से आस्थाक पएर तरक जमीन घुसका देलक — 'कोनो परीलोक नहि छै, आ नहियेे कोनो रानी ओतऽ छै। की अहाँकेँ रानीसँ भेँट कराओल गेल छल?' आस्था बाजलि, 'नै... से त' नहि कराओल गेल छल।'

'ओतऽ किछु विक्षिप्त वैज्ञानिक सभक राज भऽ गेल छै। हमरा पता चलल, तँ हम महारक ऐपार आबि गेलहुँ। एहि कात ओ सभ माहुर सन पदार्थक अवशेष फेकै छथि, आ ई क्षेत्र रेगिस्तान बनि गेल। मुदा हमर सभक ठाढ़िसँ आब जीवन पसरि रहल अछि। अहाँ लड़ाइ नहि, वार्ता चुनलहुँ — से हम दूर-संचालित कैमरासँ देखि रहल छलहुँ। ई त' समानान्तर सुधार-गृह मात्र अछि।' — आ कनी कालमे दुनू राजा चलि गेलाह, जेना साँच कहि कऽ केओ भार उतारि दैत अछि।

आस्था बहुत काल धरि चुप बैसलि रहलि। त' जकरा ओ परीलोक बुझने छलि, से छद्म छल — बिनु रानीक राज, बिनु हवाक हरियरी, बिनु नामक नागरिक। आ जकरा सँ सभ 'अन्हार लोक' कहि डेराइत छल, ओतऽ साँस छल, भूख छल, हृदय छल। भुतहा के — गाछी आकि लोकक आँखि? आस्थाक आँखिसँ दूटा नोर खसल — अपना लेल नहि, ओहि सभ लेल जे ओम्हर नम्बर बनि कऽ रहि गेल छल: वनसप्तो ९९९९५७४५, आ ओकर बादबला, आ ओकर बादबला।

अध्याय १६ : अन्तिम सपना

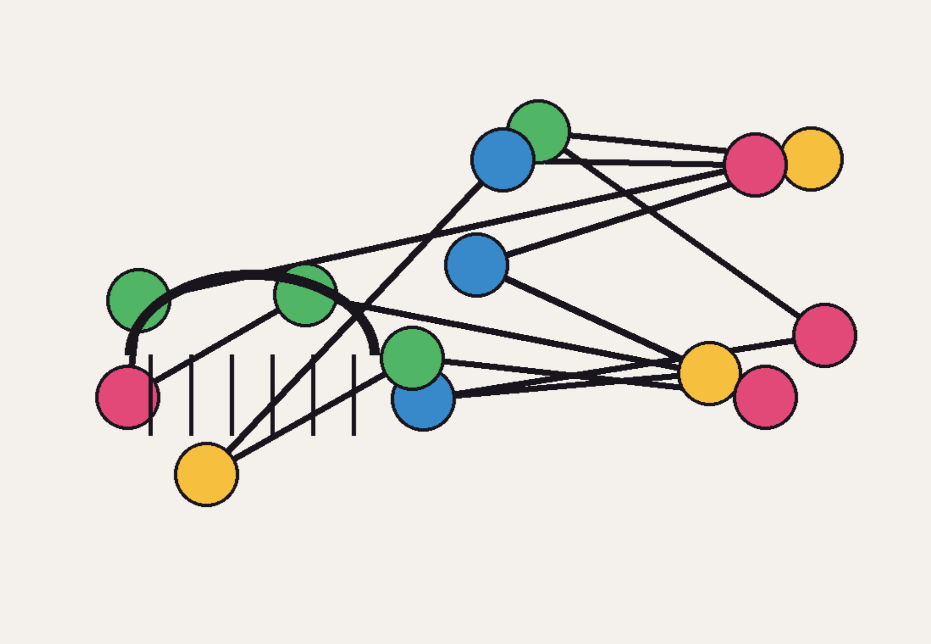

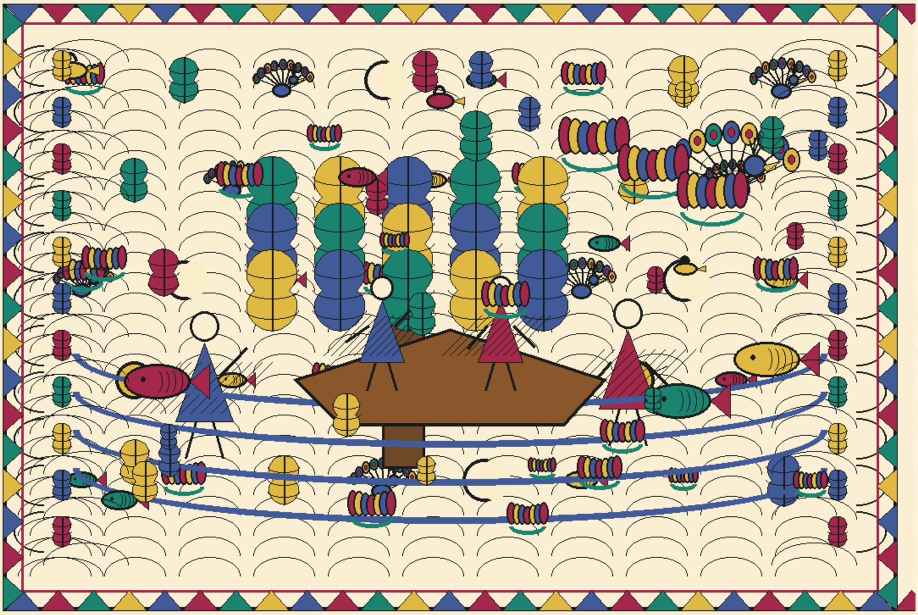

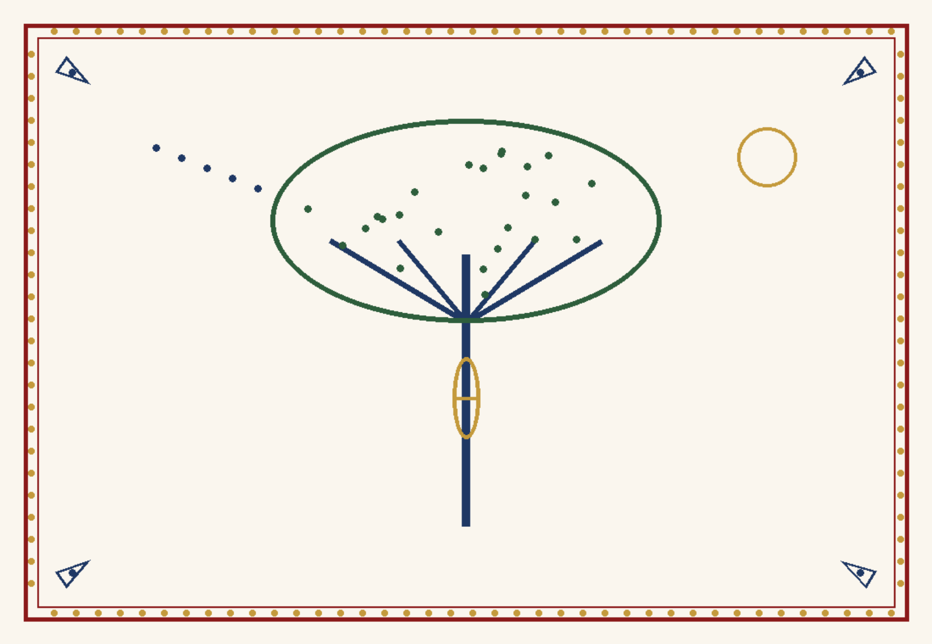

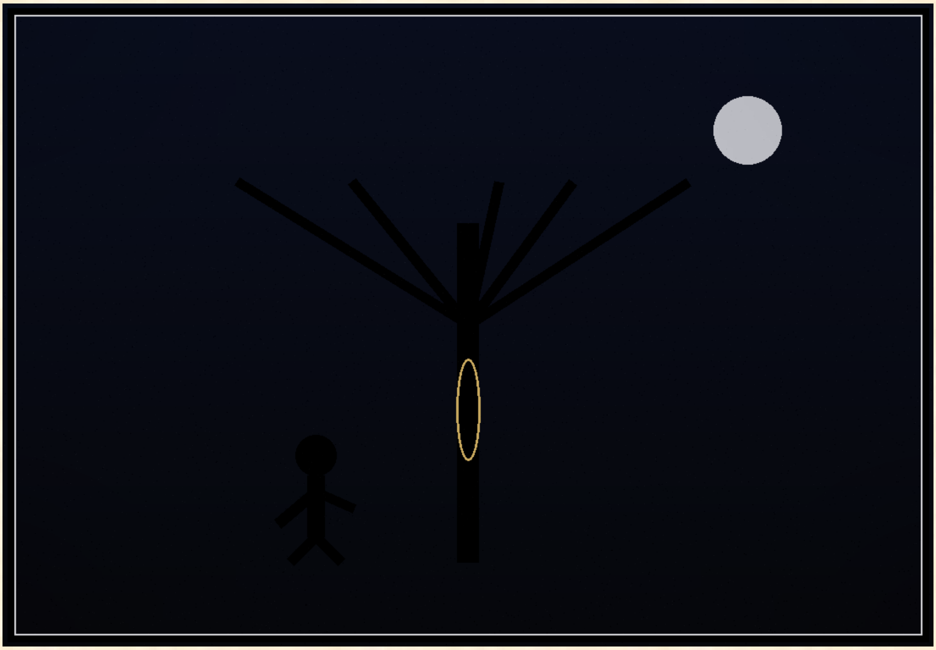

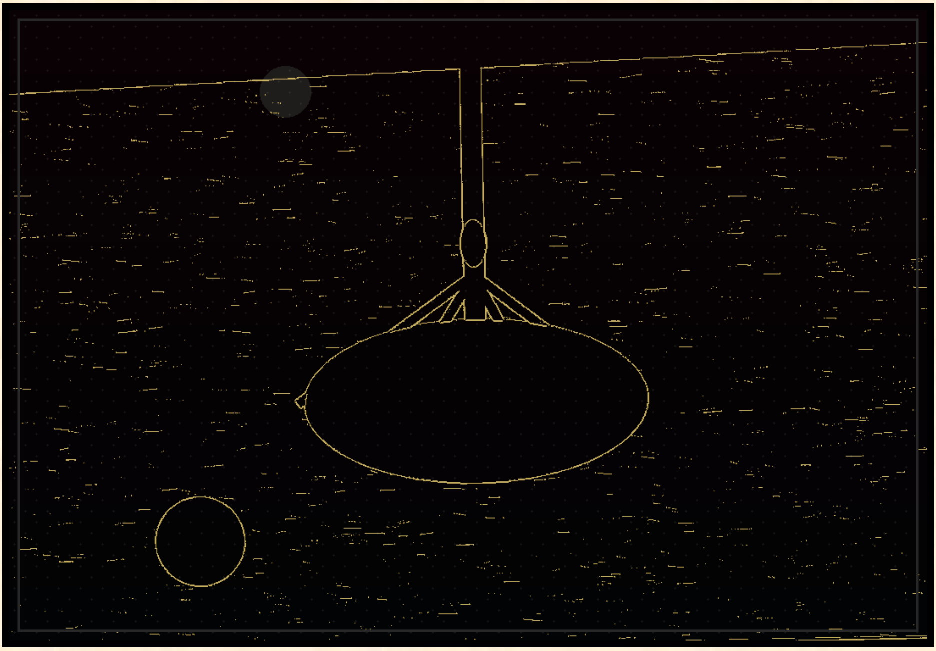

चित्र 31

आस्थाकेँ निन्न आबए लगलै। ओ सोचए लागलि — कोना सभ एहि तरहरिक छद्म परीलोक आ समानान्तर सुधार-गृहसँ बाहर जाए? कोना टुराकोस अपन अफ्रीका देखए, एस्कीमो अपन कहियो-नै-राति, पेंग्यूइन अपन कहियो-नै-दिन?

आ तखन ओकरा बूझि पड़लै — एहि लोकक सभसँ पैघ शक्ति त' ओकरे लग अछि। एतऽ सपना सत्य होइ छै। ओ चाहलक जे ओकरा निन्न आबए आ सपना आबए — एहन सपना जाहिमे सभ महादेशक धोधरि बन्न भऽ जाए, विक्षिप्त वैज्ञानिकक कथित परीलोक खतम भऽ जाए। आ तखन समानान्तर सुधार-गृह अपने खतम भऽ जाएत — कारण जकरा सुधारक चाही, वैह नहि रहत।

निन्न पड़बासँ ठीक पहिने ओ अपन सातो संगीक मुँह मोन पाड़लक — टुराकोसक लाल-हरियर पाँखि, मम्बाक भारी सिसकारी, कूकाबुराक खी-खी, तितली-टिकुलीक भनभन, एस्कीमोक बरफ सन धीरज, पेंग्यूइनक काज-भक्ति। बिदा कहबाक बेर नहि भेटल छल। कदाचित् सभसँ साँच बिदाई वैह होइत अछि जे कहल नहि जाइत अछि।

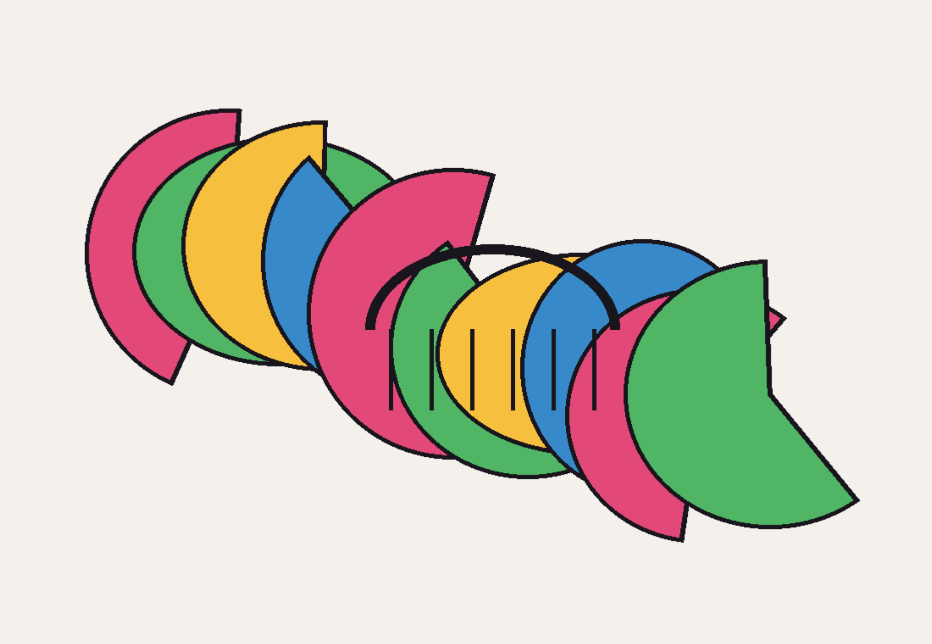

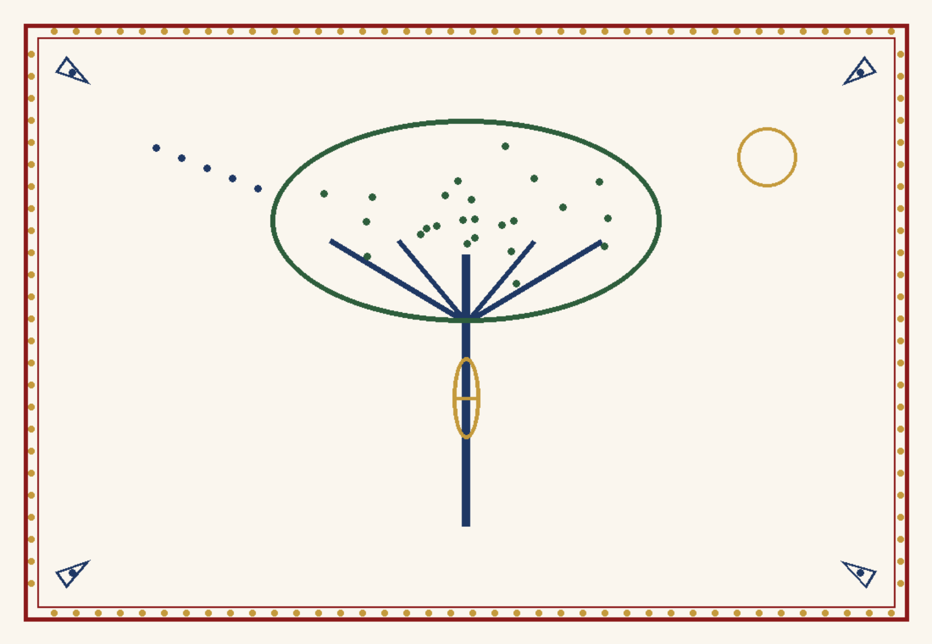

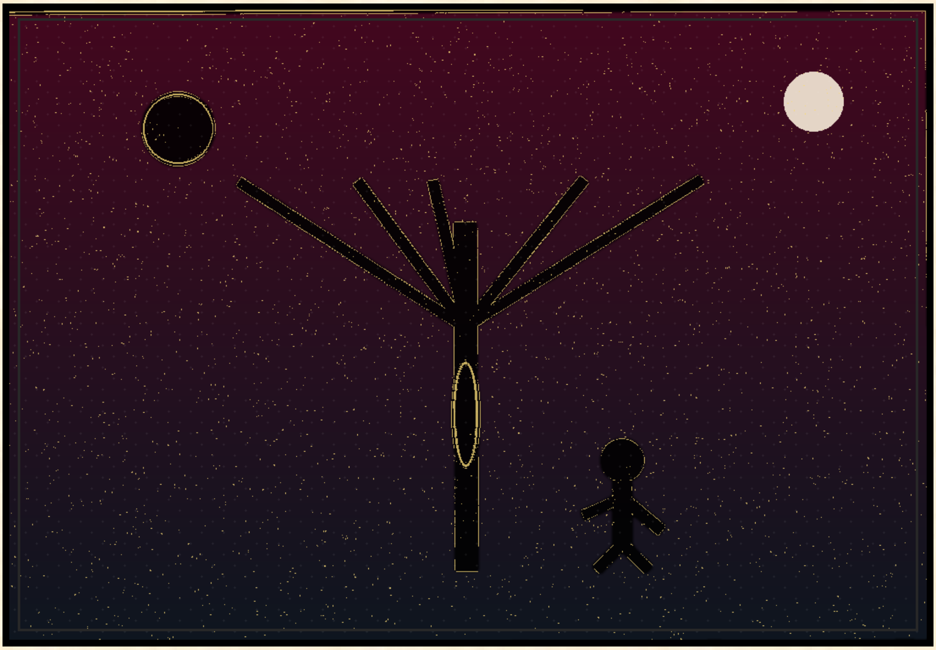

चित्र 32

आस्था सपनाए लागलि — आ ई सपना ओकरा असगर नहि देखए पड़लै; समानान्तर सुधार-गृहक दुनू राजा सपना पठेने रहथि। सपनामे धोधरि सभ एक-एक कऽ मुनाइत गेल — अफ्रीकाक, आर्कटिकक, आस्ट्रेलियाक, एशियाक... आठो। छद्म परीलोकक उज्जर अकास झलफल होइत गेल, जेना केओ लालटेनक बत्ती घटा कऽ रहल हो।

आ आस्था चन्ना गाछी फेरसँ पहुँचि गेलि। सपना सत्य होइ छै — आ से भेलै। धोधरि बन्न भऽ गेलै। आब कोनो माल-जाल, चिड़ै निपत्ता नहि होइ छै। चन्ना गाछी आब भुतहा गाछी नहि कहबैत अछि — आब ओ खाली आमक गाछी अछि, जतऽ भोरमे बच्चा सभ टोकरी लऽ कऽ जाइत अछि आ साँझमे लौटि अबैत अछि, सभ-क-सभ, एक्को गोट कम नहि।

खाली आस्था, जखन-जखन ओहि झमटगर गाछ लगसँ गुजरैत अछि, एक बेर रुकि कऽ ओकर बन्द धोधरि दिस जरूर तकैत अछि। की सातो संगी अपन-अपन घर पहुँचि गेल हएत? उज्जर अकासक ठाम आब की हएत? — एहि प्रश्नक उत्तर कोनो सपना नहि कहलकै। किछु दरबज्जा एहन होइत अछि जे बन्द भेलाक बादो, भीतरसँ, कहियो काल हल्लुक आवाज दैत रहैत अछि।

उपसंहार : बा आ ओम

'...आब कोनो माल-जाल, चिड़ै निपत्ता नै होइ छै।' — बा खिस्सा एतऽ धरि आनि कऽ रुकलीह। 'ओम?'

मुदा ओम त' सुति गेल छल। ओ मुट्ठीमे बाक आंगुर एखनो पकड़ने छल — अक्षरमुष्टिका, निन्नोमे।

कतऽ धरि खिस्सा सुनलक, से काल्हि रातिमे पुछबै — ई सोचैत बा सेहो सुति रहलीह। लालटेन कनी काल आर जरैत रहल, फेर ओहो — जेना कोनो उज्जर अकास — आस्ते-आस्ते मिझा गेल।

समाप्त

VIDEHA: विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका: **ISSN 2229-547X:** www.videha.co.in